

Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

(सूर: अहज़ाब : 41)

(अनुवाद) मुहम्मद तमाहरे (जैसे) मर्दों में से किसी का पिता नहीं है बल्कि वह अल्लाह के रसूल हैं और सभी नबियों का खातम है। और अल्लाह समस्त वस्तुओं का सर्वज्ञ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ وَعَلَى عِبْدِهِ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ

वर्ष- 8  
अंक-30-31

मूल्य  
600 रुपए  
वार्षिक



संपादक  
शेख मुजाहिद  
अहमद

उप संपादक  
सय्यद मुहियुद्दीन  
फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रुहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

15-08 मोहर्रम 1445 हिज़्री कमरी, 27 वफ़ा 3 ज़हूर 1402 हिज़्री शम्सी, 27 जुलाई - 03 अगस्त 2023 ई.

सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नंबर

दरूद और सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम  
और उनकी सन्तान और साथियों पर कि जिस से  
ख़ुदा ने एक भूले भटके संसार को सदमार्ग पर चलाया

इर्शादात-ए-आलीया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम हे ख़ुदा! तेरे सहस्त्रों बार धन्यवाद कि तूने अपनी पहचान का मार्ग स्वयं बताया और अपनी पवित्र पुस्तकों को उतार कर विचार और बुद्धि के दोषों और त्रुटियों से बचाया तथा दरूद और सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी सन्तान और साथियों पर कि जिस से ख़ुदा ने एक भूले भटके संसार को सदमार्ग पर चलाया और पोषक और लाभ पहुँचाने वाला कि जो भूली हुई प्रजा को पुनः सदमार्ग पर लाया, वह परोपकारी और उपकार करने वाला कि जिसने लोगों को द्वैतवाद और मूर्तियों की विपत्ति से हटाया, वह नूर और नूर फैलाने वाला कि जिसने तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकाश को संसार में फैलाया या वह समय का हकीम और उपचारक कि जिसने बिगड़े हुए हृदयों का कदम सच्चाई पर जमाया। वह दया करने वाला और चमत्कार का निशान कि जिसने लोगों को जीवन का पानी पिलाया, वह दयालु और मेहरबान कि जिसने उम्मत (क्रौम) के लिए शोक संताप किया और दर्द सहन किया वह बहादुर और पहलवान जो हमें मृत्यु के मुख से निकाल कर लाया, वह सहनशील और अहंरहित इन्सान कि जिस ने बन्दगी (इबादत) में सिर झुकाया तथा अपनी हस्ती को धूल से मिलाया, वह पूर्ण तौहीद वाला और ज्ञान का समुद्र कि जिसे केवल ख़ुदा का प्रताप अच्छा लगा तथा अन्य को अपनी दृष्टि से गिराया वह असीम दयालु ख़ुदा की कुदरत का चमत्कार कि जो अनपढ़ होकर सब पर सच्चे और ख़ुदाई ज्ञानों में विजयी हुआ तथा प्रत्येक क्रौम को ग़लतियों और दोषों का दोषी ठहराया।

آنکہ در خوبی ندارد همسرے دردم جوشد ثنائے سرورے  
رہبر ہر اسود و ہر احمرے آفتاب ہر زمین و ہر زمان

अर्थात : मेरे हृदय मे ऐसे सरदार कि स्तुति ठाठे मार रही है जो कि अपनी विशेषता और कौशलों मे अपना सदृश नहीं रखता।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के प्रकाशमय सूर्य हैं और प्रत्येक काले प्रत्येक गोरे के मार्ग-दर्शक हैं।

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग प्रथम)



## لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

### सहाबा कराम रज़िवानुल्लाह अलेहिम का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम

प्यारे आक्रा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शख्सियत अंसार व मुहाजेरीन के बीच ऐसी थी जैसे कोई रोशन शमा परवानों के बीच में हो। सहाबा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दिल-ओ-जान से फ़िदा थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हर हुक्म पर लब्बैक कहते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ साय की तरह लगे रहते। कुछ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खुदादाद रोब, प्रकाशमान रुप मुबारक की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नज़र भर कर न देख सकते, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सवाल पूछने से शरमाते और इन्तेज़ार करते कि कोई देहाती आकर पूछे तो हम भी सुनें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके लिए दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा कीमती थे। वह किसी भी हाल में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दूर रहना और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गँवाना नहीं चाहते थे, न मर्द न औरत न बूढ़ा न बच्चा कोई भी नहीं चाहता था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन से जुदा हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल पर सहाबा मारे ग़म के दीवाना हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बहादुर इन्सान भी ऐसा निढाल हुआ कि खड़े होने की ताक़त न रही और पैर आपका बोझ न उठा सके। हस्सान बिन साबित शायर रसूल का यह शेअर सहाबा के हालात की सही अक्कासी करती है।

كُنْتُ السَّوَادَ لِتَاظِرِي فَعَبِي عَابِيكَ النَّاطِرُ  
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيَبْتَ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أَحَاذِرُ \*

कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तू तो मेरी आँख की पुतली था तेरे फ़ौत हो जाने से मेरी आँख अंधी हो गई है। अब जो चाहे मरे मुझे तो तेरे ही मृत्यु का भय था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक-बार मस्जिद मुबारक में टहल रहे थे और हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का यह शेअर पढ़ कर और अपने आक्रा-ओ-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को याद करके ज़ार-ओ-क़तार रोय जा रहे थे किसी के पूछने पर फ़रमाया कि काश यह शेअर मेरी ज़बान से निकला होता। निम्नलिखित में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहाबा के इशक़-ओ-मुहब्बत की न खत्म होने वाली दास्तान में से कुछ लाइने पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।

माह सिफ़र 4 हिज़्री में क़बायल अज़ल और कारा के चंद लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारे क़बायल में बहुत से आदमी इस्लाम की तरफ़ मायल हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कुछ आदमी हमारे साथ रवाना फ़रमाएं जो हमें मुस्लमान बनाएँ और इस्लाम की तालीम दें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी यह ख़ाहिश मालूम करके खुश हुए और दस सहाबियों की एक जमाअत उनके साथ रवाना फ़रमा दी लेकिन दरअसल जैसा कि बाद में मालूम हुआ ये लोग झूठे थे और बनू लेहाना की अंगेस्ता पर मदीना में आए थे जिन्होंने अपने रईस सुफ़ियान बिन ख़ालिद के क़तल का बदला लेने के लिए यह चाल चली थी कि इस बहाना से मुस्लमान मदीना से निकलें तो उन पर हमला कर दिया जाए और बनू लेहाना ने इस ख़िदमत के मुआवज़ा में अज़ल और कारा के लोगों के लिए बहुत से ऊंट इनाम के तौर पर निर्धारित किए थे। जब अज़ल और कारा के ये ग़द्दार लोग असफ़ान और मक्का के दरमयान पहुंचे तो उन्होंने बनू लहयान को ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया सूचना भिजवा दी कि मुस्लमान हमारे साथ आ रहे हैं तुम आ जाओ। जिस पर क़बीला बनू लहयान के दोसौ नौजवान जिनमें से एक सौ तीर-अंदाज़ थे मुस्लमानों के तआक़ुब में निकल खड़े हुए और मुक़ाम रजीव में उनको आ दबाया। सहाबा एक टीले पर चढ़ गए और मुक़ाबला किया। दस में से सात शहीद हो गए। तीन सहाबा ख़ुबैब बिन अदी, ज़ैद बिन विसना, अबुल्लाह बिन तारिक को उन्होंने ने झूठ बोल कर टीले से नीचे उतारा कि हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। लेकिन उतरते ही उन्हें केद कर लिया गया। अबुल्लाह ने जाने से इंकार किया तो उन्होंने अबुल्लाह को रास्ते में ही क़तल कर दिया। बनू लहयान का इन्तेक़ाम पूरा हो चुका था। अब वे कुरैश को ख़ुश करने के लिए तथा रुपए की लालच से ख़ुबैब और ज़ैद को साथ लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हो गए और वहां पहुंच कर उन्हें कुरैश के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। इसलिए ख़ुबैब को तो हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल के लड़कों ने ख़रीद

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	इर्शादात-ए-आलीया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम	1
2	सहाबा कराम रज़िवानुल्लाह अलेहिम का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम	2
3	ख़ुत्व: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 जून 2023 ई.	3
4	आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी क्रियाम अमन के हवाले से	9
5	जीवनी सहाबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मौलाना नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु	14
6	दुनिया को आज़ादी देने वाला नबी	19
7	इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोई के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्टूबर 2022 ई. (भाग-11)	24

लिया क्योंकि ख़ुबैब ने बदर की जंग में हारिस को क़तल किया था। और ज़ैद को सफ़वान बिन उमय्या ने ख़रीद लिया। ख़ुबैब और ज़ैद हर दो की शहादत के घटनाओं निहायत ईमान बढ़ाने वाली हैं। सफ़वान बिन उमय्या अपने क़ैदी ज़ैद बिन वासाना को साथ लेकर हर्म से बाहर गया। कुरैश के सरदारों का एक मजमा साथ था। बाहर पहुंच कर सफ़वान ने अपने गुलाम नस्तास को हुक्म दिया कि ज़ैद को क़तल कर दो। नस्तास ने आगे बढ़कर तलवार उठाई। इस वक़्त अबूसुफ़ियान बिन हर्ब रईस मक्का ने जो तमाशाइयों में मौजूद था आगे बढ़कर ज़ैद से कहा। "सच्च कहो क्या तुम्हारा दिल यह नहीं चाहता कि इस वक़्त तुम्हारी जगह हमारे हाथों में मुहम्मद होता जिसे हम क़तल करते और तुम बच जाते और अपने परिवार में ख़ुशी के दिन गुज़ारते? "ज़ैद की आँखों में खून उतर आया और वह गुस्सा में बोले। "अबूसुफ़ियान तुम यह क्या कहते हो। खुदा की क़सम मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरे बचने के बदले रसूलुल्लाह के पांव में एक कांटा तक चुभे। "अबूसुफ़ियान बे-इस्त्ियार हो कर बोला। "वल्लाह मैंने किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति के साथ ऐसी मुहब्बत करते नहीं देखा जैसी कि अस्हाब-ए-मुहम्मद को सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से है।" इसके बाद नस्तास ने ज़ैद को शहीद कर दिया।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 513 से 516)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

उहद की जंग के बाद "जब इस्लामी लश्कर वापस मदीना की तरफ़ लौटा तो उस वक़्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत और इस्लामी लश्कर की परागंदगी की ख़बर मदीना पहुंच चुकी थी। मदीना की औरतें और बच्चे दीवाना-वार उहद की तरफ़ दौड़े जा रहे थे। अक्सर को तो रास्ता में ख़बर मिल गई और वह रुक गए, परंतु बनू दीनार क़बीला की एक औरत दीवाना-वार आगे बढ़ते हुए उहद तक जा पहुंची। जब वह दीवाना-वार उहद के मैदान की तरफ़ जा रही थी उस औरत का पति और भाई और बाप उहद में मारे गए थे और कुछ रिवायतों में है कि एक बेटा भी मारा गया था। जब उसे उस के बाप के मारे जाने की ख़बर दी गई तो उस ने कहा मुझे बताओ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? चूँकि ख़बर देने वाले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मुतमइन थे वह बारी बारी उसे उस के भाई और पति और बेटे की मौत की ख़बर देते चले गए परंतु वह यही कहती चली जाती थी **مَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया-किया? बज़ाहिर यह वाक्य ग़लत मालूम होता है और इसी वजह से इतिहासकारों ने लिखा है कि इस का मतलब यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या हुआ। लेकिन हकीक़त यह है कि यह फ़िक़रा ग़लत नहीं बल्कि औरतों के मुहावरा के मुताबिक़ बिल्कुल दरुस्त है। औरत के जज़बात बहुत तेज़ होते हैं और वह कभी कबार मर्दों को ज़िंदा समझ कर कलाम करती है। जैसे कुछ औरतों के पति या बेटे मर जाते हैं तो उन की मौत पर उन से संबोधित हो कर वे इस किस्म की बातें करती रहती हैं कि मुझे किस पर

## खुत्व: जुमअ:

तुम्हें खुशखबरी हो अल्लाह तआला ने मुझे दो गिरोहों में से एक गिरोह पर ग़लबा देने का वादा फ़रमाया है  
ख़ुदा की क़सम मैं गोया इस वक़्त वह जगह देख रहा हूँ जहाँ दुश्मन के आदमी क़तल हो हो कर गिरेगें

हे रसूलुल्लाह अब तो आपकी सदाक़त हम पर खुल चुकी है और आपका मुक़ाम हम पर स्पष्ट हो गया है अब किसी अनुबंध का क्या प्रश्न है।  
सामने समुंद्र है आप हुक्म दीजिए तो हम इस में अपने घोड़े डालने के लिए तैयार हैं और अगर लड़ाई हुई तो ख़ुदा की क़सम! हम आपके दाएं  
भी लड़ेंगे और बाएं भी लड़ेंगे और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे और दुश्मन आप तक नहीं पहुंच सकता जब तक वह हमारी लाशों को  
रोनदता हुआ न गुज़रे

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों की तरफ़ मुतवज्जा हुए और फ़रमाया هَذَا مَكَّةَ قَدْ أَلْقَيْتُ إِلَيْكُمْ أَفْلَادَ كَيْدِيهَا  
कि मक्का ने अपने जिगर के टुकड़े तुम्हारे आगे निकाल कर रख दिए हैं

हे रसूलुल्लाह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए निर्धारित कर दिया है और  
यह एक निहायत तेज़-रफ़्तार ऊंटनी आपके करीब बांधी है।  
अगर ख़ुदा-ना-खासता ऐसा वक़्त आए कि हम एक-एक कर के यहां ढेर हो जाएं तो हे रसूलुल्लाह यह ऊंटनी मौजूद है इस पर सवार हो जाएं  
और मदीना पहुंच जाएं

हे अल्लाह ये कुरैश गरूर और तकब्बुर के साथ तुझ से लड़ने और तेरे रसूल की तक़ज़ीब के लिए आ गए हैं तू ने जो मुझ से नुसरत का वादा  
फ़रमाया है उसे पूरा कर और आज ही इनका अंत कर दे

जंग-ए-बदर की तैयारी के हालात-ओ-वाक़ियात और सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की अपने आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की  
वालेहाना इताअत और प्रेम का वर्णन

श्रीमान क़ारी मुहम्मद आशिक़ साहिब साबिक़ उस्ताज़ जामिआ अहमदिया रब्बाह साबिक़ प्रिंसिपल और निगरान मदरस्सातुल हिफ़ज़ रब्बाह  
और श्रीमान नूरुद्दीन अल् हसनी साहिब आफ़ शाम का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

खुत्व: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्जा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 23  
जून 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ. مُلِكُ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.  
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ  
وَلَا الضَّالِّينَ

जैसा कि पिछले खुत्बे में वर्णन हुआ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम  
के भेजे हुए मुख़बिरो ने वापस आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को  
एक क़ाफ़िले या लश्कर के आने की इत्तिला दी

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली कि कुरैश का  
लश्कर तियाजती क़ाफ़िले के बचाओ के लिए बढ़ा चला आ रहा है तो रसूलुल्लाह  
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो से मशवरत: तलब  
किया और उन्हें कुरैश की सूरत-ए-हाल से आगाह किया। इस पर हज़रत अबू बकर  
रज़ियल्लाहु अन्हो उठे और बड़ी ख़ूबसूरत गुफ़्तगु की। फिर हज़रत उमर रज़ियल्ला-  
हु अन्हो उठे उन्होंने भी बड़े ख़ूबसूरत अंदाज़ में गुफ़्तगु की। फिर हज़रत मिक्दाद  
बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हो उठे और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि  
वसल्लम तशरीफ़ ले चलिए जिधर अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया है। हम  
आपके साथ हैं ख़ुद की क़सम! हम आपको वह जवाब नहीं देंगे जो जवाब बनी  
इसराईल ने हज़रत-ए-मूसा को दिया था कि فَادْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا  
فَاعِدُونَ (अल् मायद: : 25) जा तू और तेरा रब दोनों लड़ो हम तो यहीं बैठे रहेंगे  
बल्किहम यूँ कहेंगे कि आप और आपका रब तशरीफ़ ले जाए और जंग कीजिए हम  
भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मिलकर जंग करेंगे।

उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है अगर आप  
हमें बरकुल्-ग़ामाद तक भी ले जाएं तो हम आपके साथ चलेंगे। बरकुल्-ग़ामाद के

बारे में लिखा है कि यह यमन में है और मक्का श्रीमाना से पाँच मंज़िल की मुसाफ़त पर  
है। अरबों के नज़दीक ज़्यादा से ज़्यादा मुसाफ़त की यह भी एक ताबीर थी। और  
फिर उन्होंने कहा कि आपकी मय्यत में दुश्मन के साथ जंग करते जाएंगे यहां तक कि  
आप वहां पहुंच जाएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें कलमा-ए-  
ख़ैर से नवाज़ा और उनके लिए दुआ फ़रमाई।

(अल् सीरतुल अल् नब्वी लेइज़े हशशाम पृष्ठ 420-421 दारुल कुतुब इल्मिया  
बेरुत 2001 ई.)

(ग़ज़वातु नबी(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अज़ अबुल-कलाम आज़ाद पृष्ठ  
30 प्रकाशन सिटी बैंक प्वाइंट 2014 ई.)

एक मुसन्नफ़ ने यह लिखा है कि बर्कल् ग़ामाद मक्के के जुनूब में कम-ओ-बेश  
चार-सौ तीस किलो मीटर के फ़ासले पर आम शाहराह से हट कर दूर दराज़ मुक़ाम  
था जो सफ़र की दूरी और मुश्किल के लिए बतौर मुहावरा बोला जाता था जैसा कि  
उर्दू में कोह-ए-क़ाफ़ कहते हैं जो दूरी के मफ़हूम को वाज़िह करता है। मतलब यह  
कि जितनी मर्ज़ी दूर तशरीफ़ ले जाएं हम आपके साथ होंगे।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग  
6 पृष्ठ 139 बज़मे इक़बाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

इस बारे में एक वज़ाहत भी है कि कुछ सीरत निगारों ने इस अवसर पर यह  
सवाल उठाया है कि हज़रत मिक्दाद ने जो आयत इस अवसर पर पढ़ी थी वह सूर:  
मायदा की आयत है और यह सूरत बहुत बाद में नाज़िल होने वाली सूरत है इसलिए  
इस अवसर पर यह आयत पढ़ना महल्ल-ए-नज़र है लेकिन फिर ख़ुद ही ये मुफ़स्से-  
रीन उस के मुस्ललिफ़ जवाज़ भी पेश करते हैं उदाहरणतः यह कि उन्होंने बनीइस-  
राईल की ये बात यहूदियों से सुनी होगी या यह कि बाद के किसी रावी ने यह आयत  
शामिल कर दी होगी। बहरहाल यह एतराज़ इतनी एहमियत नहीं रखता क्योंकि  
सीरत की किताबों में कसरत से यह रिवायत बयान हुई है। तथा बुख़ारी की एक शरह

फ़तह अल्बारी जो इब्ने हिज़्र की शरह है इस में यह लिखा है कि सूरत माइदा, मुकम्मल सूरत हज्जतुल विदा के अवसर पर नाज़िल होने वाली बात दरुस्त नहीं। उस की चंद आयात काफ़ी अरसा पहले नाज़िल हो चुकी थीं। उन्हें में से एक आयत हज़रत मिक्दाद ने बदर के अवसर पर तिलावत की लेकिन बहरहाल यहूदियों से ही बातें सुनी थीं। हो सकता है वह भी सही हों।

फिर वर्णन हुआ है कि ये तीनों यानी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मिक्दाद रज़ियल्लाहु अन्हो चूँकि मुहाजेरीन में से थे। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ाहिश थी कि अंसार की राय मालूम करें।

(अल् रहीकुल् मश्मूतूम अज़ मौलाना सफ़ीउल रहमान मुबारकपुरी पृष्ठ 285 अल् मक्तबा अलसिलफ़ी लाहौर)(फ़तह अल्बारी भाग पृष्ठ 201 बहवाला दायरे मारुफ-ए-सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 139 बज़म-ए-इक्रबाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हे लोगो मुझे मश्वरा दो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद अंसार थी और शायद इसकी एक वजह यह भी हो कि बैअत-ए-उक़बा के वक़्त उन्होंने अर्ज़ किया था कि हे रसूलुल्लाह बेशक हम उस वक़्त तक आपके ज़िम्मा से बरी हैं जब तक आप हमारे शहर में तशरीफ़ नहीं लाते लेकिन जब आप वहां मदीने में तशरीफ़ ले आएँगे तो आप हमारे ज़िम्मा होंगे। हम हर उस चीज़ से आपका दिफ़ा करेंगे जिससे हम अपने बच्चों और अपनी औरतों का दिफ़ा करते हैं। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह अंदेशा ज़ाहिर कर रहे थे कि कहीं अंसार सिर्फ़ इस दुश्मन से आपका दिफ़ा करें जो मदीना तय्यबा पर अचानक चढ़ाई कर दे और वे यह समझ रहे हों कि उन पर अपने शहर से बाहर जा कर दुश्मन का मुक़ाबला करना लाज़िम नहीं लेकिन जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात फ़रमाई तो हज़रत साद बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपसे अर्ज़ की कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यूँ लगता है कि हज़रत हमारी राय पूछ रहे हैं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक। तू हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो गोया हुए। उन्होंने कहा कि बेशक हम आप पर ईमान ले आए हैं। हमने आपकी तसदीक की है और हमने गवाही दी है कि जो दीन लेकर आप तशरीफ़ लाए हैं वह हक़ है और इस पर हमने आपके साथ वाअदे किए हैं और हमने आपका हुक्म सुनने और इस को बजा लाने के पुख़्ता अहूद किया हैं। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप तशरीफ़ ले चलिए जिधर आपका इरादा है। हम आपके साथ हैं। उस ज़ात की क्रसम! जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया। अगर आप हमें समुद्र के पास ले जाएं और ख़ुद इस में दाख़िल हो जाएं तो हम भी आपके साथ समुद्र में छलांग लगा देंगे। हम में से एक शख्स भी पीछे नहीं रहेगा। हम इस बात को नापसंद नहीं करते कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कल हमें साथ लेकर दुश्मन का मुक़ाबला करें। हम जंग में सब्र करने वाले हैं। दुश्मन से मुठ भेड़ के वक़्त वफ़ा दिखाने वाले हैं। हमें उम्मीद है कि अल्लाह तआला हमसे आपको वह कारनामे दिखाएगा जिससे आपकी आँख ठंडी हो जाएगी। अतः अल्लाह की बरकत पर आप हमें लेकर रवाना हो जाएं।

सही मुस्लिम की एक रिवायत में ये अलफ़ाज़ हज़रत साद बिन अबादह रज़ियल्लाहु अन्होकी तरफ़ मंसूब हुए हैं लेकिन अक्सर रिवायात के मुताबिक़ हज़रत साद बिन अबादह रज़ियल्लाहु अन्हो जंग-ए-बदर में शामिल नहीं हुए थे। इसलिए सीरत निगारों ने इस की ये ततबीक़ की है कि हो सकता है कि दो मर्तबा सहाबा से मश्वरा किया हो। पहली दफ़ा मदीना में जब आपको काफ़िले की ख़बर मिली और मदीना में हज़रत अबादह रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तक्ररीर की हो और दूसरी मर्तबा जब आप सफ़र में थे तब मश्वरा किया हो तो उस वक़्त साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह गुफ़्तगु की हो। बहरहाल यह तो शरह में मुख़्तलिफ़ शारह अपने मुताबिक़ लिखते रहे हैं लेकिन असल यही है कि साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह कहा। हज़रत साद की ये बात सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए और फ़रमाया रवाना जाओ और तुम्हें ख़ुशख़बरी हो अल्लाह तआला ने मुझे दो गिरोहों में से एक गिरोह पर ग़लबा देने का वादा फ़रमाया है। ख़ुदा की क्रसम मैं गोया उस वक़्त वह जगह देख रहा हूँ जहां दुश्मन के आदमी क़तल हो हो कर गिरेंगे।

(अल्सीरतुल नब्वी लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 421 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(शरह अल् ज़र क़ानी भाग 2 पृष्ठ 270 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया

बेरूत 1996 ई.)

"आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये अलफ़ाज़ सुनकर सहाबा ख़ुश हुए परंतु साथ ही उन्होंने हैरान हो कर अर्ज़ किया। هَلَاذَكَرْتَلَنَا الْقِتَالَ فَاسْتَعِدُّ. अर्थात् हे रसूलुल्लाह अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहले से लश्कर कुरैश की इत्तिला थी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमसे मदीना में ही जंग के एहतेमाल का वर्णन क्यों न फ़र्मा दिया कि हम कुछ तैयारी तो कर के निकलते।" परंतु बावजूद इस ख़बर और इस मश्वरा के और बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से इस ख़ुदाई बशारत के कि इन दो गिरोहों में से किसी एक पर मुस्लमानों को ज़रूर फ़तह हासिल होगी अभी तक मुस्लमानों को निर्धारित तौर पर यह मालूम नहीं हुआ था कि उनका मुक़ाबला किस गिरोह से होगा और वह इन दोनों गिरोहों में से किसी एक गिरोह के साथ मुठभेड़ हो जाने का इमकान समझते थे और वह स्वभाविक कमज़ोर गिरोह अर्थात् काफ़िला के मुक़ाबला के ज़्यादा ख़ाहिशमंद थे।"

(सीरत ख़ातिमुल नबीय्यीन अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए पृष्ठ 355 ऐडीशन 1996 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊदरज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में बयान फ़रमाया है कि "जब बदर के अवसर पर मदीना से बाहर जंग होने लगी तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को जमा किया और फ़रमाया हे लोगो मुझे मश्वरा दो क्योंकि मुझे मालूम हुआ है कि हमारा काफ़िला से मुठ भेड़ नहीं होगी बल्कि मक्का के लश्कर से हमारा मुक़ाबला होगा। इस पर यके बाद दीगरे मुहाजेरीन खड़े हुए और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह आप बेशक जंग कीजिए हम आपके साथ हैं। परंतु हर दफ़ा जब अपने ख़्यालात का इज़हार करने के बाद कोई मुहाजिर बैठ जाता तो आप फ़रमाते लोगो! मुझे मश्वरा दो। आपके ज़हन में यह बात थी कि मुहाजेरीन तू मश्वरा दे ही रहे हैं। असल सवाल अंसार का है और अंसार इस लिए चुप थे कि लड़ने वाले मक्का के लोग थे वह समझते थे कि अगर हम ने यह कहा कि हम मक्का वालों से लड़ने के लिए तैयार हैं तो शायद हमारी ये बात मुहाजेरीन को बुरी लगे और वह यह समझें कि ये लोग हमारे भाई बंदों का गला काटने के लिए आगे बढ़ बढ़कर बातें कर रहे हैं परंतु जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बार-बार फ़रमाया कि हे लोगो! मुझे मश्वरा दो तो एक अंसारी खड़े हुए और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह मश्वरा तो आपको मिल रहा है। एक के बाद दूसरा मुहाजिर उठता है और वह कहता है हे रसूलुल्लाह निसन्देह जंग कीजिए परंतु आप बार-बार यही फ़र्मा रहे हैं कि हे लोगो मुझे मश्वरा दो। इस से मैं समझता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद ग़ालिबन हम अंसार से है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है। उसने कहा हे रसूलुल्लाह हम तो इस लिए चुप थे कि हम डरते थे कि हमारे मुहाजिर भाईयों का दिल न दुखे। अगर हमने कहा हम लड़ने के लिए तैयार हैं तो उनके दिलों में ये ख़्याल पैदा होगा कि ये हमारे भाईयों और रिश्तेदारों को मारने का मश्वरा दे रहे हैं। फिर उसने कहा हे रसूलुल्लाह शायद आपका इशारा इस बैअत-ए-उक़बा की तरफ़ है जिसमें हमने यह इकरार किया था कि अगर मदीना पर कोई दुश्मन हमला-आवर हुआ तो हम आपका साथ देंगे लेकिन अगर मदीना से बाहर जा कर लड़ना पड़ा तो हम पर कोई पाबंदी नहीं होगी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हॉ "यही बात है।" उसने कहा हे रसूलुल्लाह जिस वक़्त हमने वह मुआहिदा किया था उस वक़्त हमें "सही तरह" मालूम नहीं था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क्या शान है।

हे रसूलुल्लाह अब तो आपकी सदाक़त हम पर खुल चुकी है और आपका मुक़ाम हम पर वाज़ेह हो गया है अब किसी मुआहिदा का क्या सवाल है। सामने समुद्र है आप हुक्म दीजिए तो हम इस में अपने घोड़े डालने के लिए तैयार हैं और अगर लड़ाई हुई तो ख़ुदा की क्रसम! हम आपके दाएं भी लड़ेंगे और बाएं भी लड़ेंगे और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे और दुश्मन आप तक नहीं पहुंच सकता जब तक वह हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे।"

(सैर-ए-रुहानी नंबर : 4 अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 532-533)

इस मश्वरे के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से रवाना हुए और मुख़्तलिफ़ रास्तों से गुज़रते हुए बदर के करीब नुज़ूल फ़रमाया बदर की तफ़सील तो पहले भी वर्णन हो चुका है लेकिन वर्णन कर देता हूँ कि मदीने के जुनूब मगरिब में एक सौ पचास किलो मीटर के फ़ासले पर वाक्य है। यह एक बैज़वी शक़ल का साढ़े पाँच मील लंबा और चार मील चौड़ा वसीअ रेगिस्तानी

मैदान है जिसके इर्द-गिर्द ऊंचे पहाड़ हैं। इस में कई कुँवें और बागात भी थे जहाँ उमूमन काफ़िले पड़ाव डालते थे। बदर के मैदान के करीब नुज़ूल करने के कुछ देर बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि-यल्लाहु अन्हो सवार हो कर निकले यहाँ तक कि एक अरबी बूढ़े के पास जा कर रुक गए और उस से कुरैश और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथियों के मुताल्लिक यह बताए बग़ैर दरयाफ़त किया कि आप कौन हैं। बूढ़ा कहने लगा मैं तुम्हें तब बताऊँगा जब तुम मुझे ये बताओ कि तुम किस कबीले से हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम हमें बताओगे तो हम भी तुम्हें अपने मुताल्लिक आगाह कर देंगे, अपने बारे में बता देंगे। वे कहने लगा कि क्या अदले का बदला? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। बूढ़े ने कहा मुझे मालूम हुआ है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और आपके सहाबा अमुक अमुक दिन रवाना हो चुके हैं। अगर मुझे बताने वाले ने सच्य कहा था तो वह आज अमुक मुक़ाम पर होंगे। उसने उस जगह का नाम लिया जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहुंचे थे। फिर कहने लगा मुझे यह भी पता चला है कि कुरैश अमुक दिन रवाना हुए हैं। अगर मुझे बताने वाले ने सच्य कहा है तो वे आज अमुक मुक़ाम पर होंगे। उसने उस जगह का नाम लिया जहाँ कुरैश पहुंचे थे। दोनों बातें उसने सही बताई हैं। जब वे अपनी इत्तिला से फ़ारिग हुआ तो उसने कहा तुम किस से हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम पानी से हैं

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के पास से पलट आए। वह कहने लगा कि पानी से हैं। क्या मतलब? क्या इराक़ के पानी से हैं? आपका यह जवाब बड़ा दो अर्थों वाला लगता है। इस पर भी इतिहासकारों ने बेहस की है। हमारे हवाले निकालने वालों ने मुख्तलिफ़ मौरख़ीन की इस बारे में वज़ाहतें भी पेश की हैं, संक्षिप्त दे देता हूँ। इतिहासकारों ने यह सवाल उठाया कि बज़ाहिर लगता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हसब-ए-वादा दरुस्त जवाब नहीं दिया। इस का जवाब मुसन्निफ़ीन देते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को ग़लत जवाब नहीं दिया। हाँ आपने इस को जवाब लेखकों के अंदाज़ में दिया है कि झूठ भी नहीं और इस ख़तरनाक जंगी सूरत-ए-हाल में निर्धारित जगह का पता भी नहीं दिया क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फ़रमाया था कि हम पानी से हैं तो इस से मुराद वह करानी इरशाद था कि हमने हर ज़िंदा चीज़ को पानी से बनाया है। यह एक सीरत निगार ने लिखा है। यह अबूबकर जाबिर अलजज़ायरी हैं। एक कहते हैं कि अरब का तरीक़ यह था कि जहाँ लोग रहते थे वहाँ का पता पानी यानी चशमा वग़ैरा का नाम लेकर बताया करते थे कि हम अमुक पानी या अमुक इलाक़े के पानी से ताल्लुक़ रखते हैं। ये अल्लामा बुरहान हलबी हैं उन्होंने यह लिखा है। इस में एक कारण यह भी हो सकती है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के उसी पानी यानी चशमे का ही बताया हो जिसके करीब आपका क्रियाम था जैसा कि इस बूढ़े ने बताया था लेकिन इशारा इस रंग में फ़रमाया हो कि वह बूढ़ा इराक़ की सिम्त समझा हो और बदर का वह चशमा और इराक़ की सिम्त एक ही तरफ़ हो। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा कराम के पास वापस तशरीफ़ लाए। जब शाम हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत जुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो और साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो को चंद दीगर सहाबा के हमराह बदर के चशमे की तरफ़ रवाना फ़रमाया कि वह आपके लिए वहाँ की ख़बरों की ज़ुस्तजू करें। उन्हें कुरैश के लिए पानी ले जाने वाले दो गुलाम मिले जिन्हें सहाबा किराम पकड़ कर ले आए और उनसे सवालात किए जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े नमाज़ अदा कर रहे थे। इन दोनों ने बताया कि हम कुरैश के लिए पानी ले जाने वाले हैं। उन्होंने हमें पानी लाने के लिए भेजा है। सहाबा ने उनकी बात न मानी और ख़्याल किया कि शायद वह अबूसुफ़ियान के मुलाज़िम हैं। इसलिए सहाबा ने उन्हें मार पीट की और जब उन्हें बहुत तंग किया तो उन्होंने कह दिया कि हम अबूसुफ़ियान के मुलाज़िम हैं। इस पर सहाबा किराम ने उन्हें छोड़ दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सलाम फेरा तो फ़रमाया। जब इन दोनों ने तुमसे सच्य कहा तो तुमने उन्हें मारा और जब उन्होंने झूथ बोला तो तुमने उन्हें छोड़ दिया। बख़ुदा उन्होंने सच्य कहा है। बेशक वे कुरैश के गुलाम हैं। फिर इन दोनों की तरफ़ मुतवज्जा हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे कुरैश के मुताल्लिक आगाह

करो। इन दोनों ने बख़ुदा! वह इस टीले के पीछे वादी के दूसरे किनारे पर डेरा डाले हुए हैं। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा वे लोग कितने हैं? उन्होंने जवाब दिया बहुत से हैं। पूछा गया उनकी संख्या क्या है? कहने लगे कि हमें मालूम नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि वह खाने के लिए रोज़ाना कितने ऊंट ज़बह करते हैं? उन्होंने जवाब दिया किसी दिन नौ और किसी दिन दस। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वे लोग नौसौ और एक हज़ार के दरमयान हैं। ऊंटों के खाने से आपने अंदाज़ा लगाया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे दर-याफ़त फ़रमाया कि उनमें कुरैश के सरकरदा लोगों में से कौन कौन हैं? उन्होंने कुरैश के कई सरदारों के नाम बताए जिनमें अबुजहल, उल्बा, शीबा, हकीम बिन हज़ाम, अमय बिन खलफ़ इत्यादि शामिल थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों की तरफ़ मुतवज्जा हुए और फ़रमाया هَذَا مَكَّةُ قَدْ أَلْقَتْ إِلَيْكُمْ أَفْلَادَ كِبْدِهَا कि मक्का ने अपने जिगर के टुकड़े तुम्हारे आगे निकाल कर डाल दिए हैं।

(अल्सीरतुल नब्वी ये ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 421-422 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(उद्धृत एटलस सीरत नब्वी पृष्ठ 216 दारुस सलाम रियाज़ 1424 ह)

(सीरत हबीब दो-आलम, अज़ अबू बकर जाबिर अल् जज़ायरी, उर्दू अनुवादक, पृष्ठ 185 ज़ियाउल-कुरआन पब्लीकेशनज़ लाहौर 2015 ई.)

(ग़ज़वातुन्नबी अज़ अलामा बुरहान हलबी, अनुवादक, पृष्ठ 81 दारुल इशात कराची 2001 ई.)

हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस पर नोट लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मुखातब हो कर फ़रमाया : هَذَا مَكَّةُ قَدْ أَلْقَتْ إِلَيْكُمْ أَفْلَادَ كِبْدِهَا" अर्थात लो मक्का ने तुम्हारे सामने अपने जिगर गोशे निकाल कर डाल दिए हैं" यह निहायत दानि-शमंदाना और हकीमाना अल्फ़ाज़ थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान-ए-मुबारक से बेसाख़ता तौर पर निकले क्योंकि बजाय इसके कि कुरैश के इतने नामवर रसा का वर्णन आने से कमज़ोर तबीयत मुस्लमान बेदिल होते इन अल्फ़ाज़ ने उनकी कुव्वत-ए-मुतख़य्यला को इस तरफ़ मायल कर दिया "उन्होंने उनकी सोच को इस तरफ़ मायल कर दिया" कि गोया उन सरदार-ए-कुरैश को तो ख़ुदा ने मुस्लमानों का शिकार बनने के लिए भेजा है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्जा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 356 ऐडीशन 1996 ई.)

इस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लश्कर को हरकत देता कि मुशतेकीन से पहले बदर के चशमे पर पहुंच जाएं और मुशरेकीन को मुसल्लत न होने दें। इस लिए इशा के वक़्त आपने बदर के करीब तरिन चशमे पर नुज़ूल फ़रमाया

(अल् रहीकुल अल् मख़्तूम अज़ मौलाना सफ़ीउल रहमान मुबारकपुरी पृष्ठ 288 अल् मकतब अल् सिलफ़ी लाहौर)

इस अवसर पर हज़रत हुबाब बिन मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक मश्वरा दिया था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के करीब तरिन चशमे पर पड़ाव डाला तो हुबाब बिन मंज़र ने अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह क्या आपने हुक्म-ए-इलाही से इस जगह क्रियाम किया है कि हम यहाँ से न आगे बढ़ सकते हैं और न पीछे हट सकते हैं या यह सिर्फ़ आप की राय और जंगी चाल है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह केवल एक राय है और जंगी चाल है। तब हज़रत हुबाब ने अर्ज़ किया कि यह जगह मुनासिब नहीं बल्कि आप लोगों को यहाँ से हटा लीजिए और वहाँ क्रियाम कीजिए जो दुश्मन के पानी से करीब तरिन जगह हो और इस के इलावा जितने कुँवें हैं उनको बंद कर दिया जाए और अपने लिए एक हौज़ तैयार कर लिया जाए जिसको पानी से भर दिया जाए। इस के बाद हम दुश्मन से मुक़ाबला करते हैं तो हमें पीने के लिए पानी मयस्सर होगा और दुश्मन पानी से महरूम रहेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारी राय बहुत दरुस्त है और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लश्कर समेत उस पानी पर आए जो कुरैश से करीब-तर था और वहाँ पड़ाव किया और आपके हुक्म से बाकी कुँवें बेकार कर दिए गए और जिस कुँवें पर पड़ाव डाला गया उस पर एक हौज़ बना कर उस को पानी से भर दिया गया। सीरत इब्ने हशशाम में यह हवाला है।

(उद्धृत सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 424 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

जगह के इन्तेखाब के बाद आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क्रियाम के लिए जगह की तैयारी का मरहला था। इसलिए साद बिन मआज़ रईस ओस की तजवीज़ से सहाबा ने मैदान के एक हिस्से में आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्ते एक साएबान तैयार किया। हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुज़ूर ऐसे अर्ज़ किया कि हे अल्लाह! क्या हम आपके लिए एक साएबान न तैयार कर दें ताकि आप इस में क्रियाम कर सकें।

(उद्धृत सीरत अल् हलबिया भाग 2 पृष्ठ 213 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो तफ़सील वर्णन की है वह पहले भी एक दफ़ा बयान हो चुकी है लेकिन यहां वर्णन करना भी ज़रूरी है। "साद बिन मआज़ रईस ओस की तजवीज़ से सहाबा ने मैदान के एक हिस्सा में आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्ते एक साएबान सा तैयार कर दिया और साद ने आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी साएबान के पास बांध कर अर्ज़ किया कि "हे रसूलुल्लाह! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस साएबान में तशरीफ़ रखें और हम अल्लाह का नाम लेकर दुश्मन का मुकाबला करते हैं। अगर खुदा ने हमें फ़तह दी तो यही हमारी आरजू है, लेकिन अगर खुदा-न-खासता मुआमला अस्त-व्यस्त हुआ" इस के इलावा कुछ हुआ, हमारी शिकस्त हुई "तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी पर सवार हो कर जिस तरह भी हो मदीना पहुंच जाएं। यहां हमारे ऐसे भाई बंधू मौजूद हैं जो मुहब्बत और इख़लास में हमसे कम नहीं हैं लेकिन चूँकि उनको यह ख़्याल नहीं था कि इस मुहिम में जंग पेश आजाएगी इस लिए वह हमारे साथ नहीं आए अन्यथा हरगिज़ पीछे न रहते लेकिन जब उन्हें हालात का इल्म होगा तो वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में जान तक लड़ा देने से दरेग़ा नहीं करेंगे। यह साद का जोश-ए-इख़लास था जो हर हालत में काबिल-ए-तारीफ़ है। अन्यथा भला खुदा का रसूल और मैदान से भागे" यह किस तरह हो सकता है। "इसलिए हुनेन के मैदान में हम ने देखा कि बारह हज़ार फ़ौज ने पीठ दिखाई, परंतु यह मर्कज़ तौहीद "अर्थात आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" अपनी जगह से मु-तज़लज़ल नहीं हुआ। बहरहाल साएबान तैयार किया गया और साद और कुछ दूसरे अंसार उसके गर्द पहरा देने के लिए खड़े हो गए। आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसी साएबान में रात बसर की।" एक रिवायत में यह भी वर्णन है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो साएबान में नंगी तलवार सौंठ कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हिफ़ाज़त के लिए खड़े रहे" और आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रात-भर खुदा के हुज़ूर गिर्ये ओ ज़ारी से दुआएं कीं और लिखा है कि सारे लश्कर में सिर्फ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही थे जो रात-भर जागे बाक़ी सब लोग बारी बारी अपनी नींद सौ लिए।"

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए पृष्ठ 357 एडिशन 1996 ई.)

(सबलुल् हुदा भाग 11 पृष्ठ 398 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में वर्णन फ़रमाया है कि "जब बदर के मैदान में पहुंचे तो सहाबा ने एक ऊंची जगह बना कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वहां बिठा दिया और फिर उन्होंने एक दूसरे से मश्वरा कर के दरयाफ़त किया कि सबसे ज़्यादा तेज़-रफ़्तार ऊंटनी किस के पास है। इसलिए सबसे ज़्यादा तेज़-रफ़्तार ऊंटनी लेकर उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के करीब बांध दी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखा तो फ़रमाया यह क्या किया है? उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह हम थोड़े हैं और दुश्मन बहुत ज़्यादा है हम डरते हैं कि कहीं हम तमाम के तमाम उस जगह शहीद न हो जाएं। हमें अपनी मौत का तो कोई ग़म नहीं हे रसूलुल्लाह हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़्याल है कि आपको कोई तकलीफ़ न हो। हम अगर मर गए तो इस्लाम को कुछ नुक़सान नहीं होगा लेकिन आपके साथ इस्लाम की ज़िंदगी वाबस्ता है। अतः ज़रूरी है कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त का सामान दें।

हे रसूलुल्लाह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए मुकर्रर कर दिया है और यह एक

निहायत तेज़-रफ़्तार ऊंटनी आपके करीब बांध दी है। अगर खुदा-ना-खासता ऐसा वक़्त आए कि हम एक एक कर के यहां ढेर हो जाएं तो हे अल्लाह! यह ऊंटनी मौजूद है। इस पर सवार हो जाएं और मदीना पहुंच जाएं।

वहां हमारे कुछ और भाई मौजूद हैं उन्हें मालूम न था कि जंग होने वाली है। अगर मालूम होता तो वह भी हमारे साथ शामिल होते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास पहुंच जाएं। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करेंगे और दुश्मन के उपद्रव से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महफूज़ रहेंगे।" (सिलसिला अहमदिया के संस्थापक कोई नया दीन नहीं लाए। अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 244-245) लेकिन बहरहाल आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो उनकी बात नहीं माननी थी और न मान सकते थे लेकिन यह एक जज़बा था जो इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस ज़िम्न में और फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दफ़ा फ़रमाया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में सबसे ज़्यादा बहादुर और दिलेर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे और फिर उन्होंने कहा कि जंग-ए- बदर में जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक अलैहदा चबूतरा बनाया गया तो उस वक़्त सवाल पैदा हुआ कि आज रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त का काम किस के सपुर्द किया जाए। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौरन नंगी तलवार लेकर खड़े हो गए और उन्होंने इस इन्तेहाई ख़तरा के मौक़ा पर निहायत दिलेरी के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त का फ़र्ज़ सरअंजाम दिया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 पृष्ठ 364-365)

बहरहाल सुबह के वक़्त कुरैश अपने मुक़ाम से आगे बढ़े। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको देखा तो फ़रमाया

हे अल्लाह ये कुरैश गरूर और तकबुर के साथ तुझ से लड़ने और तेरे रसूल की तक़ज़ीब के लिए आ गए हैं। तू ने जो मुझसे नुसरत का वादा फ़रमाया है उसे पूरा कर और आज ही उनका ख़ातमा दे।

मुशरेकीन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उल्बा बिन रबीया को एक सुर्ख़ ऊंट पर सवार देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर उनमें से किसी के पास भलाई है तो वह उस सुर्ख़ ऊंट वाले के पास है। अगर वह उस का कहा मानेंगे तो राह-ए-रास्त पर आ जाएंगे।

कुफ़्रार का हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हौज़ से पानी पीने का वाक़िया।

भी मिलता है। बावजूद कि पानी पर क़बज़ा था लेकिन जब ये लोग यानी कुरैश बदर के मैदान में उतरे तो उनमें से एक गिरोह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हौज़ पर आकर पानी पीने लगा। उनमें हकीम बिन हज़ज़ाम भी शामिल थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको पानी पीने दो। उस दिन उनमें से जिसने भी हौज़ से पानी पिया वह सब क़तल हुए सिवाए हकीम बिन हज़ज़ाम के जो उसके बाद मुस्लमान हो गए थे। वह भी कसम उठाते थे तो यूँ कहते थे कि उस ज़ात की क़सम! जिसने मुझे ग़ज़व-ए-बदर के दिन निजात दी थी।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 424 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

जंग के लिए सफ़े दुरस्त करने के बारे में लिखा है कि सुबह के वक़्त कुरैश के आने से क़बल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम की सफ़ बंदी फ़रमाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीर के साथ सफ़े दुरस्त कर रहे थे। आप उस के साथ इशारा कर रहे थे कि आगे हो जाओ, पीछे हो जाओ यहाँ तक कि वह सीधे हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मसअब बिन अमीर को झंडा अता फ़रमाया जिसे उन्होंने इस मुक़ाम पर रख दिया जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हुक़म फ़रमाया था। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़ों का जायज़ा लेने लगे। आपका रुख़ मगरिब की ओर था।

(सिब्लुल् हुदा-वल् इलरशाद। ज़िक्र ग़ज़व बदर अलकबरी। भाग 4 पृष्ठ 33 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इस सारे अर्से में जब आंहुज़ूरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़े दुरस्त फ़र्मा रहे थे एक अजीब वाक़िया का भी वर्णन भी मिलता है जो हज़रत सवाद बिन ग़ज़ीयह रज़ियल्लाहु अन्हो का है जिससे मुहब्बत-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इज़हार होता है। लिखा है कि ग़ज़व-ए-बदर में सफ़े सीधी

करते वक़्त जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र सवाद बिन ग़ज़ीयह रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से हुआ तो वह सफ़ से बाहर निकले हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पेट पर तीर लगा कर इशारा किया कि सवाद! सीधे खड़े हो जाओ। हज़रत सवाद ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने मुझे तकलीफ़ दी है। आपको अल्लाह तआला ने अदल-ओ-इन्साफ़ के साथ अवतरित फ़रमाया है। आप मुझे बदला दें। मेरे पेट पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीर मारा है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पेट से कपड़ा उठाया और फ़रमाया बदला ले लो। हज़रत सवाद आपसे बग़लगीर हो गए और आपके जिस्म का बोसा लेने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा : हे सवाद तू ने ऐसा क्यों किया? उसने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप देख रहे हैं कि यह क्या वक़्त है। जंग का वक़्त है। पता नहीं मैं ज़िंदा रहूँ कि नहीं। मैंने चाहा कि आपके साथ मेरे आख़िरी लमहात जो गुज़रें वे इस तरह कि मेरा जिस्म आपके जिस्म-ए-मुबारक से छू जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई। (अल्सीरतुल हल्बिया बाब मुगाज़ भाग 2 पृष्ठ 220-221 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) ये थे मुहब्बत और प्रेम के नज़ारे।

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा।

इस वक़्त कुछ मरहूमिन का वर्णन भी करना चाहता हूँ जिस में एक हैं श्रीमान क़ारी मुहम्मद आशिक़ साहिब जो जामिआ अहमदिया के उस्ताद थे और मदरसे के निगरान और प्रिंसिपल थे। उनकी पिछले दिनों पचासी साल की उमर में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। क़ारी आशिक़ साहिब को कुरआन-ए-करीम हिफ़ज़ करने और तजवीद सीखने के बाद अहमदीयत क़बूल करने से पहले पाकिस्तान के मुख्तलिफ़ मुक़ामात पर हदीस वालों के मदारिस में दरस-ओ-तदरीस का अवसर मिला। खुद उन्होंने बैअत की थी। क़ारी आशिक़ साहिब बैअत से पहले अहल-ए-हदीस मसलक से ताल्लुक़ रखते थे। क़ारी साहिब ने खुद अपने बारे में जो किताब लिखवाई थी इस में वर्णन किया है। कहते हैं 1957 ई. का वाक़िया है जब मैं कराची में था तो वहां कुछ अह्ले इल्म दोस्तों के साथ उठना बैठना था। मैं अक्सर उनके पास चला जाता। वहां पर अख़बार का मुताला करता और कुछ उल्मा के साथ मजलिस भी रहती। एक दिन मैं वहां बैठ कर अख़बार पढ़ रहा था कि एक दोस्त जिनके ज़ेर अध्ययन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कोई किताब थी कहने लगे यार कमाल है मैंने कहा भाई क्या कमाल है? कहने लगे हमारे उलमाए कराम मुख्तलिफ़ आयात के नासिख-ओ-मंसूख का अक़ीदा रखते हैं जबकि मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादयानी कहते हैं कि कुरआन-ए-करीम का एक शोशा भी मंसूख नहीं। तो क़ारी साहिब कहते हैं कि मुझे इस बात पर तजस्सुस पैदा हुआ मैंने सोचा कि इस बारे में तहक़ीक़ की जाए कि ये सच्चे हैं या झूठे हैं। फिर उन्होंने लिखवाया अपनी खुदनौशत में कि एक दिन मैं अहमदीयत के बारे में तआरुफ़ हासिल करने अहमदिया हाल कराची में नमाज़ के बाद गया। मुलाक़ात एक अहमदी से हुई। मैंने उनसे कहा कि इख़तेलाफ़ी मसाइल के बारे में कुछ मालूमात चाहता हूँ। इस बारे में मेरी मदद और राहनुमाई की जाए। वहां बैठे एक दोस्त मुझे अहमदिया हाल से अपने घर ले गए। मुझे कुछ कुतुब पढ़ने के लिए दें। मैंने वे कुतुब अध्ययन कीं और अपने इन्ही अह्ले इल्म दोस्तों में से एक मौलवी-साहब को अब दिखाएंगे कि ये तो ऐन इस्लाम है। मौलवी-साहब ने कहा आप बहुत शरीफ़ उल-नफ़स हैं। आपको नहीं मालूम इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि मिर्ज़ा साहिब की छोटी किताबों में जो अक्रायद दर्ज हैं वे इस्लाम के मुताबिक़ हैं ये वे कुतुब हैं जो उन्होंने शुरू ज़माने में तहरीर की थीं लेकिन बड़ी कुतुब जो बाद में तहरीर की गई हैं उनमें मिर्ज़ा साहिब ने झूठे ख़्यालात और अक्रायद लिखे हैं। हालाँकि बराहीन-ए-अहमदिया तो शुरू में लिखी गई थी और वही इस्लाम की असल शिक्षा थी। बाद में और भी किताबें हैं। बहरहाल उनका जो संपर्क था उस के बाद फिर क़ारी साहिब गए और उनसे कहा कि कोई बड़ी किताब दें तो उन्होंने बहरहाल बड़ी किताबें देने में कोई उज़्र पेश किया हालाँकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब में कोई तज़ाद नहीं है चाहे वे पहली किताबें हैं या बाद की लिखी हुई आख़िरी किताबें हैं। इस अहमदी की क्या हिक्मत थी, क्यों किताबें नहीं दें अल्लाह तआला बेहतर जानता है। लेकिन बहरहाल उस के बाद फिर क़ारी साहिब का राबिता उनसे ख़त्म हो गया। इस के

बाद क़ारी साहिब की खुदनौशत जीवनी के मुताबिक़ मालूम होता है कि एक ख़ास खुदाई तक्रदीर ने उनके दिल में एक तड़प पैदा कर दी थी और क़ारी साहिब मुतअद्दिद मवाक़े पर रब्बह तशरीफ़ लाते रहे और मुक़ामी सतह पर अहमदी अहबाब से संपर्क करते रहे। दुआएं भी करते रहे। इसी दुआ की कैफ़ीयत में उन्हें मुतअद्दिद ख़्वाबों भी आईं। इन्ही ख़ाबों में एक ख़ाब यह भी थी कि **سَمِعُوا صَوْتِ السَّمَاءِ جَاءَ الْمَسِيحُ** कि आसमान की आवाज़ सुनो कि मसीह आ गया। क़ारी साहिब कहते हैं उस वक़्त तो उन अलफ़ाज़ से मेरा ध्यान अहमदीयत की तरफ़ नहीं गया लेकिन अहमदी होने के बाद यह याद आया कि वह ख़ाब पूरे हुए हैं। जो मुख्तलिफ़ ख़्वाबों देखी थीं उनमें से एक यह भी थी। क़ारी साहिब लिखते हैं कि जब मैं अपनी ज़िंदगी के वाक़ियात पर नज़र डालता हूँ तो सोचता हूँ कि यह अल्लाह तआला का महिज़ फ़ज़ल था कि मेरी तवज्जा बार-बार जमात अहमदिया की तरफ़ मबज़ूल होती रही और मुझे हिदायत नसीब हो गई।

फिर लिखते हैं कि अंसारुल्लाह के इजतेमा पर शेख़ अबदुलक़ादिर साहिब सौदागर मुर्ब्बी सिलसिला लाहौर के साथ मुलाक़ात हुई। अंसार के इजतेमा पर गए थे उस वक़्त अभी बैअत नहीं की थी। कहते हैं मैंने इजतेमा के पहले दिन के सारे प्रोग्राम देखे। ग़ालिबन इजतेमा के दूसरे या तीसरे दिन मैंने इस ख़ाहिश का इज़हार किया कि मेरी बैअत करवा दी जाए। इसलिए हम दफ़तर इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया में गए और ख़ाक़सार बैअत फ़ार्म भर कर के अहमदीयत के नूर से मुनव्वर हो गया।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 11से 22 प्रकाशन ज़ियाउल इस्लाम प्रैस रब्बाह, जनवरी 2013 ई.)

अहमदीयत क़बूल करने के बाद आपको इबतेलाओं से भी गुज़रना पड़ा। दूसरी तरफ़ उनके ग़ैर अज़ जमाअत शागिर्दों और राहनुमाओं की तरफ़ से मुख्तलिफ़ तरीक़ से वापस लाने की कोशिश भी की गई। लालच भी दिए गए, सख़्तियां भी की गई। क़ारी साहिब कहते हैं कि "अहमदीयत क़बूल करने के बाद कई मुश्किलात मेरी राह में आईं लेकिन मुझे अल्लाह तआला ने साबित-क़दम रखा और उस के बताए हुए रस्ते पर चलता गया। अल्लाह तआला की राहनुमाई मौजूद थी इस लिए मुझे कोई भी दुनियावी लालच राह-ए-हक़ से हटा न सकी। मुझे जमात अहमदिया से मुतनफ़िफ़र करने और वापिस जमात अहले हदीस वालों में ले जाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन अल्लाह के फ़ज़ल से जो ईमान का रंग मुझ पर चढ़ा उस की वजह से बड़ी कोशिशों के बावजूद भी वह मुझे वापस ले जाने में नाकाम हो गए।"

(मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 27 प्रकाशन ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्बाह, जनवरी 2013 ई.)

उनकी शादी एक बेवा से हुई थी जिनके पहले तीन बच्चे थे। उनकी एक बेटी उनसे पैदा हुई।

जमाअती ख़िदमत के बारे में लिखा है। कहते हैं कि सूफ़ी खुदाबख़्श जीरवी साहिब एक दिन मस्जिद में मुझे मिले और मुझे कहा कि हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब जो उस वक़्त वक्रफ़-ए-जदीद के इंचारज थे उनका पैग़ाम यह है कि आपको उनके पास रब्बह ले के आऊँ। बैअत यह कर चुके थे। कहते हैं जब मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत मियां साहिब ने पहले आपकी तिलावत सुनी और फिर वक्रफ़ जदीद के मोअल्लेमीन को कुरआन-ए-करीम तजवीद के साथ पढ़ाने के लिए ड्यूटी तफ़वीज़ फ़रमाई और वक्रफ़ जदीद में ही रिहायश का भी इंतज़ाम कर दिया। यह 1964 ई. की बात है।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 27-28 मतबूआ ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्बाह, जनवरी 2013 ई.)

कहते हैं वक्रफ़ जदीद में बतौर मुअल्लिम क़ारी साहिब का बाक़ायदा तक्ररर यक़म जनवरी 1965 ई. में हुआ। इसी दौरान जामिआ अहमदिया के दर्जा शाहिद के तलबा आपसे कुरआन-ए-करीम पढ़ने के लिए दफ़तर वक्रफ़ जदीद आते और बाद में श्रीमान मीर दाऊद अहमद साहिब जो इस वक़्त जामिआ अहमदिया के प्रिंसिपल थे उनके कहने पर क़ारी साहिब जामिआ अहमदिया में जाकर पढ़ाने लगे। इस के साथ साथ जामिआ नुसरत गर्लज़ कॉलेज में भी जो कि जमात का कॉलेज था तो पर्दा की पाबंदी के साथ लड़कियों को भी कुरआन

शरीफ़ पढ़ाते थे।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 35-36 मतबूआ ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्वह, जनवरी 2013 ई.)

जनवरी 1969 ई. में हाफ़िज़ क्लास रब्वह के इंचार्ज हाफ़िज़ शफ़ीक़ साहिब का देहांत हुआ तो प्रिंसिपल जामिआ मीर दाऊद अहमद साहिब ने हाफ़िज़ साहिब को कहा कि क्लास में आ जाया करें। उनकी क्लास आप ले लिया करें। उन दिनों में ये क्लास मस्जिद मुबारक में हुआ करती थी। मुझे भी याद है मस्जिद में बैठे लड़के हिफ़ज़ कर रहे होते थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-सालिस ने फिर क़ारी साहिब का हाफ़िज़ क्लास में भी तर्करूर फ़रमाया, उस की मंजूरी दी और साथ यह लिखा कि वक्रफ़-ए-जदीद में भी पढ़ाएंगे और हाफ़िज़ क्लास को भी पढ़ाएंगे। इसलिए 1969 ई. को बाक़ायदा हाफ़िज़ क्लास में तर्करूर हुआ।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 40-41 मतबूआ ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्वह, जनवरी 2013 ई.)

1998 ई. में उनकी रिटायरमेंट हो गई।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 52 मतबूआ ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्वह, जनवरी 2013 ई.)

लेकिन इस के बावजूद भी उन्होंने 2019 ई. तक मद्रसतुल हिफ़ज़ और मद्रसतुल ज़फ़र में कुरआन-ए-करीम पढ़ाने का काम जारी रखा। जलसा सालाना 1964 ई. के बाबरकत अवसर पर आपको पहली दफ़ा तिलावत की सआदत मिली।

क़ारी साहिब अपना वाक़िया लिखते हैं। कहते हैं कि फरवरी 1965 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो से मुलाक़ात की सआदत हासिल हुई। तारीख़ी मुलाक़ात का अहवाल इस तरह बताया करते थे कि जब मैंने शरफ़-ए-मुसाफ़ा हासिल किया तो वह लम्हा मेरे लिए अपनी ज़िंदगी बदलने का मूजिब बना। प्राइवेट सैक्रेटरी साहिब ने हुज़ूर की ख़िदमत में मेरा परिचय करवाया कि ये क़ारी मुहम्मद आशिक़ साहिब हैं जो नौ मुबाईन हैं। जब वह मेरा तआरुफ़ करवा रहे थे तो हुज़ूर अज़राह-ए-शफ़क़त नज़र भर कर मुझे देखते रहे और मैं भी हुज़ूर का बाबरकत हाथ थामे आपकी ज़यारत से मुशरफ़ होता रहा।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद पृष्ठ 28 से 30 मतबूआ ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्वह, जनवरी 2013 ई.)

रमज़ानुल मुबारक में आपकी मस्जिद मुबारक में पंद्रह साल तक नमाज़ तरावीह पढ़ाने की ड्यूटी लगती रही। मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहब नाज़िर इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया ने एक दफ़ा आपको कहा था कि मस्जिद मुबारक में नमाज़ तहज़ुद और नमाज़ तरावीह के पढ़ाने की आपकी ड्यूटी बार-बार इसलिए लगाई जाती है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमा-हुल्लाह तआला को आपकी तिलावत बहुत पसंद है।

(उद्धृत मेरी दास्तान मर्तबा हाफ़िज़ मसरूर अहमद और मुहम्मद मक़सूद अहमद सफ़ा 37-35 प्रकाशन ज़ियाउल-इस्लाम प्रैस रब्वह, जनवरी 2013 ई.)

उनके शागिर्द भी बेशुमार हैं और अब दुनिया में मुस्ललिफ़ जगहों पर फैले हुए हैं। उनके बारे में उनके खुतूत भी मुझे आए जिन्होंने उनकी खूबियों से फ़ैज़ पाया, इनके इलम से फ़ैज़ पाया। वे सब उसका ज़िक़ करते हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद और नसल में भी उनकी ख़ाहिश के मुताबिक़ दुआओं और इख़लास की हालत करे।

दूसरा वर्णन है श्रीमान नूरुद्दीन अल्हसनी साहिब का, जो शाम के बहुत पुराने अहमदी थे। आजकल सऊदी अरब में थे। कई साल से अहमदी होने की वजह से सऊदी अरब की एक जेल में कैद थे। ये असीराने राह मौला थे। बीमारी और सख़्तियों के बावजूद ईमान पर साबित-क़दम रहे और अंततः असीरी के ही 25 मई को तर्करीबन 82 वर्ष की उमर में उन की वफ़ात हुई।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके वालिद अल्हाज अब्दुल रोफ़ अल्हसनी साहिब ने 1938 ई. में बैअत की थी। श्रीमान मुनीर अल्हसनी साहिब साबिक़ अमीर जमात शाम मरहूम नूरुद्दीन अल्हसनी साहिब के ताया थे। मरहूम ने बचपन से ही इस्लामी अख़लाक़-

-ओ-इक़दार और ख़िलाफ़त की मुहब्बत के माहौल में परवरिश पाई। आपकी उमर तेराह या चौदह साल थी जब आपके वालिद साहिब फ़ौत हो गए। मरहूम अक्सर श्रीमान मुनीर अल् हसनी साहिब की सोहबत में रहते थे और उनसे उन्होंने जमात के बारे में बहुत कुछ सीखा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला जब 1955 ई. में दमिशक़ तशरीफ़ ले गए तो मरहूम के चचा श्रीमान बदरुद्दीन अल्हसनी साहिब के घर ठहरे। इन दिनों में मरहूम को एक-बार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने तिलावत करने का शरफ़ भी हासिल हुआ। आप कसरत से रोज़े रखा करते थे। सोमवार और जुमेरात का ब-तौर-ए-खास रोज़ा रखा करते थे। तिलावत कुरआन-ए-करीम का बहुत शौक़ था। तहज़ुद की नमाज़ कभी नहीं छोड़ी। ज़िंदगी के आख़िरी रोज़ तक जेल में भी अपने ईमान पर कायम रहे और जमात के साथ साबित-क़दम रहे। इस बात पर ईमान था कि अल्लाह तआला की नुसरत करीब है। यह बात जेल में अपने साथ मिलने वाले हर शख्स को बताया करते थे। पीछे रहने वालों में उनकी विधवा हैं जो अहमदी हैं और उन्होंने अपने पति से वफ़ा का ताल्लुक़ रखा है। इन ख़ातून ने उनकी जेल के अर्से में बहुत कुर्बानी की। औलाद में तीन बेटे अब्दुल रोफ़ अलहसनी साहिब और मुहम्मद मआज़ अल्हसनी और फ़वाज़ अल्हसनी के इलावा एक बेटा ज़ैनब अल्हसनी हैं। पोते पोतिया भी हैं। सब अल्लाह के फ़ज़ल से मुख़लिस हैं।

मरहूम के बेटे मआज़ अल्हसनी साहिब कहते हैं कि मेरे वालिद साहिब चाहते थे कि हम सब बहन भाई अपनी पूरी तसल्ली कर के जमात में दाख़िल हों और अल् हमदो लिल्लाह कि हमने पूरे ईमान के साथ बैअत की और सऊदी अरब में जब थे तो जमात की तलाश शुरू की। फिर हाशिम साहिब मरहूम जो यू.के. के रहने वाले थे और वहां काम करते थे, उनसे मुलाक़ात हुई और फिर कहते हैं कि हमारे वालिद से राबिता होने पर आख़िर दम तक जमाती कामों में व्यस्त रहे। बहुत मेहरबान और खुले दिल के मालिक थे। दूसरों की इमदाद करना आपको बहुत अच्छा लगता था। उन्होंने लिखा है कि 2019 ई. में उनको बुला कर कैद कर लिया गया। काफ़ी कोशिश और तग-ओ-दो के बाद पता चला कि वालिद साहिब पर अहमदी होने और सोशल मीडिया पर उस की तब्लीग़ करने का इल्ज़ाम है। दो साल तक कहते हैं हमने उनकी रिहाई के लिए हर किस्म की कोशिश की। कई वकीलों की ख़िदमात हासिल कीं। उनकी रिहाई का हुक्म भी सादर हुआ और रिहाई भी अमल में आ गई लेकिन रिहाई के चंद घंटे के बाद पुलिस ने उनको फ़ोन कर के पुलिस स्टेशन बुलाया और दुबारा गिरफ़्तार कर लिया और इस दफ़ा पहले से भी ज़्यादा उन पर सख़्ती की गई। उनसे मुलाक़ात करने की इजाज़त नहीं थी। फ़ोन पर बात करने की इजाज़त नहीं मिली। उनकी सेहत ख़राब थी। बीमारी बुढ़ापे की वजह से बीमार भी होते रहे हस्पताल भी जाते रहे लेकिन उनके घर वालों से उनकी मुलाक़ात नहीं हुई।

उनके बड़े बेटे अब्दुल रोफ़ अल् हसनी हैं जो कैनेडा में हैं वे भी उनके बारे में लिखते हैं कि जमात के लिए बहुत इख़लास-ओ-मुहब्बत रखते थे। अपने अक़ीदे पर मज़बूती से कायम थे और फिर उन्होंने इबादत और इख़लास का ख़ास वर्णन किया है। उन्होंने तफ़सील लिखी है कि 2016 ई. में जब कैद किए गए तो आपने रोज़ा रखा हुआ था और रोज़ा खोलना पसंद नहीं किया बावजूद इस के कि आप जानते थे कि आपको कैद में मशक़त बर्दाश्त करनी पड़ेगी। जब अफ़सर ने पानी पेश किया तो आपने कहा कि मेरा रोज़ा है। फिर नमाज़-ए-अस्र पढ़ने की इजाज़त मांगी। उसने इजाज़त दे दी। आपने उस के सामने नमाज़ पढ़ी तो उस के बाद वह कहने लगा कि आप लोग तो हमारी तरह नमाज़ पढ़ते हैं। बहरहाल उस का उस पर-असर हुआ, उसने उनको उस वक़्त छोड़ दिया। फिर दिसंबर 2019 ई. में बग़ैर कोई वजह बताए दुबारा पुलिस ने पकड़ लिया और जेल में डाल दिया और इसी असीरी की हालत में उनकी वफ़ात हो गई। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां और विशेषताएं अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद मैं नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

इन शा अल्लाह





## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी क्रियाम अमन के हवाले से

(मुहम्मद इनाम गौरी, नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ  
يَهْدِي بِيهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ لِرُضْوَانِهِ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى  
النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

(सूर: अल्मायद: : 17)

अनुवाद : अल्लाह उसके ज़रीया (यानी किताबो मुबीन, रोशन किताब कुरआन-ए-करीम के द्वारा) जो उसकी (अर्थात अल्लाह की) रज़ा की पैरवी करें, सलामती की राहों की तरफ़ हिदायत देता है और अपने इज़न से उन्हें अंधेरो से नूर की तरफ़ निकाल लाता है और उन्हें सद मार्ग की तरफ़ हिदायत देता है।

इस्लाम के अर्थ ही अमन वस्सलामती के हैं और इस्लाम के संस्थापक हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम विश्वव्यापी अमन और वस्सलामती के पैग़ाम्बर हैं।

याद रखना चाहिए कि अमन, सुख, चैन बुनियादी तौर पर दो तरह का होता है।

(1) इन्फ़रादी अमन (2) इजतेमाई अमन

इन्फ़रादी नौईयत का अमन व शांति इन्सान की अपनी ज़ात, उसके दिल, दिमाग़ और जस्मानी सेहत तथा अपने परिवार से संबंधित और लोगों ख़ानदान के हवाले से और अपनी ज़िम्मेदारियों के लिहाज़ से या अपने दायरा कार के लिहाज़ से ताल्लुक़ रखता है।

और इजतेमाई अमन इन्सान की मुआशरती ज़िंदगी अर्थात अपने मुहल्ला अपने शहर या अपने मुल्क या रोय ज़मीन के मजमूई अमन-ओ-अमान से ताल्लुक़ रखता है।

★ हर इन्सान चाहता है कि वह अमन व सकून की ज़िंदगी गुज़ारे, उसकी अपनी सेहत अच्छी रहे, मुनासिब ख़ुराक मिले, रिहायश का मुनासिब इतेज़ाम हो, अच्छी बीवी मिले, नेक और सालेह औलाद अता हो। ख़ानदान के लोगों माता पिता, भाई बहन और दीगर अकारिब दूर और नज़दीक के, सब ख़ैरियत से रहें। आपस में लड़ाई झगड़ा इत्यादि न हो।

★ हर सभ्य समाज के हर फ़र्द की यही ख़ाहिश होती है ख़ाह पढ़ा लिखा हो या उन पढ़ हो। मालदार हो या ग़रीब हो। गोरा हो या काला हो, अरबी हो या अजमी हो, मशरिफ़ी हो या मगरिबी कि उस को अमन और शांति और सुख चैन की ज़िंदगी नसीब हो।

चाहे उसके लिए दूसरे व्यक्ति को तकलीफ़ में मुबतला करना पड़े और ज़ाती मुफ़ाद के हुसूल के लिए दूसरों को नुक़सान पहुंचाने से भी दरेग़ा नहीं किया जाता और जब दूसरा व्यक्ति अपने अमन के हुसूल के लिए, अपनी तकलीफ़ के अज़ाला के लिए, अपने नुक़सान की तलाफ़ी के लिए वही सुलूक करता है जो पहले व्यक्ति ने उसके साथ रवा रखा था तो फिर दो तरफ़ा बदअमनी का सिलसिला शुरू हो जाता है।

और यूँ शख़्सी बेचैनी और बदअमनी का दायरा घर से निकल कर मोहल्ले तक और मोहल्ले से शहर और शहर से शहर होते हुए पूरे मुल्क को अपनी चपेट में ले लेता है और अंततः यही गर्दिश-ए-अय्याम बैनुल अक़वामी बदअमनी पर आधारित होती है।

यह कोई फ़र्ज़ी दास्तान या कहानी नहीं है आज की दुनिया के पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में नज़र दौड़ा कर देख लें। विश्वव्यापी बेचैनी और बदअमनी जिसने दिन का चैन और रातों की नींद उड़ा रखी है एक ऐसी ना-क्राबिल-ए-तरदीद हक़ीक़त है कि जिस की स्वीकारोक्ति आम बात है और प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया के हर प्लेटफ़ार्म पर इस का शोर है।

अब सवाल पैदा होता है कि शख़्सी, क़ौमी और बैनुल अक़वामी अमन को किस तरह क़ायम किया जा सकता है उसका उत्तर यह है कि केवल ऐलानात करने और नारे लगाने से तो यह मसला हल नहीं हो सकता। अमली इक़दा-मात करने की ज़रूरत है और यह सफ़र अपने घर से शुरू करके पड़ोसियों, मुहल्लादारों, शहरियों और मुल्की सतह से लेकर बैनुल अक़वामी सतह तक पहुंचने और पहुंचाने की ज़रूरत है।

आएं इस हवाले से मुहसिन-ए-इन्सानियत हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर एक तायराना नज़र डालते हैं और इस्लामी तालीमात और आप सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम कि पवित्र जीवनी का कुछ वर्णन करते हैं।

घरों का अमन

सबसे पहले यह देखना है कि घरों में अमन किस तरह क़ायम रह सकता है। इस के लिए पति पत्नी के हुकूक़ और फ़रायज़ का ख़्याल रखना होगा। एक दूसरे के जज़बात और एहसासात को मद्द-ए-नज़र रखना ज़रूरी है, अपने आराम से बढ़कर अपने साथी के आराम का ख़्याल रखना ज़रूरी है अन्यथा आए दिन पति पत्नी के दरमयान लड़ाई झगड़ों से घर का अमन बर्बाद हो जाता है। बच्चों की तर्बीयत पर बहुत बुरा असर पड़ता है इस की तफ़सील में जाने का अवसर नहीं। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पुरअमन परिवारिक ज़िंदगी के हवाले से चंद अहादीस पेश करता हूँ।

तिरमज़ी की एक हदीस है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

तुम में से बेहतरीन व्यक्ति वह है जो अपने परिवार के साथ हुसू-ए-सुलूक में बेहतर है और मैं तुम सबसे बढ़कर अपने अहल-ए-ख़ाना के साथ हुसू-ए-सुलूक करने वाला हूँ। और इस में क्या संदेह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तर्बीयती और क़ौमी ज़रूरियात के मद्द-ए-नज़र मुतअद्दिद शादियां करनी पढ़ीं और एक वक़्त में नौ पत्नियाँ आपके घर में रहें। सब ही आपके हुसू-ए-सुलूक और अदल और इनसाफ़ से मुतमइन और राज़ी खुशी रहें।

मुस्लिम की एक हदीस पेश करता हूँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने ईसार का पहलू मद्द-ए-नज़र रखते हुए मियां बीवी को एक दूसरे में खूबियां तलाश करने की नसीहत करते हुए फ़रमाया।

अगर तुम में से किसी को दूसरे में कोई ऐब नज़र आता है या उसकी कोई अदा नापसंद है तो कई बातें उसकी पसंद भी होंगी जो अच्छी भी लगींगी, उन को मद्द-ए-नज़र रखकर ईसार का पहलू इख़तेयार करते हुए मुवाफ़िक़त की फ़िज़ा पैदा करनी चाहिए।

किसी ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम घर में क्या-क्या करते थे। फ़रमाने लगे आप समस्त इन्सानों की तरह एक इन्सान थे। कपड़े को ख़ुद पैवंद लगा लेते थे, बकरी का दूध स्वयं लेते थे और ज़ाती काम ख़ुद कर लिया करते थे। (मुसन्नद अहमद)

रात को देर से घर लोटते तो किसी को ज़हमत दिए या जगाए बग़ैर खाना या दूध स्वयं तनावुल फ़र्मा लेते। (मुस्लिम)

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ही घरेलू ज़िंदगी के बारे में यह शहादत है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त लोगों से ज़्यादा नरम खू और सबसे ज़्यादा करीम, आम आदमियों की तरह बिला तकल्लुफ़ घर में रहने वाले थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी तेवरी नहीं चढ़ाई हमेशा मुस्क्राते रहते थे। तथा आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाती हैं कि अपनी सारी ज़िंदगी में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी अपनी किसी बीवी पर हाथ नहीं उठाया और न कभी किसी ख़ादिम को मारा। (तिरमिज़ी)

हमारे आका हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्र और हसान के इन कार्यों ने निसन्देह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की परिवरिक ज़िंदगी को निहायत पुरअमन और जन्नत नज़ीर बनादिया था यही वजह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की समस्त बीवियां हमेशा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर फ़िदा थीं।

اللهم صل على محمد وآل محمد وبارك وسلم

मोहल्ले-दारों का अमन

घर से निकल कर दाएं बाएं आगे पीछे के पड़ोसियों, पड़ोसियों से ताल्लुक़ का मरहला आता है। कुरआन-ए-करीम का यह ताकीदी हुक्म है कि अपने माता पिता से नेक सुलूक कर वासी तरह करीबी रिश्तेदारों से, यतीमों से और मिस्कीनों से और करीब के हमसाया से और दूर के हमसाया से भी तथा जिस जगह इकट्ठे काम करते हैं वहां भी एक दूसरे से नेक व्यवहार करो।

(अल् निसा : 37)

इस सिलसिला में चंद अहादीस भी पेश करता हूँ :

हज़रत अबुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया। मुझे किस तरह मालूम हो कि मैं अच्छा कर रहा हूँ या बुरा कर रहा हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुना कि तुम बड़े अच्छे हो तो समझ लो कि तुम्हारा तर्ज़-ए-अमल अच्छा है और जब तुम पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुम बड़े बुरे हो तो समझ लो कि तुम्हारा व्यवहार बुरा है। (इब्ने माजा)

हज़रत इब्न-ए-उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। जिबराईल हमेशा मुझे पड़ोसी से हुस्र-ए-सुलूक की ताकीद करता आ रहा है। यहां तक कि मुझे ख्याल हुआ कि कहीं वह उसे वारिस ही न बना दे। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खुदा तआला की क़सम वह व्यक्ति मोमिन नहीं है। खुदा तआला की क़सम वह व्यक्ति मोमिन नहीं है। (तीन मर्तबा यही शब्दों आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दोहराए) आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा गया। हे रसूलुल्लाह! कौन मोमिन नहीं है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों और उसके अचानक वारों से महफूज़ न हो। (बुख़ारी)

अचानक हमले विभिन्न तरीकों से होते रहते हैं कभी रात के वक़्त रेडियो, टीवी पर ऊंची आवाज़ से प्रोग्राम सुनते रहते हैं जिससे पड़ोसी आराम की नींद सो नहीं सकता। कभी घर का कचरा हमसाया के दरवाज़े के सामने रख दिया जाता है इत्यादि इत्यादि।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हे अबू ज़र! जब भी तुम कभी अच्छा सालन पकाओ तो उस का शोरबा कुछ ज़्यादा कर लिया करो और अपने पड़ोसी का भी ख्याल रखो अर्थात् किसी न किसी पड़ोसी को भी सालन भिजवाया करो। (मुस्लिम)

जब सब मुहल्ला वाले अपने अपने पड़ोसियों का इसकदर ख्याल रख रहे होंगे और हर किस्म की कष्ट देने से इजतेनाब कर रहे होंगे तो ज़ाहिर है पूरे मुहल्ला में अमन-ओ-अमान ही रहेगा।

शहर का अमन

आम शहरियों के हुक्क़ व फ़रायज़ का जहां तक ताल्लुक़ है उस का सही इलम होना और उसके मुताबिक़ अदायगी का प्रयास करना, पूरे शहर को अमन का गहवारा बनाने का मूजिब होता है इस विषय में चंद हिदायात और इर्शादात समाअत फ़रमाएं :

एक यह है कि आपस में एक दूसरे से जब भी मिलें तो अस्सलामो अलैकुम कहा करें अर्थात् तुम पर अल्लाह की सलामती हो। हमारे यहां भारत में विभिन्न मज़ाहिब के पैरोकार अपने अपने तरीक़ के मुताबिक़ नमस्ते। सत श्री अकाल। गुडमार्निंग इत्यादि के शब्दों से एक दूसरे को ख़ैर सलामती का पैगाम देते हैं। फिर आपस में मुसाफ़ा करते हैं। इस से वाक़फ़ियत और मुहब्वत बढ़ती है और नफ़रत व कदूरत दूर होती है।

दूसरा यह कि रास्तों में गंद न डालें बल्कि राहगीरों को तकलीफ़ देने वाली

चीज़ें हटाने दूर करने का प्रयास करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रास्ता से तकलीफ़-दह चीज़ों को हटाना भी सदक़ा है।

फिर यह भी हिदायत है कि पब्लिक मुक़ामात पर बुलंद आवाज़ से लड़ना झगड़ना मुनासिब नहीं इस से लोगों के अमन और आरमान में ख़लल पड़ता है जहां बच्चे और औरतें भी होती हैं ऐसी घटनाओं से उन्हें बहुत परेशानी और घबराहट हो जाती है।

रास्ते के दरमयान हलक़ा बांध कर या मज्लिसें लगा कर खड़े होने से परहेज़ करना चाहिए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوسَ عَلَى الطَّرِيقَاتِ** ख़बरदार! रास्तों पर नहीं बैठना। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमें इन मज्लिसों से चारा नहीं। हम इन जगहों पर बैठ कर बातें करते हैं और आपस में मश्वरे करते हैं। फ़रमाया, अगर तुम रह नहीं सकते तो फिर रास्ते का हक़ अदा करो। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने सवाल किया कि रास्ते का हक़ किया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : निगाह नीची रखना, किसी को कष्ट न देना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बात की तलक़ीन करना और बुरी बात से रोकना।"

(मुत्तफ़िक़ अलैह)

यह भी हिदायत है कि बिमारों की इयादत की जाए और उनको नेक मश्वरों और हौसला देने के साथ साथ उन की सेहतयाबी के लिए दुआ भी की जाए।

यह भी हिदायत है कि जो फ़ौत हो जाए उन की तजहीज़ वतदफ़ीन में मदद दी जाए और अपने अपने तरीक़ के मुताबिक़ देह को सम्मान की साथ आख़िरी रसूम अदा की जाए। एक यहूदी का जनाज़ा गुज़र रहा था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह देख कर एहतेरामन खड़े हो गए सहाबा ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह! यह तो एक ग़ैर मुस्लिम यहूदी का जनाज़ा है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उसके अंदर रूह नहीं थी। अर्थात् इन्सानियत के लिहाज़ से सब इन्सान एक हैं।

इस तरह की बेशुमार हिदायात हैं जो शहरियों को आराम पहुंचाने और उनके लिए अमन-ओ-अमान की फ़िज़ा पैदा करने के लिए ज़रूरी हैं ख़ाक़सार ने वक़्त की रियायत से केवल कुछ का वर्णन किया है। इस ज़िम्न में चंद अहादीस मज़ीद पेश करता हूँ।

हज़रत अबुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक दूसरे से हसद न करो। एक दूसरे को नुक़सान पहुंचाने के उद्देश्य से बढ़ चढ़ कर भाव न बढ़ाओ। एक दूसरे से बुग़ाज़ न रखो। एक दूसरे से पीठ न मोड़ो, यानी बे-तअल्लुकी का रवय्या इख़तेयार न करो। एक दूसरे के सौदे पर सौदा न करो बल्कि अल्लाह तआला के बंदे और आपस में भाई भाई बन कर रहो। (मुस्लिम)

हज़रत अम्र बिन शुयेब रज़ियल्लाहु अन्हो आपने बाप और वह अपने दादा से रिवायत करते हुए वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उस व्यक्ति का हमारे साथ कोई ताल्लुक़ नहीं जो छोटे पर रहम नहीं करता और बड़े की इज़ज़त नहीं करता। (तिरमेज़ी)

हज़रत अबुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया समस्त मख़लूक़ात अल्लाह की अयाल (अर्थात् अल्लाह का कुंबा) हैं अतः अल्लाह तआला को अपनी मख़लूक़ात में से वह व्यक्ति बहुत पसंद है जो उसके अयाल। (मख़लूक़) के साथ अच्छा सुलूक करता है और उन की ज़रूरियात का ख्याल रखता है। (मिशकात)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमान की अलामत यह क़रार दी है कि उससे किसी इन्सान को बिलावजह तकलीफ़ न पहुंचे। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "मुस्लमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुस्लमान महफूज़ रहें और मोमिन वह है जिससे लोगों के जान व माल को कोई ख़तरा न हो।" (तिरमेज़ी)

केवल इन्सानों से ही नहीं, जानवरों को भी तकलीफ़ में डालने से मना फ़रमाया गया है। हज़रत इब्न उमर वर्णन करते हैं कि एक औरत को बिल्ली को तकलीफ़ देने की वजह से सज़ा दी गई उस ने बिल्ली को बंद करके भूखा मार दिया। न खाना दिया न पानी और न उसको छोड़ा कि ज़मीन के चूहे इत्यादि खाकर गुज़ारा कर सके। इस ज़ुलम की वजह से वह जहन्नम की आग

में डाल दी गई। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह एक सफ़र में थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ज़रूरत के लिए बाहर तशरीफ़ ले गए। हमने हमरा नामी एक चिड़िया देखी उसके साथ दो बच्चे भी थे। हमने उसके दोनों बच्चों को पकड़ लिया। हमरा ने सिर पर मंडलाना शुरू कर दिया। इस दौरान हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया किस ने उसे बच्चों की वजह से परेशान किया है। उसके बच्चों को वापिस लौटा दो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि किसी ने चियूटियों के बिल को जलाया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला के सिवा किसी और के लिए मुनासिब नहीं कि वह किसी जानदार को आग से जलाए। (दाऊद)

वास्तव में यह छोटी और मामूली हिदायात नज़र आती हैं लेकिन दूसरे इन्सानों और दीगर मखलूक़ात को तकलीफ़ से बचाने और उन्हें आराम और राहत पहुँचा कर उनके लिए अमन क़ायम करने के लिहाज़ से बहुत अहम और बुनियादी एहमियत की हामिल हैं।

हुकूमत के हुकूक और फ़रायज़

अब तक आम इन्सानों के बाहमी ताल्लुक़ात और उनके हुकूक व फ़रायज़ पर कुछ रोशनी डाली गई है। अब इस्लामी तालीम की रोशनी में हुकूमत और रियासत के हुकूक व फ़रायज़ के मुताल्लिक़ भी कुछ वर्णन करना ज़रूरी समझता हूँ।

सबसे पहला फ़र्ज़ किसी भी हुकूमत का यह है कि प्रजा की बुनियादी ज़रूरियात जैसे उनकी मुनासिब खुराक, मुनासिब लिबास और हुकूमत के वसायल के मुताबिक़ उनकी रिहायश का इंतज़ाम करना।

इसीलिए इन बुनियादी इन्सानी ज़रूरियात की फ़राहमी के हवाले से कुर-रआन-ए-करीम ने यह रहनुमा उसूल वर्णन फ़रमाया है कि **إِنَّكَ لَا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ** (ताहा 119 से 120)

अर्थात् हे इन्सान तेरी ये बुनियादी ज़रूरत तस्लीम की गई है कि तू न भूखा रहे और न बग़ैर लिबास के रहे और न बग़ैर छत के खुले आसमान तले पड़ा जलता रहे।

जबकि भूख, प्यास और लिबास की ज़रूरियात का इमदाद-ए-बाहमी के तौर पर लोग भी एक दूसरे का ख़्याल रखने की प्रयास करते हैं और विभिन्न तंज़ीमों और NGO भी बनीनौ इन्सान की हमदर्दी में जुटी रहती हैं।

लेकिन हुकूमत की यह अहम ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी रियाया के लिए ऐसे मुस्तक़िल ज़राए और वसायल मुहय्या करने का इंतज़ाम करे जिनसे उनको ज़रूरत के मुताबिक़ खाना कपड़ा और मकान उपलब्ध आ जाए और जिस क़दर कोई हुकूमत इस अहम ज़िम्मेदारी को अदा करने में ग़फ़लत या बदइंतज़ामी के सबब नाकाम रहे उसी के मुताबिक़ रियाया में बेचैनी और बदअमनी पैदा हो जाती है और फिर उसके नतीजा में विभिन्न जरायम पनपने लगते हैं।

इस सिलसिला में यह बात भी बहुत अहम है कि इन्सानों को उन के मुनासिब-ए-हाल रोज़गार मुहय्या किया जाए और उनको उनकी सलाहियतों के मुताबिक़ अपने पैरों पर खड़ा करने का प्रयास की जाए और उन्हें मांगने और सवाल करने की आदत से बचाया जाए। इस विषय में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ इर्शादात और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अमली नमूना पेश करता हूँ

हज़रत अबुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आं-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खुदा तआला के निर्धारित करदा फ़रायज़ की तरह मेहनत की कमाई भी फ़र्ज़ है।

(मिशकात)

हज़रत मिक्दाद बिन मादी कर्ब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने हाथ से कमाई हुई रोज़ी से बेहतर कोई रोज़ी नहीं। (बुख़ारी)

अतः जबकि आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मांगने और सवाल करने को पसंद नहीं फ़रमाते थे और फ़रमाते थे कि ऊपर वाला हाथ अर्थात् देने वाला हाथ नीचे वाले हाथ (यानी) मांगने वाले के हाथ से अफ़ज़ल है।

जबकि कोई हक़ीक़ी ज़रूरतमंद मांगने वाला आपके दरबार से ख़ाली हाथ नहीं लौटाया जाता था लेकिन अगर किसी के सवाल को रद्द फ़रमाते तो फिर इसके लिए बेहतर मुतबादिल का इंतज़ाम भी फ़र्मा देते थे।

इसलिए हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक अंसारी सवाली बन कर आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कुछ अता फ़रमाने की बजाय पूछा तुम्हारे घर में कुछ है? उस ने अर्ज़ किया : एक चादर और एक छागल है। फ़रमाया दोनों चीज़ें ले आओ। वह दोनों चीज़ें लेकर हाज़िर हो गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा के दरमयान इन दोनों चीज़ों की नीलामी करवाई। एक व्यक्ति ने कहा मैं एक दिरहम में यह दोनों चीज़ें ख़रीदता हूँ दूसरे ने कहा मैं दो दिरहम में ख़रीदता हूँ। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो दिरहम में वे दोनों चीज़ें दे दें और उस अंसारी को फ़रमाया यह लो एक दिरहम से खाने पीने की चीज़ें ख़रीद कर घर दे दो और दूसरे दिरहम से कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास ले आओ। जब वह कुल्हाड़ी ख़रीद करले आया तो हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस में खुद लकड़ी का दस्ता डाला और फ़रमाया जाओ इस से लकड़ियाँ काट काट कर फ़रोख़्त करो और पंद्रह दिन से पहले मैं तुझे उधार आता न देखूँ इसलिए वह व्यक्ति लकड़ियाँ काट काट कर बेचता रहा यहांतक कि जब वह हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो उस ने दस दिरहम कमा लिए थे हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया कि तेरे लिए खुद कमा कर खाना इस बात से ज़्यादा अच्छा है कि तू दर-दर मांगता फिरे। (अब्बू दाऊद)

मज़दूर की मज़दूरी के सिलसिला में आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी अदा कर दी जाए। (इब्ने माजा)

तथा फ़रमाते हैं जो व्यक्ति मज़दूर को उसका हक़ अदा नहीं करता क्रियामत के दिन में उस की तरफ़ से झड़ूंगा। इस से यह नतीजा निकलता है कि अगर कोई मालिक मज़दूर की मज़दूरी न दे तो फिर हुकूमत का फ़र्ज़ है कि उस को दिलवाए।

मुअज़्ज़िज़ हज़रात! हुकूमत का बुनियादी फ़र्ज़ यह भी है कि रियाया के साथ अदल और इंसफ़ का सुलूक रवा रखे और हर किस्म की नाइंसफ़ी और जुलम को मिटाने का प्रयास करे।

असर-ए-हाज़िर में अदल और इंसफ़ का फ़ुक़दान ही तमाम-तर बदअ-मनी और बेचैनी का मूजिब और आलमी बे-सुकूनी का सबब है। इस ज़िम्न में हज़रत अमीरुल मोमनीन खलीफ़तुल मसीह अलख़ामस् अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ बार-बार दुनिया के साहब-ए-इक़तेदार लोगों को तवज्जा दिला रहे हैं। इसीलिए आपने कैपिटल हिल वाशिंगटन डी.सी में सन् 2012 ई. में अपने ख़िताब में फ़रमाया :

"कुरआन-ए-करीम में वाज़िह तौर पर फ़रमाया है कि समस्त लोग बहै-सियत इन्सान हैं। आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आख़िरी ख़ुतबा में समस्त मुस्लमानों को हुक्म दिया कि वह हमेशा याद रखें कि किसी अरबी को ग़ैर अरबी पर कोई फ़ौक़ियत हासिल नहीं है। न ही किसी ग़ैर अरबी को अरबी पर कोई बरतरी है। आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाया कि किसी गोरे को काले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं है न ही किसी काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत है। इसीलिए इस्लाम की यह वाज़ेह

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की

जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

**1800 3010 2131**

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

**Web.www.alislam.org**

**www.ahmadiyyamuslimjamaat.in**

तालीम है कि समस्त क़ौमों और नसलों के लोग बराबर हैं। आपने यह भी वाज़िह फ़रमाया कि सब लोगों को बिना इमतेयाज़ और बिला तास्सुब यकसाँ हुकूक मिलने चाहिए। यह वह बुनियादी और सुनहरी उसूल है जो बैनुल अक़वामी अमन और हम-आहंगी की बुनियाद रखता है।"

बैनुल अक़वामी ताल्लुकात

मुल्की और क़ौमी हुकूक वफ़रायज़ के बाद अब बैनुल अक़वामी ताल्लुकात के बारे में इख़तेसार के साथ कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ। विशेषता मौजूदा माहौल में जबकि हर बड़ी ताक़त छोटी ताक़तों को दबाती चली जा रही है और विभिन्न हिलों, बहानों से छोटी ताक़तों का जीवन व्यतीत करने की सीमा तंग करने के दरपे हो गई हैं। अगर इस समस्त लड़ाई झगड़े, जंग और जिदाल के अस्बाब पर गौर किया जाए तो बड़ी वजह यही सामने आती है कि महिज़ एक दूसरे के मुल्क पर बुरी की नज़र रखने या आपस में एक दूसरे से नाजायज़ फ़ायदा उठाने या उस को ज़ेर करके अपनी बाला-ए-दस्ती क़ायम करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस्लाम इस खुदग़रज़ी की बुनियाद को ख़त्म करने के लिए कुरआन-ए-करीम की सूर: ताहा की आयत नंबर 132 में यह हुकूम देता है कि अपनी आँखें इस आरिज़ी मता (यानी दुनियावी साज़-ओ-सामान) की तरफ़ उठा उठा करना देखो जो हमने उन में से कुछ क़ौमों को दुनयवी ज़िंदगी की ज़ीनत के तौर पर अता की है ताकि हम उनके आमाल की आज़माईश करें और याद रखें कि जो तेरे रब ने तुझे दिया है वही तेरे लिए अच्छा और ज़्यादा देर तक रहने वाला है।

और दूसरा बुनियादी हुकूम सूर: मायदा की आयत नंबर 9 में यह दिया कि ई मोमिनो! किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें हरगिज़ इस बात पर आमामा न करे कि तुम उसके साथ इन्साफ़ न करो। तुम बहरहाल इन्साफ़ का मुआमला करो यह बात तक्रवा के सबसे ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो निःसन्देह अल्लाह इस से हमेशा बाख़बर रहता है जो तुम करते हो।

आज देख लें मगरिबी ताक़तें भी और मशरिफ़ी ताक़तें भी, उत्तरी ताक़तें भी और जुनूबी ताक़तें भी एक दूसरे के साज़-ओ-सामान लालच की नज़र रखे हुए हैं और मुल्कगिरी और दूसरों को ज़ेर करने और अपनी बालादस्ती क़ायम करके अपने मुफ़ादात का तहफ़फ़ुज़ करने में लगी हुई हैं ख़ाह उसके नतीजा में दूसरी क़ौमों और मुल्कों का जिस रंग में भी नुक़सान हो और जिस रंग में भी वह मुल्क और कौमों तबाह होती रहें उस की किसी को फ़िक्र नहीं है।

जमात अहमदिया के चौथे इमाम हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने आज से कई साल क़बल फ़रमाया था : "आज के ज़माने में सियासत गंदी हो चुकी है। इन्साफ़ तक्रवा से आरी है। वह मुस्लिम रियास्तें जो इस्लाम के नाम पर अपनी बरतरी का दावा करती हैं उन की वफ़ा भी आज इस्लामी अख़लाक़ से नहीं और इस्लाम के बुलंद व बाला इन्साफ़ के उसूलों से नहीं बल्कि अपनी अग़राज़ के साथ है .. (तरफ़) गौर कौमों इन्साफ़ के नाम पर बड़े बड़े दावे कर रही हैं गोया वही हैं जो दुनिया में इन्साफ़ को क़ायम रखने पर मामूर की गई हैं और उनके बग़ैर, उनकी ताक़त के बग़ैर इन्साफ़ दुनिया से मिट जाएगा। परंतु जब आप तफ़सील से देखें तो इन्साफ़ का अर्थात इस इन्साफ़ का जो कुरआन-ए-करीम पेश करता है एक तरफ़ भी फ़ुक़दान है और दूसरी तरफ़ भी फ़ुक़दान है।"

(ख़लीज का बोहरान, पृष्ठ 14)

मज़हबी ताल्लुकात

फिर अमन के हवाले से मज़हबी ताल्लुकात का भी बहुत अहम अमल दख़ल है। आजकल मज़हबी तालीमात को सही रंग में न जानने और न समझने और बानि-ए-मज़ाहिब की असल तालीमात को पीछे डाल कर तथा-कथित मज़हबी रहनुमाओं के ज़ाती नज़रियात व ख़्यालात की अंधी तक्रलीद के नतीजा में विभिन्न मज़ाहिब के पैरोकारों के दरमयान मुनाफ़िरत फैलाई जा रही है और यूँ मज़हबी आज़ादी और रवादारी का फ़ुक़दान लोगों के अमन और शांति को इसकदर बर्बाद कर रहा है कि लोग मज़हब से ही बेज़ार और बर्गशता होते जा रहे हैं और जो मज़हब से जुड़े हुए हैं उन में से भी अक्सर महिज़ रस्मी तौर पर जुड़े हुए हैं अन्यथा उन्हें अपने मज़हब की सही तालीमात और अक़ायद का भी कुछ इलम है।

इस सिलसिला में इस्लाम की अमन बख़श तालीमात और आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पवित्र जीवनी एक अलग रोशन बाब है जिसकी तफ़सील में जाने का वक़्त नहीं है।

संक्षिप्त तौर पर इस क़दर अर्ज़ कर देता हूँ कि

कुरआन-ए-करीम की यह तालीम है कि अल्लाह जो समस्त संसार का मालिक है और केवल समस्त संसार का मालिक नहीं है दलील उस की यह है कि अल्लाह तआला ने हर क़ौम में अपने हादी और पैग़ंबर भेजे हैं इसलिए किसी मज़हब को ख़ाह उसकी असल हालत को तबदील भी कर दिया गया हो लेकिन पूर्णतः उस मज़हब को ख़राब नहीं कहा जा सकता।

फिर यह कि अपने मज़हब और मसलक को फैलाने के लिए किसी पर भी ज़बरदस्ती करना या जंग करना हरगिज़ जायज़ नहीं। कुरआन-ए-करीम का यह वाज़ेह हुकूम है कि لا تُكْرَاهِي فِي الدِّينِ अर्थात दिन में किसी किस्म का कोई जबर जायज़ नहीं। अतः यह बिल्कुल ग़लत इल्ज़ाम है कि इस्लाम, दीन को तलवार से फैलाने की इजाज़त नहीं देता है। इस्लामी जंगें महिज़ दिफ़ाई जंगें थीं या फ़िन्ना और फ़साद को दूर करने और अमन-ओ-अमान क़ायम करने के लिए की गई थीं।

अल्लाह तआला ने इस इल्ज़ाम को अमली तौर पर भी दूर करने के लिए इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक आशिक़-ए-सादिक़ हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बग़ैर तलवार के दुनिया में भेजा है ताकि आप के द्वारा और आप के खुलफ़ा-ए-कराम और जमाअत अहमदिया के द्वारा इस्लाम को दुनिया में फैला कर यह साबित करे कि इस्लाम अपनी अमन बख़श तालीमात के ज़रीया ही फैल सकता है उसको किसी तलवार या जंग और जिदाल की ज़रूरत नहीं है।

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारी दुनिया के लिए हादी और रसूल बनाकर भेजा है और मर्तबा के लिहाज़ से ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनाकर अवतरित फ़रमाया है इसके बावजूद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बर्दाशत नहीं किया कि कोई उम्मीत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दूसरे नबियों से अफ़ज़ल बताकर अमन के माहौल को ख़राब करे। इसीलिए बुख़ारी शरीफ़ में एक रिवायत आती है कि एक दफ़ा एक यहूदी बाज़ार में सौदा बेच रहा था उसे एक मुस्लमान ने एक चीज़ की थोड़ी क़ीमत बताई जो उस यहूदी को नागवार गुज़री और उस ने कहा उस ज़ात की क़सम जिस ने मूसा को समस्त इन्सानों पर फ़ज़ीलत दी है। इस बात पर मुस्लमान को गुस्सा आ गया और उस ने उस यहूदी को थप्पड़ मार दिया। वह यहूदी रसूले करीमई की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारी और अमान में हैं और इस मुस्लमान ने मुझे थप्पड़ मार कर ज़्यादती की है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस पर सज़्त नाराज़ हुए और फ़रमाया मुझे नबियों के मध्य फ़ज़ीलत न दिया करो। (बुख़ारी)

बहरहाल यह निश्चित और यक़ीनी बात है कि जब तक बनीनौ इन्सान में इन्फ़रादी और क़ौमी लिहाज़ से तहम्मूल और बर्दाशत का ज़रफ़ वसीअ नहीं होगा। जब तक दूसरों को तकलीफ़ से बचाने और आराम पहुंचाने का जज़बा पैदा नहीं होंगे। जब तक दूसरों को फ़ायदा पहुंचाने के लिए ज़ाती मुफ़ाद को कुर्बान करने और ईसायत का नमूना दिखाने का एहसास पैदा नहीं होगा और सबसे बढ़कर यह कि जब तक अदल और इन्साफ़ से काम नहीं लिया जाएगा न घरों में अमन क़ायम हो सकता है। न महलों में अमन क़ायम हो सकता है, न शहर में अमन क़ायम हो सकता है और न मुल्क में अमन क़ायम हो सकता है और न विश्वव्यापी सतह पर अमन क़ायम हो सकता है। और इस के लिए आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों लाज़िमन दुनिया को इस्लाम की अमन बख़श तालीमात और मुहसिन-ए-इन्सानियत, रहमतुल लिलआलमीन हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पाक नसाएह और पवित्र जीवनी की पैरवी करनी होगी इसके बग़ैर दुनिया अमन-ओ-अमान का मुख नहीं देख सकती।

यही पैग़ाम है जो हमारे मौजूदा इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस् अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ दुनिया के बड़े-बड़े ऐवानों में और सरबराहान-ए-ममलेकत को पहुंचा रहे हैं और उस विश्वव्यापी तबाही से जो न केवल दरवाज़े पर खड़ी है बल्कि क़ौमों और मुल्कों के अंदर दाख़िल हो चुकी है सचेत करते चले जा रहे हैं। इसलिए चंद

माह कबल जमाअत अहमदिया जर्मनी के जलसा सालाना से इखतेतामी खिताब करते हुए हुज़ूर अनवर अख्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया है

"यह तो हम देखते हैं और समझते हैं कि अमन बड़ी अहम चीज़ है। अमन की बातें होती हैं, हर कोई कहता है अमन बहुत अहम चीज़ है और अमन की हालत ही घर के सुकून और सलामती की भी ज़मानत है और बैनुल अक्रवामी सतह पर भी सुकून व सलामती की ज़मानत है और ख़ाहिश भी रखते हैं कि हर सतह पुरअम्र कायम हो लेकिन केवल अमन की ख़ाहिश पैदा नहीं कर देती क्योंकि यहां भी अमन की ख़ाहिश खुदगारज़ी के लिए हुए होती है और यही हम दुनिया में देखते हैं।"

"दुनिया में यही नज़ारे हमें नज़र आते हैं आम लोगों में भी और लीडरों में भी। सियासतदानों की आपस की लड़ाईयां और इक़तेदार में आने पर एक दूसरे पर जुलम जो अपने ही मुल्कों में हम देख रहे हैं, एक दूसरे पर जो कर रहे हैं वह इसी सोच का नतीजा है। अतः अगर केवल अमन की ख़ाहिश है तो वह फ़साद का ज़रीया हो सकती है क्योंकि इस में खुदगारज़ी शामिल है क्योंकि जो लोग अमन चाहते हैं वे इस रंग में अमन के मुतमन्नी हैं कि केवल उन्हें और उनके करीबियों को या उनकी क्रौम को अमन हासिल रहे। अन्यथा दूसरों के लिए और दुश्मनों के लिए वह यही चाहते हैं कि उनके अमन को मिटा दें। अतः अगर इस उसूल को रायज कर दिया जाए कि अपने लिए और मयार और दूसरे के लिए और तो दुनिया में जो भी अमन कायम होगा वह चंद लोगों का अमन होगा, सारी दुनिया का अमन नहीं होगा .. जो सारी दुनिया का अमन न हो वह हक़ीक़ी अमन नहीं कहला सकता। हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो ज़ाती, ख़ानदानी, नसली, क्रौमी, मुल्की तर्ज़ीहात से बाला होकर कायम करने का प्रयास किया जाए, एक मर्कज़ी केन्द्रीय बिन्दु के हुसूल के लिए किया जाए और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और इस का फ़हम और समझ पैदा करले कि मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है, जो मेरे घर और मुल्क के लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त मुल्कों के लिए अमन चाहती है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम अमन का नुक्ता-ए-केन्द्रीय बिन्दु, यह एहसास है कि एक बाला हस्ती मुझे देख रही है जिस के लिए मैंने अपने क्रौल और कथन को एक करना है। हमेशा उस उसूल पर चलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए इस सुनहरी उसूल को सामने रखना होगा कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो।

अतः अगर अपनी दुनिया व आकेबत संवारनी है, अमन और सलामती से रहना है तो हमें अल्लाह तआला के इस कलाम को जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि यह **يُؤْتِي بِهَالَهُ مِنَ التَّبَعِ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ** उस रोशन किताब की हिदायत को हमेशा अपने सामने रखें। उस रोशन किताब की हिदायत को पढ़ना और सामने रखना चाहिए तभी **سُبُلَ السَّلَامِ** पर चलने वाले होंगे। सलामती के रास्ते पर चलने वाले होंगे। इस किताब का कोई हुक्म भी ऐसा नहीं जो इन्सानी अमन बर्बाद करने वाला है। अतः यह पैग़ाम है जो अपनों और ग़ैरों को देना हमारा काम है आज और यही दुनिया के अमन की ज़मानत है।

आज यह काम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के सपुर्द किया गया है। अगर हमने भी घरेलू सतह से लेकर बैनुल अक्रवामी सतह तक उसके मुताबिक अपना किरदार अदा न किया तो हमारे अमन वसलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है, न ही हमारी नसलों की अमन वसलामती में रहने की कोई ज़मानत है और न ही दुनिया के अमन वसलामती की कोई ज़मानत है। अल्लाह तआला हमें दुनिया को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाने का ज़रीया बनाए। अल्लाह तआला अहसन रंग में हमें यह फ़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।"

(इखतेतामी खिताब जलसा सालाना जर्मनी सितंबर 2022 ई. के अवसर पर)

## पृष्ठ 18 का शेष

एक ऐसे तनावर दरख्त की सूरत में नमूदार हुआ जिसकी सरसब्ज़ शाखों में हज़ारों रुहानी तयूर ने ख़ौफ़ से अमन पाया और लाखों मोमिन इस शजर साया-दार तले तसकीन जां और राहत-ए-जावेदाँ हासिल करते रहे।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल जब ख़िलाफ़त के मन्सब पर आप फ़ायज़ हुए तो जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:

"आख़िर में एक बात और कहना चाहता हूँ और यह वसीयत करता हूँ कि तुम्हारा संबंध अल्लाह के साथ हो। कुरआन तुम्हारा दस्तूरल अमल हो। बाहम कोई तनाज़ा न हो क्योंकि तनाज़ा फ़ैज़ान-ए-इलाही को रोकता है। मूसा अलैहिस्सलाम की क्रौम जंगल में इसी नुक्स की वजह से हलाक हुई आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्रौम ने एहतियात की और वह सफल हो गए। अब तीसरी मर्तबा तुम्हारी बारी आई है। इसलिए चाहिए कि तुम्हारी हालत अपने इमाम के हाथ में ऐसी हो जैसे मय्यत रास्साल के हाथ में होती है। तुम्हारे इरादे और ख़्वाहिशें मुर्दा हों और तुम अपने आपको इमाम के साथ ऐसा वाबस्ता करो जैसे गाड़ियां इंजन के साथ और फिर हर-रोज़ देखो कि जुल्मत से निकलते हो या नहीं।

अस्तग़फ़ार कसरत से करो और दुआओं में लगे रहो। वहदत को हाथ से न जाने दो। दूसरे के साथ नेकी, खुश मुआमलगी में कोताही न करो। तेराह सौ बरस बाद यह ज़माना मिला है और आइन्दा यह ज़माना क्रियामत तक नहीं आ सकता। अतः इस नेअमत का शुक्र करो। क्योंकि शुक्र करने पर इज़दियाद-ए-नेअमत होता है। (ख़ुतबात-नूर, पृष्ठ : 131)

प्रिय श्रोताओ! हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो का सबसे बड़ा यही कारनामा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त के निज़ाम को मज़बूती से कायम कर दिया और ख़िलाफ़त की ज़रूरत-ओ-अहमीयत को जमाअत के सामने बार-बार पेश कर के इस अक़ीदा को जमाअत में रासिख़ कर दिया कि ख़लीफ़ा खुदा ही बनाता है। इन्सानी मन्सूबों से कोई व्यक्ति ख़लीफ़ा नहीं बन सकता। ख़िलाफ़त के इलाही निज़ाम को मिटाने के लिए मुनकरीन-ए-ख़िलाफ़त ने जो फ़िन्ना-ओ-फ़साद बरपा किया और लोगों को वरग़ालाने और अपना हम-ख़याल बनाने की जो कार्यवाहियां की गई आपने उनका तार-ओ-पोद बिखेर कर रख दिया।

आपके दौर ख़िलाफ़त में इशाअत इस्लाम के जो अज़ीमुशान कारनामे हुए हैं जो कि जमाअत अहमदिया की रुहानी और दुनियावी तरक्की का पेश-ख़ेमा बने हैं जिस में मदर्रस्सा तालीमुल इस्लाम बोर्डिंग हाऊस की शानदार इमारतें तैयार हुईं, मस्जिद नूर की इमारत बनाई गई, नूर हस्पताल बना, मदर्रस्सा अहमदिया कायम हुआ, अखबार नूर और अल्फ़ज़ल जारी हुआ, वाएज़ीन सिलसिला ने भारत के विभिन्न हिस्सों में दौरा जात किए, लंडन में इस्लामी मिशन का क्रयाम हुआ और इस सिलसिला में ख़्वाजा कमा-लुद्दीन साहिब और चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब लंडन पहुंचे। ऐसे बहुत से फ़लाह-ओ-बहबूद के काम आपके दौर ख़िलाफ़त में अमल में आए।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी ख़िलाफ़त के सारे दौर में जहां कुरआन व हदीस नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरस-ओ-तदरीस में मुनहमिक और कोशां रहे वहां ख़िलाफ़त के मसला को बार-बार तकरीरों और ख़ुत्बात में वाज़ेह किया यहां तक कि जमाअत की ग़ालिब अक्सरियत ने इस हबलुल्लाह को मज़बूती से पकड़ लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो 13 मार्च 1914 ई. बरोज़ जुमा दाई अजल को लब्बैक कहा और अपने मौलाए हक़ीक़ी से जा मिले और बहिश्ती मक़बरा कादियान में अपने महबूब आक्रा के पहलू में दफ़न हुए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। (तरीखे अहमदीयत, भाग3, पृष्ठ 511 जदीद ऐडीशन)

اے خدا بر تربت او بارش رحمت ببار  
داخلش کن از کمال فضل در بیت النعم



## जीवनी सहाबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मौलाना नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो (फ़िरोज़ अहमद नईम, मुबल्लिग़ सिल्लिसला व ज़िलई अमीर जमाअत अहमदिया दिल्ली)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمَا بَدَلُوا تَبْدِيلًا (अल्हज़ाब : 24)

अनुवाद मोमिनों में ऐसे मर्द हैं, जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से अहूद किया था उसे सच्चा कर दिखाया। अतः उनमें से वह भी हैं जिन्होंने अपनी मन्नत को पूरा कर दिया और उनमें से वह भी हैं जो अभी इंतज़ार कर रहे हैं। और उन्होंने हरगिज़ अपने तर्ज़-ए-अमल में कोई तबदीली नहीं की।

काबिल-ए-एहताराम सदर जलसा-ओ-मुअज़्ज़िज़ हाज़ेरीन-ओ-सामईन जलसा, अस्सलामो आलेकुम वरहमतुलाहे वबरकातहू

खाकसार की तकरीर का मौजूब सिरत हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो है।

प्रिय श्रोताओ हर दौर में जब जब अल्लाह अपने प्यारों को इस ज़मीन पर भेजता है तो उनका समर्थ और सहायता के लिए आसमानी और ज़मीनी निशान भी ज़ाहिर करता है और ऐसे साथी अता करता है जो ठीक उनके प्रतिरूप हुआ करते हैं ऐसे ही अल्लाह तआला ने प्रथम दौर में सरवर-ए-कायनात सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम को जहां सिद्दीक अकबर अता किया वहीं अंतिम दौर में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नूरुद्दीन अता किया।

विनीत बिल्लतर्तीब दोनों नबुव्वत के आज्ञाकारी के सिरत के चंद्र पहलूओं पर रोशनी डालने का प्रयास करेगा। और अल्लाह की तौफ़ीक़ अंबिया अलैहिस्सलाम के बाद इन्सानों में सबसे अफ़ज़ल शख्सियत हज़रत सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं, जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना खलील बनाना चाहते थे, जिनको कुरआन-ए-करीम में अल्लाह ने सच्चाई की ताईद करने वाला और हक़-ओ-सच्च का पैकर और पतों करार दिया, जिन्होंने ज़माना-ए-जाहिलियत में भी शराब-और-जुआ और हमा जहती मुनकिरात से इज-तेनाब किया, जिनके बारे में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं उनके मुक़ाम-ओ-मर्तबा तक कभी नहीं पहुंच सकता, वह जिन्हे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुस्लमानों की इमामत तफ़वीज़ की, जिन्हें जन्नत के सभी दरवाज़ों से दाख़िल होने की दावत देंगे, वह जिस ने इस्लाम और पैग़ंबर इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस क़दर मदद की कि खुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनके एहसानात का बदला खुद अल्लाह तआला चुकाएंगे।

प्रिय पाठकों! आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरबारी शायर हस्सान बिन साबित अंसारी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ कहते हैं।

"जब तुम्हारे दिल में कभी कोई दर्द आमेज़ याद तुम्हारे किसी अच्छे भाई के मुताल्लिक़ पैदा हो तो उस वक़्त अपने भाई अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी याद कर लिया करो। उसकी इन खूबियों की वजह से जो याद रखने के काबिल हैं। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद सब लोगों में से ज़्यादा मुत्तक़ी और सबसे ज़्यादा मुंसिफ़ मिज़ाज था और सबसे ज़्यादा पूरा करने वाला था अपनी इन ज़िम्मेदारियों को जो उसने उठाए। हाँ अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वही तो है जो गार-ए-सौर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ दूसरा व्यक्ति था जिसने अपने आपको आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुसाण में बिल्कुल महव कर रखा था और वह जिस काम में भी हाथ डालता था उसे ख़ूबसूरत बना देता था और वे इन सब लोगों में से पहला था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए।"

प्रिय पाठकों यह सिद्दीक़-ए-अकबर इस्लाम का वह बहादुर मर्द था जिसके ज़रीया से अल्लाह तआला ने दुनिया के लिए इशक़ रसूल, इताअत-ए-रसूल, हिलम, क्षमायाचना, जवाँमरदी, ग़ैरत-ए-इस्लाम, ग़रीबपरवरी, एहसान हुस्र-ए-सलूक की अज़ीम मिसालें क़ायम करनी थीं।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने अरबी क़सीदा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मदह में फ़रमाते हैं जिसका उर्दू अनुवाद

पेश-ए-ख़िदमत है।

"वह अल्लाह के नबी के पास सिद्क़-ए-दिल से आए तो रोशन कर दिए गए और कुदूरत पैदा करने वाली तारीकी का कोई असर बाक़ी न रहा, वह फ़रमां-बर्दारी करते हुए शौक़ के परों के साथ उड़े और नबी श्रीमान के लिए दस्त-ए-बाज़ू बन गए। हम और तुम आज बाग़ों में मज़े करते हैं हालाँकि वह क़तल के मैदान में रोज़ महशर की तरह हाज़िर हुए थे और उन्होंने खुलूस-ए-नीयत से अल्लाह के लिए वतन की मुहब्बत छोड़ दी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक आशिक़-ए-शैदा की तरह आए।

(सिर्रुल ख़िलाफ़ा, पृष्ठ 182)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अब्दुल्लाह था और उसमान बिन आमिर उनके पिता का नाम था और कुनियत अबू बकर थी और आपका उपनाम अतीक़ और सिद्दीक़ था। आपकी विलादत 573 में हुई आपकी माता का नाम सलमा बिनत सहर बिन आमिर था और उनकी कुनियत अंतुल ख़ैर थी।

इस्लाम क़बूल करने से पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के पेशा और मुक़ाम के बारे में तारीख़ तिबरी में लिखा है कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी क़ौम में मक़बूल और महबूब थे, नरम स्वभाव के व्यक्ति, उसके हसब-ओ-नसब और उसकी अच्छाई बुराई को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे, आप तिजारत करने वाले व्यक्ति थे, अच्छे अख़लाक़ नेकियों के मालिक थे आपकी क़ौम के लोग इन ज़ायद बातों की वजह से आपके पास आते और आपसे मुहब्बत रखते थे उनकी वजह से, आपके तजुर्बात की वजह से और आपकी अच्छी मजिलसों की वजह से। (तिबरी, भाग 1, पृष्ठ 540)

प्रिय श्रोताओ आप रज़ियल्लाहु अन्हो का क़बूल-ए-इस्लाम के मुताल्लिक़ बहुत सी घटनाएँ रिवायात में दर्ज हैं कुछ एक पेश-ए-ख़िदमत हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का क़बूल इस्लाम का वाक़िया वर्णन करते हुए एक जगह इस तरह वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब दावा-ए-नुबुव्वत फ़रमाया तो उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहीं बाहर गए हुए थे वापस तशरीफ़ लाए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की एक लौंडी ने आपसे कहा कि आपका दोस्त तो नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे खुदा की शरण चाहते हैं) पागल हो गया है और वह अजीब अजीब बातें करता है कहता है कि मुझ पर आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी वक़्त उठे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मकान पर पहुंच कर आपके दरवाज़े पर दस्तक दी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आप तशरीह न करें और मुझे केवल इतना बताएं कि आपने कहा कि खुदा के फ़रिश्ते मुझ पर नाज़िल होते हैं और मुझसे बातें करते हैं? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ख़्याल से कि ऐसा न हो कि उनको ठोकर लग जाए तशरीह करनी चाही। परंतु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आप तशरीह न करें मुझे केवल इतना बताएं कि आपने यह बात कही है। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तमहीदी तौर पर बात करनी चाही। परंतु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि नहीं नहीं आप केवल ये बताएं कि यह बात दरुस्त है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दरुस्त है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं आप पर ईमान लाता हूँ और फिर उन्होंने कहा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मैंने आप को दलायल वर्णन करने से केवल इस लिए रोका था कि मैं चाहता था कि मेरा ईमान मुशाहिदा पर हो दलायल पर इस की बुनियाद न हो क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सादिक़ और रास्तबाज़ तस्लीम करने के बाद किसी दलील की ज़रूरत ही नहीं रहती गरज़ जिस बात को मक्का वालों ने छुपाया उस को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अमल से वाज़िह कर दिखाया।

तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 2, पृष्ठ : 251)

और अज़ ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैंने जिसे भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसे कुछ न कुछ तरदुद ज़रूर हुआ सिवाए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के कि जब मैंने उनके सामने इस्लाम पेश किया तो उन्होंने ज़रा बराबर भी तरदुद पेश नहीं किया। इब्ने हशशाम, भाग 1, पृष्ठ : 267)

प्रिय श्रोताओ! क़बूल इस्लाम के बाद आप पर मज़ालिम का दौर शुरू हुआ और तरह तरह से जुलम-ओ-सितम का निशाना बनाया जाने लगा। राह-ए-रास्त पर चलने वालों के लिए इबतेला और आजमाईश की सुन्नत जारी है। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के अंदर भी यह सुन्नत-ए-इलाही क़ायम रही और इस क़दर अब तलाव मेहन से दो-चार हुए कि देव-हैकल पहाड़ भी जवाब दे जाएं लेकिन इन नफूस कुदसिया ने अपनी जान व माल को अल्लाह की राह में कुर्बान कर दिए। कुफ़र-ए-मक्का ने इस्लाम क़बूल करने वालों पर तरह तरह के मज़ालिम किए, न केवल कमज़ोर और गुलाम मुस्लमान ही उनके जुलम-ओ-तशदुद का निशाना बने बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी मुशरेकीन मक्का के मज़ालिम से महफूज़ नहीं रहे। तारीख़ इस बात पर शाहिद है कि उन्हें भी तरह तरह के जुलम-ओ-सितम का निशाना बनाया गया एक रिवायत में आता है कि एक दफ़ा मुशरेकीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि क्या तुम हमारे माबूदों के बारे में ये बात नहीं कहते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। इस पर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट जमा हो गए और उस वक़्त किसी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि अपने दोस्त की ख़बर लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो निकले और मस्जिद हराम पहुंचे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस हाल में पाया कि लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गर्द इकट्ठे हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तुम लोगों का बुरा हो, **تَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ** (मोमिन : 29) क्या तुम महज़ इसलिए एक व्यक्ति को क़तल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुले खुले निशाना लेकर आया है। इस पर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ दिया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ लपके और उनको मारने लगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी हज़रत अस्म रज़ियल्लाहु अन्हो कहती हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे पास इस हालत में आए कि आप अपने बालों को हाथ लगाते तो वह आपके हाथ में आ जाते और आप कहते जाते थे कि **تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लाम क़बूल किया तो दीवाना-वार तब्लीग-ए-इस्लाम शुरू कर दी। इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अफ़फ़ान, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अब्दुल्लाह, साद रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अबी वक्कास, आबदुर्रहमन और रज़ियल्लाहु अन्हो बिन औफ़ और बहुत से दीगर जलीलुल क़दर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लाम क़बूल किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ाती नेकी और तक्वा हर मिलने वाले को ज़रूर प्रभावित करता था। ज़िंदगी आँहज़र सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और ग़रीब मुस्लमानों के लिए वक्फ़ हो चुकी थी। बहुत से गुलामों और कनीज़ों की ज़िंदगियां, जिन पर उनके मालिक शदीद जुलम तोड़ा करते थे, आप रज़ियल्लाहु अन्हो के तुफ़ैल आज़ादी की नेअमत से हम-किनार हुए। इन गुलामों में हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो और आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो बिन फ़हमीरा भी शामिल हैं। ख़ुदा से लो लगाने के लिए आप

रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने घर के सेहन में एक छोटी सी मस्जिद बना रखी थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की इबादत का मंज़र ऐसा दिलकश था कि लोग खासतौर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को देखने आते और प्रभावित हुए बग़ैर न रहते और ख़ुदा तआला के इरशाद के मुताबिक़ कि **قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** अपनी ज़िंदगी का एक एक लम्हा आपने कुर्बान कर दिया।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए माल ख़र्च करने और सख़ावत में सारे सहाबा किराम पर विशेषता रखते थे। तिरमिज़ी की हदीस है कि एक-बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें अल्लाह की राह में सदक़ात करने का हुक्म फ़रमाया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा आज का दिन है कि मैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से सबक़त ले जाऊंगा। इसलिए आपने अपने घर का आधा माल उठा कर ले आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि **الْبَيْتُ لَاهْلِكَ** तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हे रसूलुल्लाह आधा माल। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो एक पोटली लेकर रसूलुल्लाह के पास हाज़िर हुए आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि हे अबू बकर अपने परिवार वालों के लिए क्या छोड़ आए हो इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ कर आया हूँ।

(मिशकात, पृष्ठ : 554)

एक और रिवायत में आता है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जगह फ़रमाते हैं कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के माल ने जितना मुझे फ़ायदा पहुंचाया है उतना किसी और के माल ने नहीं। आप फ़रमाते हैं : मैंने दुनिया में समस्त मोहसिनो के एहसानात का बदला उतार दिया है जबकि सिद्दीक़ अकबर के एहसानात का बदला अल्लाह तआला अता फ़रमाएँगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सिद्दीक़ का ख़िताब दिया है तो अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो में क्या-क्या कमालात थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ज़ीलत उस चीज़ की वजह से है जो उस के दिल के अंदर है और अगर ग़ौर से देखा जाए तो हकीक़त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो सिद्क़ दिखाया उसकी नज़ीर मिलनी मुश्किल है और सच्च तो यह है कि हर ज़माना में जो व्यक्ति सिद्दीक़ के कमालात हासिल करने की ख़ाहिश करे उसके लिए यह ज़रूरी है कि अबू बकर की ख़सलत और फ़ि़तत को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक संभव हो मुजाहिदा करे और फिर जहां तक दुआ से काम ले। जब तक अबू बकर की फ़ि़तत का साया अपने ऊपर डाल नहीं लेता और उसी रंग में रंगीन नहीं हो जाता सिद्दीक़ी कमालात हासिल नहीं सकते।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो का मिज़ाज सुन्नत रसूलुल्लाह के साँचे में ढला हुआ था, उनका हर अमल इत्तिबा-ओ-इताअत रसूल का मज़हर था, एक रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि तुम में से आज किस का रोज़ा है, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मेरा। फिर फ़रमाया तुम में से आज किस ने जनाज़ा में शिरकत की? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ की मैंने। फिर आपने फ़रमाया कि तुम में से आज किस ने मिस्कीन को खाना खिलाया? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैंने। आपने फिर फ़रमाया: तुम में से आज किस ने मरीज़ की इयादत की? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैंने। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति में ये सारी

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।”

(ख़ुल्बा जुअः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

## हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra, Dist: Puruliya. West Bengal

खसलतें जमा हो जाएं, वह यकीनन जन्नत में दाखिल होगा। (मुस्लिम : 1028)

प्रिय श्रोताओ! हिज़्रत मदीना के मुबारक सफ़र में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिस वफ़ादारी और जानिसारी का नमूना दिखाया इसकी मिसाल नहीं मिलती। अपनी दो ऊंटनियां जो पहले से सफ़र हिज़्रत के लिए तैयार कर रखी थीं। उनमें से एक ऊंटनी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बिना कीमत के पेश कर दी परंतु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे कीमतन क़बूल फ़रमाई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पाँच हज़ार दिरहम भी बतौर ज़ाद-ए-राह साथ ले गए। फिर ग़ार-ए-सौर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुसाहिबत की तौफ़ीक़ पाई जिसका वर्णन कुरआन शरीफ़ में हमेशा के लिए महफूज़ हो गया। फ़रमाया : **ثَانِيًا: اَتَيْنَا فِي الْعَارِ اُدْيُقُولُ لِمَا حَبِه لَا تَحْزُنَنَّ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا** (अल् तौबा : 40) अर्थात दो में से दूसरा जब वह दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कहता था कि ग़म न करो। अल्लाह हमारे साथ है।

सफ़र हिज़्रत में ताजदार अरब का यह बेकस सिपाही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त की खातिर कभी आगे आता तो कभी पीछे कभी दाएं तो कभी बाएं और इस तरह अपने आक्रा को बहिफ़ाज़त पहुंचाया।

(अल् सीरतुल हल्बिया, पृष्ठ 45 प्रकाशन बेरूत)

इसी सफ़र हिज़्रत का वाक़िया है जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक मुशरिक सुराक़ा को पीछा करते आते देखा तो रो पड़े। रसूलुल्लाह ने वजह पूछी तो अर्ज़ किया। "अपनी जान के ख़ौफ़ से नहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से रोता हूँ कि मेरे आका सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई कष्ट न पहुंचे।"

(मसूद अहमद, भाग 1, पृष्ठ 2 प्रकाशन मिस्र)

प्रिय श्रोताओ! ग़ार-ए-सौर में जब दाखिल हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त ग़ार की सफ़ाई की सारे सुराख़ बंद किए कि कोई साँप या बिच्छू न हो एक सुराख़ रह गया तो इस पर अपना पांव रख दिया हज़रत अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की रान पर सिर मुबारक रखकर इस्तिराहत फ़रमाने लगे सुराख़ में से एक साँप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पांव पर डस लिया। लेकिन इस मुहिब के पैकर ने अपनी मुहब्बत पर इस तकलीफ़ को हावी नहीं होने दिया और तकलीफ़ और मुहब्बत के संगम की वजह से आपकी आँखों में बे-इस्लियार आँसू टपक पड़े। कैसा इशक़-ए-रसूल था। रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत ही थी कि जिस झंडे की गिरह को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाँधा था हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो उस गिरह को खोलने के लिए तैयार नहीं हुए।

प्रिय श्रोताओ! निसन्देह दुनिया में बहुत से आशिक़ गुजरे होंगे, ऐसे भी होंगे जिन्होंने ने महबूब के लिए ताज शाही को ठुकराया और ऐसे भी होंगे जिन्होंने ने ख़ुशनुदी महबूब के लिए वजह महबूब में बिस्तर जमा दिया और ऐसे भी होंगे कि पल-भर में नज़र अटकी और अगले ही लम्हे जान सूली पर लटकती हुई नज़र आई परंतु पूरे शऊर भर पूरा यकीन साबित क़दमी, इस्तक़लाल और कामिल यकसूई से अहद-ए-वफ़ा निभाना केवल सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो का विशेष विशेषता है जिसके आगे दुनिया की हर दास्तान वफ़ा मांद पड़ जाती है और उन्होंने इशक़ व महबत के इज़हार के ऐसे अंदाज़ रक़म फ़रमाए कि क्रियामत तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो की पैरवी करतार हैगा।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इशक़-ओ-मुहब्बत को वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि मक्का से मदीना हिज़्रत के अवसर पर भी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के अवसर पर भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आशिक़ाना था। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सूरत अल् नसर नाज़िल हुई जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को संबोधित करके फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बंदे को अपनी रिफ़ाक़त और दुनियावी तरक्की में से एक की इजाज़त दी है और मैंने ख़ुदा तआला की रिफ़ाक़त को तर्ज़ीह दी। समस्त सहाबा इस पर ख़ुश हुए लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्होकी चीखें निकल गईं और आप

रज़ियल्लाहु अन्हो बेताब हो कर रो पड़े और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमारे माँ बाप बीवी बच्चे सब कुर्बान हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हम हर चीज़ कुर्बान करने के लिए तैयार हैं। गोया जिस तरह किसी अज़ीज़ के बीमार होने पर बकरा ज़बह किया जाता है इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी और अपने सब अज़ीज़ों की कुर्बानी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए पेश की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो समेत समस्त सहाबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रोने और उस तरह बात करने पर हैरान थे तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे इतने महबूब हैं कि अगर ख़ुदा तआला के सिवा किसी को ख़लील बनाना जायज़ होता तो मैं आपको ख़लील बनाता परंतु अब भी यह मेरे दोस्त हैं। फिर फ़रमाया कि मैं हुक्म देता हूँ कि आज से मस्जिद में खुलने वाली सब लोगों की खिड़कियाँ बंद कर दी जाएँ सिवाए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की खिड़की के। इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अपने साथ इशक़ की दाद दी क्योंकि यह इशक़ कामिल था जिसने उन्हें बता दिया कि इस फ़तह-ओ-नुसरत की ख़बर के पीछे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर है और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी और अपने अज़ीज़ों की जान का फ़िद्या पेश कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि हदीसों में आता है कि एक मर्तबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की किसी बात पर तकरार हो गई और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद झगड़ा बढ़ने के पेश-ए-नज़र वहां से जाने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कुरता पकड़ लिया कि मेरी बात का जवाब दो इस वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कुरता फट गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में जाकर अपनी ग़लती तस्लीम की जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस वक़्त सारी दुनिया मेरा इंकार करती थी उस वक़्त अबू बकर मुझ पर ईमान लाया और हर रंग में मेरी मदद की। इसी अस्मा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी पहुंचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाराज़गी देखकर अपनी ग़लती तस्लीम करने लगे। यही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का इशक़ था कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तकलीफ़ को बर्दाश्त नहीं कर सके।

प्रिय श्रोताओ! अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ समस्त ग़ज़वात में शरीक रहे। कोई ग़ज़वा आप से न छोड़ा और उहद के रोज़ जब सब लोग भाग खड़े हुए तो आप रसूलुल्लाह के साथ डटे रहे और तबूक के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना अज़ीम झंडा आपको अता किया। आगाज़-ए-रिसालत से लेकर वफ़ात नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिसाराना रिफ़ाक़त की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इन खिदमात और कुर्बानियों का इतना असर था कि फ़रमाते थे कि जान-ओ-माल के लिहाज़ से मुझ पर अबू बकर से ज़्यादा किसी का एहसान नहीं है।

प्रिय श्रोताओ! जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई तो लोग मुज़तरिब व परेशान हो कर होशो हवास खो बैठे, लेकिन अल्लाह तआला ने अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया से सबात अता फ़रमाया और इस अवसर पर आपने अज़ीम मौक़िफ़ इख़तेयार फ़रमाया और मुंतशिर उम्मत को जमा कर दिया जैसे आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुदाई आवाज़ बन कर आए और ज़ोर से ऐलान किया **وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ** (इमरान : 145) अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले समस्त रसूल फ़ौत हो चुके हैं।

यह रुहानी आवाज़ सुनते ही एक के बाद एक सारी उम्मत के दिल पर ऐसी तसकीन नाज़िल हुई कि उन के दिल ठंडे हो गए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इस आयत को सुनकर खड़े न रह सके और ग़म के मारे निढाल हो कर बैठ गए और रोने लगे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद बिखरी हुई



उम्मत के शीराज़ा-बंदी का सहारा भी हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो के सिर पर ही है, आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ासिद को दुरुस्त किया, मुनहदिम को तामीर किया बिखरे हुआ को जोड़ा मुनहरिफ़ को सीधा किया। (तारीख़ ए-खुलफ़ा, पृष्ठ 51 से 52)

आपके दौर ख़िलाफ़त में ही इस्लाम अरब की बड़ी बड़ी हुकूमतों के वाली बना दिए गए फ़तूहात शाम हो, फ़तूहात ईरान हो या फिर इर्तिदाद की उठ रही सदाओं का ख़ातमा हो। कुरआन-ए-करीम को जमा करने का अज़ीम कारनामा हो यए सब काम आप ही के दौर-ए-ख़िलाफ़तम मे हुए।

प्रिय श्रोताओ! यह मुहब्बत का पैकर अपना सब कुछ अल्लाह और उस के रसूल पर कुर्बान करने के बाद अपने रब को राज़ी करता हुआ ख़िलाफ़त के सवा दो साल बाद अपने मौला से जा मिला। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

अब ख़ाकसार अपनी तक़रीर का दूसरा हिस्सा आपके सामने पेश करेगा।

प्रिय श्रोताओ! हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के ऐन मुताबिक़ इस ज़माना में हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद और महूदी मौऊद बन कर आए और ऐन कुरआनी भविष्यवाणी के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने जैसे दौरे अव्वल में अपने समर्थ और सहायता के नज़ारे दिखाए थे वैसे ही दौरे आखिर में भी अपने निशान ज़ाहिर किए जैसे प्रथम दौर में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से सहायता मांगी और अल्लाह तआला ने इस दुआ को सुना और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा साथी अता किया ऐन ऐसे ही हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी दुआ की और अल्लाह के हुज़ूर फ़र्याद रखी कि हे अल्लाह कोई साथी अता करे। अल्लाह ने इस निंदा को सुना और हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे महान साथी प्रदान किया।

प्रिय श्रोताओ! कुदरत-ए-सानिया के मज़हर-ए-अव्वल, आसमान-ए-अहमदियत के रोशन सितारे, कमालात-ए-रुहानियत के जामा,सिफ़ात नूरानिया के ख़ज़ाना, कुरआनी मआरिफ़ के बहते हुए स्रोत, शम्मा महदियत के परवाने, सिद्दीक़ी जमाल के मज़हर, फ़ारूक़ी जलाल के आईना हाजीउल हरमेन सय्यदना हज़रत हाफ़िज़ हकीम मौलाना नूरुद्दीन भैरवी प्रथम ख़लीफ़तुल मसीह रज़ियल्लाहु अन्हो 1834 में भेरा में पैदा हुए। आपके पिता का नाम हज़रत हाफ़िज़ गुलाम रसूल और माता का नाम नूर बख़्त था। आपका सिलसिला नसब बत्तीस वासतों के साथ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो तक और माता माजिदा का सिलसिला नसब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो तक पहुंचता है। इस लिहाज़ से आप फ़ारूक़ी भी हैं और उलूवि भी।

कुरआन-ए-करीम आपने माँ की गोद में पढ़ा। शुरू से ग़ज़ब के हाफ़िज़ थे तैराकी के शौक़ीन थे। बचपन से ही किताबों के बहुत शौक़ीन थे। हुसूल-ए-इल्म के लिए लाहौर, रामपूर, लखनऊ दिल्ली और भोपाल इत्यादि में मुक़ीम रहे। हुसूल-ए-इल्म के लिए मक्का मदीना भी तशरीफ़ ले गए, इलम हासिल करने के बाद वतन वापस लौटे और भेरा में कुरआन-ए-मजीद, अहादीस का दरस व तदरीस का सिलसिला जारी कर दिया और साथ ही चिकिस्ता शुरू कर दी। दूर दराज़ से लोग आपकी ख़िदमत में ईलाज के लिए आते थे।

1885 में हज़रत मौलवी-साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इश्तिहार पहली बार पढ़ा उसका इतना गहरा असर हुआ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़यारत के लिए कादियान पहुंच गए, मुलाक़ात के बाद हुज़ूर के जानिसार खादिमों में शामिल हो गए 1889 ई. में लुधियाना में पहली बैअत हुई तो आपने सबसे पहले नंबर पर बैअत करने का गर्व हासिल किया। 1890 ई. में जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो फिर बिलातामुल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह हुज़ूर के दावे पर ईमान ले आए।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब आईना कमालात इस्लाम में फ़रमाते हैं: मैं रात-दिन ख़ुदा तआला के हुज़ूर चिल्लाता और अर्ज़ करता था कि हे मेरे रब मेरा कौन नासिर-ओ-मददगार है मैं तन्हा हूँ और जब दुआ का हाथ पै दर पै उठा और फ़िज़ाए आसमानी मेरी दुआओं से भर गई तो अल्लाह तआला ने मेरी आजिज़ी और दुआ को शरफ़-ए-क़बूलियत बरखा और रब इल्मियान की रहमत ने जोश मारा और अल्लाह तआला ने मुझे एक मुखलिस सिद्दीक़ अता फ़रमाया उसका नाम उस की नूरानी सिफ़ात की

तरह नूरुद्दीन है जब वह मेरे पास आकर मुझसे मिला तो मैंने उसे अपने रब की आयतों में से एक आयत पाया और मुझे यकीन हो गया कि यह मेरी इस दुआ का नतीजा है। जो मैं हमेशा किया करता था और मेरी फ़िरासत ने मुझे बताया कि वह अल्लाह तआला के मुंतख़ब बंदों में से है और.. वह मेरी मुहब्बत में किस्म किस्म की मलामतें और बद ज़बानियां और वतन मालूफ़ और दोस्तों से मुफ़ारिक़त इख़तेयार करता है और मेरा कलाम सुनने के लिए उस पर वतन की जुदाई आसान है और मेरे मुक़ाम की मुहब्बत के लिए अपने असली वतन की याद भुला देता है और प्रत्येक अमर में मेरी इस तरह पैरवी करता है जैसे नब्ज़ की हरकत तनफ़ुस की हरकत की पैरवी करती है। (आईना कमालात-ए-इस्लाम, रोहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 581 से 586)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल् वसीयत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कुदरत-ए-सानिया के ज़हूर की मिसाल में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त पेश की है और यह अजीब बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद भी अल्लाह तआला ने जिस व्यक्ति के हाथ पर सहाबा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जमा किया वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो से बहुत सी बातों में मुशाबहत रखता था। उदाहरणतः

(1) हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो मर्दों में से पहले व्यक्ति थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा पर बग़ैर किसी तरहदु और संदेह के ईमान लाए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: **قلت يا أيها الناس اني رسول الله اليكم جميعاً فقلتم كذبت وقال ابو بكر صدقت** (बुख़ारी, किताब अल् तफ़सीर) अर्थात मैंने तुम लोगों से कहा कि मैं तुम सबकी तरफ़ रसूल हूँ तो तुमने कहा कि ये झूठ है परंतु अबू बकर ने तसदीक़ की और मैंने जिस किसी को भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसने उसके मानने में तरदुद और संदेह ज़ाहिर किया लेकिन अबू बकर वह व्यक्ति था जिसने बग़ैर किसी तरहदु और बग़ैर किसी ताख़ीर के उसे क़बूल कर लिया।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अल्हाज अलहकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो से मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं उन्होंने ऐसे वक़्त में बिला तरदुद मुझे क़बूल किया कि जब हर तरफ़ से तकफ़ीर की सदाएँ बुलंद होने को थीं और बहुतेरों ने बावजूद बैअत के अहूद बैअत फ़सख़ कर दिया था और बहुतेरे सुस्त और मुतज़बज़ब हो गए थे तब सबसे पहले मौलवी-साहब ममदूह का ही ख़त इस आजिज़ के इस दावा की तसदीक़ में कि मैं ही मसीह मौऊद हूँ कादियान में मेरे पास पहुंचा जिस में ये फ़िक़्रात दर्ज थे **أَمَّا وَصَدَقْنَا دَرَجَ فَكُتِبْنَا مَعَ الشَّهِيدِينَ** (इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 521)

इताअत और फ़िदाईत का यह आलम था कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल, मौलाना नूरुद्दीन साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में लिखा कि:

मौलाना। मुर्शिदना। इमामना

मेरी दुआ यह है कि हर वक़्त हुज़ूर की जनाब में हाज़िर रहूँ और इमाम ज़मान से, जिस मतलब के वास्ते वह मुजद्दिद किया गया है, वह मुतालिब हासिल करूँ। अगर इजाज़त हो तो मैं नौकरी से अस्तीफ़ा दे दूँ और दिन रात ख़िदमत आली में पड़ा रहूँ या अगर हुक्म हो तो इस ताल्लुक़ को छोड़कर दुनिया में फिरूँ और लोगों को दीन हक़ की तरफ़ बुलाऊँ और इसी राह में जान दूँ मैं आपकी राह में कुर्बान हूँ मेरा जो कुछ है, मेरा नहीं, आपका है। हज़रत पीर-ओ-मुर्शिद मैं कमाल रास्ती से अर्ज़ करता हूँ कि मेरा सारा माल-ओ-दौलत अगर दीनी-ए-इशाअत में ख़र्च हो जाए तो मैं मुराद को पहुंच गया। फिर फ़रमाते हैं मुझे आपसे निसबत फ़ारूक़ी है और सब कुछ इस राह में फ़िदा करने के लिए तैयार हूँ। दुआ फ़रमावेँ कि मेरी मौत सिद्दीक़ों की मौत हो।

(फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3, पृष्ठ 36)

प्रिय श्रोताओ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो के मुहासिन का वर्णन करते हुए अपनी किताब इज़ाला औहाम में फ़रमाते हैं उनके माल से जिस क़दर मुझे मदद पहुंची है मैं कोई ऐसी नज़ीर नहीं देखता जो उसके मुक़ाबिल पर वर्णन कर सिक़ों। इसी तरह आप आईना कमालात इस्लाम में फ़रमाते हैं मुझको किसी व्यक्ति के माल ने इस क़दर नफ़ा नहीं पहुंचाया जिस क़दर कि उसके माल ने जोकि उसने अल्लाह तआला की रज़ा के लिए दिया और कई साल से दे रहा है।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 582)

प्रिय श्रोताओ! आपकी समस्त बड़ाई और आपकी समस्त अज़मत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से रहानी वाबस्तगी की वजह से थी। आप खुद फ़रमाते हैं कि मैं सारी आमदनीयों को छोड़कर जो दूसरे शहरों में मुझे हो सकती हैं क्यों कादियान में रहने को तर्जिह देता हूँ।

इस का मुस्तसर जवाब यही दूंगा कि मैंने यहां वह दौलत पाई है जो ग़ैर-फ़ा-नी है, जिसको चोर और कज़ाक़ नहीं ले जा सकता। मुझे वह मिला है जो तेराह सौ बरस के अंदर आरज़ू करने वालों को नहीं मिला। फिर ऐसी बे-बहा दौलत को छोड़कर मैं चंद रोज़ा दुनिया के लिए मारा मारा फिर्कूँ। मैं सच्च कहता हूँ कि अगर अब कोई मुझे एक लाख क्या, एक करोड़ रुपया यौमिया भी दे और कादियान से बाहर रखना चाहे मैं नहीं रह सकता। हाँ इमाम अलैहिस्सलाम के हुक्म की तामील में फिर ख़ाह मुझे एक कोड़ी भी न मिले। अतः मेरे दोस्त मेरा माल मेरी ज़रूरतें उस इमाम की इत्तिबा तक हैं और दूसरी सारी ज़रूरतों को इस एक वजूद पर कुर्बान करता हूँ।

(सूर: जुमा की तफ़सीर पृष्ठ : 63)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अक्वल रज़ियल्लाहु अन्हो जलसा सालाना पर आए हुए अहबाब से संबोधित हो कर फ़रमाते हैं :

हमारी बाबत कुछ भी ख़्याल न करो। हम क्या और हमारी हस्ती क्या। हम अगर बड़े थे तो घर रहते। पाक-बाज़ थे तो फिर इमाम की ज़रूरत ही किया थी। अगर किताबों से यह उद्देश्य हासिल हो सकता था तो फिर हमें क्या हाजत थी हमारे पास बहुत सी किताबें थीं परंतु नहीं, इन बातों से कुछ नहीं बनता .. इसी तरह हम जिस क्रूर यहां हैं अपने अपने अमराज़ में मुबतला हैं और यहां ईलाज के लिए बैठे हैं तो फिर हमारी किसी हरकत पर नाराज़ होना अक़लमंदी नहीं .. सादिक़ मामूर एक ही है जो मसीह और महुदी हो कर आया है अतः खुदा से मदद माँगो। अल्लाह की याद की तरफ़ आओ जो फ़हूशा और मुनकिर से बचाने वाला है। इसी को उस्वा बनाओ और उसी के नमूना पर चलो जो एक ही मुक़तिदा और मुता और इमाम है। (सूर: जुमा तफ़सीर, पृष्ठ : 66)

प्रिय श्रोताओ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आपके ताल्लुक़ और बैअत के नतीजा में होने वाले फ़वायद के वर्णन का एक वाक़िया पेश करता हूँ। हज़रत गुलाम रसूल राजीकी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि चौधरी नवाब ख़ां साहिब तहसीलदार जो मुख़लिस अहमदी थे, जब दौरा पर राजीकी तशरीफ़ लाते तो मेरे पास क्रियाम करते। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई और अज़मत शान के मुताल्लिक़ अक्सर वर्णन करते रहते। एक दिन इसी तरह की गुफ़्तगु का सिलसिला जारी था कि नवाब ख़ान साहब ने मुझ से वर्णन किया कि मैंने हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब से एक दफ़ा अर्ज़ किया कि मौलाना आप तो पहले ही बा-कमाल बुजुर्ग़ थे आपको हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से क्या फ़ायदा हासिल हुआ? इस पर हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब ने फ़रमाया कि नवाब ख़ान! मुझे हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से फ़वायद बहुत हासिल हुए हैं लेकिन एक फ़ायदा उनमें से यह हुआ है कि पहले मुझे नबी करीमी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़यारत ख़ाब के द्वारा हुआ करती थी, अब बेदारी में भी होती है। फिर फ़रमाया आपकी सोहबत से यह फ़ायदा उठाया कि दुनिया की मुहब्बत मुझ पर सर्द पड़ गई है। ये सब मिर्ज़ा साहिब की कुव्वत-ए-कुदसिया और फ़ैज़ सोहबत से हासिल हुआ।

प्रिय श्रोताओ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अक्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की आजिज़ी की जो इतेहा थी उसका वर्णन एक सहाबी के हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने किया है। एक सहाबी का वाक़िया वर्णन करते हैं कि वह वर्णन करते हैं कि मैं एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मिलने के लिए आया आप मस्जिद मुबारक में बैठे थे और दरवाज़े के पास जूतियां पड़ी थीं। एक आदमी सीधे सादे कपड़ों वाला आगया और आ कर जूतियों में बैठ गया। यह सहाबी कहते हैं कि मैंने समझा कि यह कोई जूती चोर है। इसलिए मैंने अपनी जूतियों की निगरानी शुरू कर दी कहीं वह लेकर भाग न जाए। कहने लगे उस के कुछ अर्से के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गए और मैंने सुना कि आपकी जगह कोई और व्यक्ति ख़लीफ़ा बन गया है इस पर मैं बैअत करने के लिए आया। जब मैंने बैअत के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो क्या देखता हूँ कि वह वही व्यक्ति था जिसको मैंने अपनी बेवकूफ़ी से जूती चोर समझा था (यानी हज़रत अक्वल) और मैं अपने दिल में सख़्त शर्मिदा हुआ। आपकी आदत थी कि आप जूतियों में आकर बैठ जाते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आवाज़ देते तो आप ज़रा आगे आ जाते।

फिर जब कहते कि मौलवी नूरुद्दीन साहिब नहीं आए तो फिर कुछ और आगे आजाते। इस तरह बार-बार कहने के बाद कहीं वह आगे आते थे। तो यह सहाबी फिर वर्णन करते हैं कि मैं उनकी औलाद को भी कहा करता था कि यह मुक़ाम जो उन्होंने हासिल किया इस तरह आजिज़ी से हासिल किया था।

प्रिय श्रोताओ! ग़ैरों की नज़र में भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो का एक अज़ीम मुक़ाम था मौलाना मुहम्मद अली जोहर, नवाब वक़ार मलिक, मौलाना अबुल् कलाम आज़ाद, मौलवी ज़फ़र अली ख़ां, अल्लामा शिबली नुमानी, ख़्वाजा हसन निज़ामी और दूसरे मुस्लिमा मुस्लमान लीडरान आपकी अज़मत शान और जलालत मर्तबत और ज्ञान के दिल से कायल थे, और इस्लामी रसायल में आपकी दीनी राय को बड़ा स्थान दिया जाता था।

(उद्धृत अल् फ़ज़ल 27 मार्च 1957 पृष्ठ 5, भाग 11/46 नंबर 74)

सर सय्यद अहमद ख़ान बानी अलीगढ़ कॉलेज अपने एक ख़त मुहरर: 8 मार्च 1897 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अक्वल के सवाल का जवाब इन शब्दों में देते हैं।

"आपने तहरीर फ़रमाया कि जाहिल पढ़ कर जब तरक्की करता है तो पढ़ा लिखा कहलाता है। परंतु जब और तरक्की करता है तो फ़लसफ़ी बनने लगता है। फिर तरक्की करे तो उसे सूफ़ी बनना पड़ता है। जब ये तरक्की करे तो क्या बनता है। .. इसका जवाब अपने मज़ाक़ के अनुसार अर्ज़ करता हूँ कि जब सूफ़ी तरक्की करता है तो मौलाना नूरुद्दीन हो जाता है।"

प्रिय श्रोताओ! आप रज़ियल्लाहु अन्हो का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इताअत और तामील-ए-हुक्म का यह आलम था कि आप बिना देरी किए तुरंत अमल करते थे। जिसकी एक मिसाल आपके सामने है।

एक मर्तबा आप चिकित्सा खाने में बैठे थे। इर्द-गिर्द लोगों का हलका था। एक व्यक्ति ने आकर कहा कि मौलवी-साहब हुज़ूर याद फ़रमाते हैं। ये सुनते ही इस तरह घबराहट के साथ उठे कि पगड़ी बांधते जाते थे और जूता घसीटते जाते थे। गोया दिल में यह था कि हुज़ूर के हुक्म की तामील में देर न हो। फिर जब मन्सब ख़िलाफ़त पर फ़ायज़ हुए तो अक्सर फ़रमाया करते थे कि तुम जानते हो नूरुद्दीन का यहां एक माशूक़ होता था जिसे मिर्ज़ा कहते थे। नूरुद्दीन इसके पीछे यूं दीवाना-वार फिरा करता था कि उसे अपने जूते और पगड़ी का भी होश नहीं हुआ करता था। (हयात-ए-नूर, पृष्ठ : 187)

प्रिय श्रोताओ! आप अलैहिस्सलाम अपने एक ख़ास प्यारे मुरीद अर्थात हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाते हैं :

मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब अपने इख़लास और मुहब्बत और सिफ़त-ए-ईसार और अल्लाह कि दी गई शुजाअत और सखावत और हमदर्दी इस्लाम में अजीब शान रखते हैं। कसरत-ए-माल के साथ कुछ क़लील ख़ुदा तआला की राह में देते हुए तो बहुतों को देखा। परंतु खुद भूख प्यासे रह कर अपना अज़ीज़ माल रज़ाए मौला में उठा देना और अपने लिए दुनिया में से कुछ न बनाना ये सिफ़त कामिल तौर पर मौलवी-साहब मौसूफ़ में ही देखी या उनमें जिनके दिलों पर उनकी सोहबत का असर है .. ख़ुदा तआला इस ख़सलत और हिम्मत के आदमी इस उम्मत में ज़्यादा से ज़्यादा करे। आमीन आमीन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

چہ خوش بُودے اگر ہریک ز اُمت نور دین بودے  
ہمیں بُودے اگر ہر دل پر از نور یقین بودے

(अनुवाद) क्या ही अच्छा होता अगर क़ौम का हर फ़र्द नूरुद्दीन बन जाए। परंतु यह तब ही हो सकता है कि जब हर दिल यक़ीन के नूर से भर जाए। (नि-शान-ए-आसमानी, रहानी ख़ज़ाइन, भाग 4, पृष्ठ 410 से 411)

हाज़िरीन-ए-जलसा! गोया यह आतिश-ए-इशक़ यक़तरफ़ा नहीं था बल्कि दोनों बाबरकत वजूद ही फ़ना फ़ील्लाह और फ़ील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हिसार में महु-ए-सफ़र थे। दोनों एक ही मंज़िल-ए-मक्सूद की तलाश में सरगर्दा थे और दोनों ही अहयाए इस्लाम की तड़प दिल में बसाए अपनी नीम शबीना दुआओं के ज़रीये किसी मोज़ज़े के मुंतज़िर थे। ऐसे में जब एजाज़े मसीह का वह ज़हूर हुआ जो 23 मार्च 1889 ई. को एक तुख़्म की सूरत ख़ाक़सारी के लिबादे में मलबूस हुआ और फिर अबरे रहमत बारी से रहानी प्यास बुझाता हुआ बारावर हुआ, और बरसों मसीही नफ़स की सोहबत में प्रवान चढ़ने के बाद 27 मई 1908 ई. को ज़हूर-ए-कुदरत-ए-सानिया के अवसर पर

शेष प्रष्ठ 13 पर

## दुनिया को आज़ादी देने वाला नबी (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

मुझ से ख़ाहिश की गई है कि मैं भी अल्फ़ज़ल के ख़ास नंबर के लिए मज़मून लिखूँ और मैं समझता हूँ कि इस नंबर में जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आलादर्जा और ऊंची शान के इज़हार के लिए शाय होने वाला है मज़मून लिखना एक सवाब का काम है। अतः बावजूद इसके कि इन दिनों मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ और फिर साथ ही बीमार भी एक मुस्तसर-सा मज़मून लिखना ज़रूरी समझता हूँ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी का हर पहलू ऐसा शानदार है कि इन्सान हैरान रह जाता है कि मैं किस पहलू को इख़तेयार करूँ और किस को छोड़ूँ और इन्तेखाब की आँख ख़ीरा हो कर रह जाती है लेकिन मैं इस ज़माना की ज़रूरत को मद्द-ए-नज़र रखते हुए अपने मज़मून के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के अहसन हिस्सा को लेता हूँ कि किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुनिया को इस गुलामी से निजात दिलाई है जो हमेशा से दुनिया के गले का हार हो रही थी और वे औरतों की गुलामी है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद से पहले औरतें हर मुल्क में गुलाम और ममलूक की तरह थीं और उनकी गुलामी मुर्दों पर भी असर डाले बग़ैर नहीं रह सकती थी क्योंकि लौंडियों के बच्चे आज़ादी की रूह को कामिल तौर पर जज़ब नहीं कर सकते।

इस में कोई संदेह नहीं कि हमेशा से औरत अपनी ख़ूबसूरती या ख़ूबसूरती के ज़ोर से कुछ मुर्दों पर हुकूमत करती चली आई है लेकिन यह आज़ादी हक़ीक़ी आज़ादी नहीं थी क्योंकि ये बतौर हक़ के हासिल नहीं थी बल्कि बतौर इस्तिस्ना के थी और ऐसी इस्तिस्ना आज़ादी कभी सही जज़बात के पैदा करने का मूजिब नहीं हो सकती।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत आज से साढ़े तेराह सौ साल पहले हुई है इस वक़्त तक किसी मज़हब और क़ौम में औरत को ऐसी आज़ादी हासिल न थी कि उसे बतौर हक़ के वे इस्तमाल कर सके। बेशक कुछ मुल्क जहाँ कोई भी क़ानून नहीं था वे हर किसम की क़ुयूद से आज़ाद थे लेकिन उसे भी आज़ादी नहीं कहा जा सकता उसे आवागी कहा जाएगा। आज़ादी वह है जो तमहुन और तहज़ीब के क़वायद को पूरा करते हुए हासिल हो इन क़वायद को तोड़ कर जो हालत पैदा हो वे आज़ादी नहीं कहला सकती क्योंकि वे बुलंद हिम्मती पैदा करने का मूजिब नहीं बल्कि पस्त हिम्मती पैदा करने का मूजिब होती है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में और इस से क़बल औरत की ये हालत थी के वे अपनी जायदाद की मालिक न थी उसका पति उसकी जायदाद का मालिक समझा जाता था उसे उसके बाप के माल में से हिस्सा नहीं दिया जाता था। वे अपने पति के माल की भी वारिस नहीं समझी जाती थी गो कुछ मुल्कों में उसके पूरे जीवन के लिए, वह उस की मुतवल्ली रहती थी। उसका निकाह जब किसी मर्द से हो जाता था तो या तो वह हमेशा के लिए उसकी क़रार दे दी जाती थी और किसी सूरत में उस से अलैहदा नहीं हो सकती थी और या फिर उस के पति को तो इख़तेयार होता था कि उसे जुदा कर दे लेकिन उसे अपने पति से जुदा होने का कोई हक़ हासिल नहीं था। ख़ाह उसे किस क़दर ही तकलीफ़ क्यों न हो। पति अगर उस को छोड़ दे और उस से सुलूक न रखे या कहीं भाग जाये तो उस के हुकूक़ की हिफ़ाज़त का कोई क़ानून निर्धारित नहीं था। उस का फ़र्ज़ समझा जाता था कि वे अपने बच्चों को और अपने आपको लेकर बैठी रहे और मेहनत मज़दूरी कर के अपने आपको भी पाले और बच्चों को भी पाले। पति का इख़तेयार समझा जाता था कि वे नाराज़ हो कर उसे मारपीट ले और उस के ख़िलाफ़ वे आवाज़ नहीं उठा सकती थी। अगर पति फ़ौत हो जाए तो कुछ मुल्कों में वे पति के रिश्तेदारों की मिल्कियत समझी जाती थी वे जिससे चाहें उस का रिश्ता कर दें ख़ाह बतौर एहसान के या क़ीमत लेकर बल्कि कुछ जगह वे पति की जायदाद समझी जाती थी। कुछ पति बीवियों को फ़रोख़्त कर देते थे या जुए और शर्तों में हार देते थे और वे बिल्कुल अपने अख़तियारात के दायरा में समझे जाते थे। औरत का बच्चों पर कोई इख़तेयार नहीं समझा जाता था न पति का ज़ौजीयत की सूरत में न उस से अलैहदागी की सूरत में। औरत घर के मुआमला में कोई इख़तेयार नहीं रखती थी और दीन में भी ख़्याल किया जाता था कि वह कोई दर्जा नहीं रखती। दाइमी नेअमतों में उस का कोई हिस्सा नहीं होगा। उस का नतीजा यह था कि पति औरतों की जायदाद को उड़ा देते थे और उसको बग़ैर किसी गुज़ारा के छोड़ देते थे। वे बेचारी अपने माल में से सदक़ा ख़ैरात या रिश्तेदारों की ख़िदमत

करने की मजाज़ नहीं थी जब तक कि पति की मर्ज़ी न हो और वे पति जिसके दाँत उसकी जायदाद पर होते थे कभी इस मुआमला में राज़ी नहीं होता था। माँ बाप जिनका निहायत ही गहरा और मुहब्बत का रिश्ता है उनके माल से वह वंचित कर दी जाती थी हालाँकि जिस तरह लड़के उनकी मुहब्बत के हक़दार होते हैं उसी तरह लड़कियाँ होती हैं जो माँ बाप उस नुक़स को देखकर अपनी लड़कियों को अपनी ज़िंदगी में कुछ दे देते थे उनके ख़ानदानों में फ़साद पड़ जाता था क्योंकि लड़के ये तो नहीं सोचते थे कि बाप माँ कर मरने के बाद वे उनकी सब जायदाद के वारिस होंगे हाँ ये ज़रूर महसूस करते थे कि उनके माँबाप उनकी निसबत लड़कियों को ज़्यादा देते हैं। इसी तरह पति जिससे कामिल इत्तिहाद का रिश्ता होता था उस के माल से भी उसे महरूम रखा जाता पति के दूर-दूर के रिश्तेदार तो उस की जायदाद के वारिस हो जाते और वे औरत जो उसकी महरम -ए-राज़ और उम्र भर की साथी होती जिसकी मेहनत और जिसके काम का बहुत सा दख़ल पति की कमाई में था वे उस की जायदाद से महरूम कर दी जाती थी या फिर वे पति की सारी ही जायदाद की निगरान क़रार दे दी जाती लेकिन वे उस के किसी हिस्सा में तसर्फ़ से महरूम थी वह उस की आमद को तो ख़र्च कर सकती थी लेकिन उस के किसी हिस्सा को प्रयोग नहीं कर सकती थी और इस तरह बहुत से सदक़ात जारीया में अपनी ख़ाहिश के मुताबिक़ हिस्सा लेने से महरूम रहती थी। पति इस पर ख़ाह किस क़दर ही ज़ुलम करे वे इस से जुदा नहीं हो सकती थी या जिन क़ौमों में जुदा हो सकती थी ऐसी शरायत पर कि बहुत सी शरीफ़ औरतें इस जुदाई से मौत को तर्ज़ीह देती थीं। उदाहरणतः जुदाई की ये शर्त थी कि पति या औरत की बदकारी साबित की जाए और फिर उस के साथ जुलम भी साबित किया जाए और इस से बढ़कर जुलम यह था कि बहुत सी सूरतों में जब औरत का पति के साथ रहना नामुमकिन होता था तो उसे कामिल तौर पर जुदा करने की बजाय केवल अलैहदा रहने का हक़ दिया जाता था जो ख़ुद एक सज़ा है क्योंकि इस तरह वह अपनी ज़िंदगी को बे-मक़सद बसर करने पर मजबूर होती है या फिर यह होता था कि पति जब चाहे औरत को जुदा कर दे लेकिन औरत को अपनी अलैहदागी का मुतालिबा करने का किसी सूरत में इख़तेयार नहीं था। अगर पति उसे अलग छोड़ देता या मुल्क छोड़ जाता और ख़बर न लेता तो औरत को मजबूर किया जाता कि वह उस का इन्तेज़ार उम्र-भर करती रहे और उसे अपनी उमर को मुल्क और क़ौम के लिए मुफ़ीद तौर पर बसर करने का इख़तेयार नहीं था। शादी की ज़िंदगी बजाय आराम के उस के लिए मुसीबत बन जाती थी। उस का काम होता कि वह पति और बीवी दोनों का काम भी करे और पति का इन्तेज़ार भी करे। पति का फ़र्ज़ यानी घर के अख़राजात के लिए कमाना भी उसके सपुर्द हो जाता और औरत की ज़िम्मा-वारी कि बच्चों की निगहदाशत और उनकी परवरिश करे यह भी उसके सपुर्द रहता। एक तरफ़ कलबी तकलीफ़ दूसरी तरफ़ माही ज़िम्मेवारियाँ। ये सब इस बेकस जान के लिए रवा रखी जाती थीं। औरतों को मारा पीटा जाता और उसे पति का जायज़ हक़ तसव्वुर किया जाता। पति के मरने के बाद औरतों का ज़बरदस्ती पति के रिश्ते-दारों से निकाह कर दिया जाता था या और किसी व्यक्ति के पास क़ीमत लेकर बेच दिया जाता बल्कि पति ख़ुद अपनी औरतों को बेच डालते। पाण्डों जैसे अज़ीमुश्शान शहज़ादों ने अपनी बीवी को जुए में हार दिया और देश के क़ानून के सामने दरौपदी जैसी शरीफ़ शहज़ादी उफ़ न कर सकी। बच्चों की तालीम या परवरिश में माओं की राय नहीं ली जाती थी और उनका बच्चों पर कोई हक़ न तस्लीम किया जाता था। अगर माँ और बाप में जुदाई वाक़्य हो तो बच्चों को बाप के सपुर्द किया जाता था। औरत का घर से कोई ताल्लुक़ नहीं समझा जाता था न पति की ज़िंदगी में ना बाद। जब चाहता पति उसे घर से निकाल देता था और वे बेघर हो कर इधर उधर फ़िर्ती रहती।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया से इन सब ज़ुल्मों को तुरंत मिटा दिया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे औरतों के हुकूक़ की निगहदाशत ख़ासतौर पर सपुर्द फ़रमाई है। मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से ऐलान करता हूँ कि मर्द और औरत बलिहाज़ इन्सानियत बराबर हैं और जब वे मिलकर काम करें तो जिस तरह मर्द को कुछ हुकूक़ औरत पर हासिल होते हैं उसी तरह औरत को मर्द पर कुछ हुकूक़ हासिल होते हैं। औरत इसी तरह जायदाद की मालिक हो सकती है जिस तरह मर्द हो सकता है और पति का कोई हक़ नहीं कि औरत के माल को प्रयोग करे जब तक कि औरत खुशी से बतौर भेंट उसे

कुछ न दे। इस से जबरन माल लेना या इस तरह लेना का शुबा हो कि औरत की लज्जा के कारण इंकार न कर सकी हो गलत है। पति भी जो भी कुछ बतौर भेंट उसे दे वे औरत का ही माल होगा और पति उसे वापस नहीं ले सकेगा। वह अपनी माँ और अपने बाप के माल की इसी तरह वारिस होगी जिस तरह कि बेटे अपने माँ बाप के वारिस होते हैं। हाँ चूँकि खानदानी ज़िम्मेदारियाँ मर्द पर होती हैं और औरत पर केवल अपनी ज्ञात का बार होता है इस लिए उसे मर्द से आधा हिस्सा मिलेगा। इसी तरह माँ भी अपने बेटे के माल से इसी तरह हिस्से पायगी जिस तरह बाप। जबकि विभिन्न हालात और ज़िम्मेदारियों के लिहाज़ से कभी बाप के बराबर और कभी कम हिस्सा उसे मिलेगा। वह अपने पति के मरने पर उसके माल के भी वारिस होंगे ख़ाह औलाद हो या न हो क्योंकि उसे दूसरे का दस्त-ए-निगर नहीं बनाया जा सकता। उस की शादी बेशक एक पाक और मुकद्दस अहद है जिसका तोड़ना बाद इसके कि मर्द और औरत ने एक दूसरे से इतेहाई बे-तकल्लुफ़ी पैदा कर ली निहायत मायूब है लेकिन यह नहीं कि अगर औरत और मर्द की तबीयत में ख़तरनाक इख़तेलाफ़ साबित हो या मज़हबी, जस्मानी, माली, तमद्दुनी, तिब्बी मुगायरत के बावजूद उन्हें मजबूर किया जाए कि वे इस अहद की ख़ातिर अपनी उमर को बर्बाद कर दें और अपनी पैदाइश के उद्देश्य को खो दें। जब ऐसे इख़तेलाफ़ात पैदा हो जाएं और मर्द और औरत सहमत हों कि अब वे इकट्ठे नहीं रह सकते तो वे इस मुआहिदा को आपसी सहमति से बातिल कर दें और अगर मर्द इस ख़्याल का हो और औरत न हो तो आपस में अगर किसी तरह समझौता न हो सके तो एक पंचायत उनके दरमयान फ़ैसला करे जिसके दो मੈबर हों एक मर्द की तरफ़ से और एक औरत की तरफ़ से। फिर अगर वे फ़ैसला करें कि अभी औरत और मर्द को और कुछ मुद्दत मिल कर रहना चाहिए तो चाहिए कि उनके बताए हुए तरीक़ पर मर्द और औरत मिलकर रहें लेकिन जब इस तरह भी इत्तिफ़ाक़ न पैदा हो तो मर्द औरत को जुदा कर सकता है लेकिन इस सूरत में उसने जो माल उसे दिया है वे उसे वापस नहीं ले सकता बल्कि महर भी उसे पूरा अदा करना होगा। बरख़िलाफ़ इस के अगर औरत मर्द से जुदा होना चाहे तो वे क़ाज़ी से दरख़ास्त करे और अगर क़ाज़ी देखे कि कोई बद अख़्लाकी का मुहर्रिक उसके पीछे नहीं है तो वे उसे उस की अलैहदगी का हुक्म दे और इस सूरत में उसे चाहिए कि पति का ऐसा माल जो उसके पास महफूज़ हो या महर उसे वापस कर दे और अगर औरत का पति उस के हुक्क़ मखसूसा को अदा न करे या उस से कलाम इत्यादि छोड़ दे या उस को अलग सुलाए तो उसकी मुद्दत निर्धारित होनी चाहिए और अगर वे चार माह से ज़ायद इस काम का मुर्तक़िब हो तो उसे मजबूर किया जाए कि या इस्लाह करे या तलाक़ दे और अगर वे इस को ख़र्च इत्यादि देना बंद कर दे या कहीं चला जाए और इस की ख़बर न ले तो इस का निकाह फ़सख़ करार दिया जाए (तीन साल तक की मुद्दत इस्लाम के फ़ोकाहा ने वर्णन की है) और उसे आज़ाद किया जाए कि वे दूसरी जगह निकाह कर ले और हमेशा पति को अपनी बीवी और बच्चों के ख़र्च का ज़िम्मेदार करार दिया जाए। पति को अपनी बीवी को मुनासिब तंबीया का इख़तेयार है लेकिन उस के लिए ज़रूरी है कि जब वे तंबी या सज़ा का रंग इख़तेयार करे तो उस पर लोगों को गवाह निर्धारित करे और जुर्म को ज़ाहिर करे और गवाही पर उसकी बुनियाद रखे और सज़ा ऐसी न हो जो देर पा असर छोड़ने वाली हो। पति अपनी बीवी का मालिक नहीं वे उसे बैच नहीं सकता न उसे खादिमों की तरह रख सकता है उसकी बीवी उस के खाने पीने में उस के साथ शरीक है और उस के साथ सुलूक अपनी हैसियत के मुताबिक़ उसे करना होगा और जिस वर्ग का पति है उस से कम सुलूक उसे जायज़ न होगा। पति के मरने के बाद उसके रिश्तेदारों को भी उस पर कोई इख़तेयार नहीं वे आज़ाद है। नेक सूरत देखकर अपना निकाह कर सकती है उस से उसे रोकने का किसी को हक़ नहीं न उसे मजबूर किया जा सकता है कि वे एक ख़ास जगह पर रहे। केवल चार माह दस दिन तक उसे पति के घर ज़रूर रहना चाहिए ता उस वक़्त तक वे समस्त हालात ज़ाहिर हो जाएं जो उसके और पति के दूसरे मुताल्लिक़ीन के हुक्क़ पर-असर डाल सकते हैं। औरत को उसके पति की वफ़ात के बाद साल भर तक इलावा इसके ज़ाती हक़ के पति के मकान में से नहीं निकालना चाहिए ता इस अरसा में वह अपने हिस्सा से अपनी रहाईश का इतेज़ाम कर सके। पति भी नाराज़ हो तो खुद घर से अलग हो जाए औरत को घर से न निकाले क्योंकि घर औरत के क़बज़ा में समझा जाता है। बच्चों की तर्बीयत में औरत का भी हिस्सा है उस से मश्वरा ले लेना चाहिए और उसे बचा के मुताल्लिक़ कोई तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए। दूध पिलवाने, निगरानी इत्यादि बच्चे के मुताल्लिक़ समस्त उमूर में उस से पूछ लेना चाहिए और अगर औरत और मर्द आपस में निभाओ को नामुमकिन पा कर जुदा होना चाहें तो छोटे बच्चे माँ ही के पास रहें। हाँ जब बड़े हो जाएं तो तालीम इत्यादि के लिए बाप के

सपुर्द कर दिए जाएं जब तक बच्चे माँ के पास रहें उनका ख़र्च बाप दे बल्कि माँ को उन के लिए जो वक़्त ख़र्च करना पड़े और काम करना पड़े तो उस की भी माली मदद पति को करनी चाहिए। औरत मुस्तक़िल हैसियत रखती है और दीनी इनामात भी वे हर किस्म के पा सकती है। मरने के बाद भी वह आला दर्जा के इनामात पायगी और इस दुनिया में भी हुक्मत के विभिन्न शोबों में वह हिस्सा ले सकती है और इस सूरत में उसके हुक्क़ का वैसा ही ख़्याल रखा जाएगा जिस तरह कि मर्दों के हुक्क़ का।

यह वह तालीम है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त दी जब उसके बिल्कुल बरअक्स ख़्यालात दुनिया में रायज थे। आपने इन अहकाम के ज़रीया औरत को इस गुलामी से आज़ाद करा दिया। जिस में वे हज़ारों साल से मुबतला थी जिस में वह हर मुल्क में पाबंद की जाती थी जिसका तौक़ हर मज़हब उसकी गर्दन में डालता था। एक व्यक्ति ने एक ही वक़्त में इन देरीना कुयूद को काट दिया और दुनिया-भर की औरतों को आज़ाद कर दिया और माओं को आज़ाद करके बच्चों को भी गुलामी के ख़्यालात से महफूज़ कर लिया और आला ख़्यालात और बुलंद हौसले के जज़बात के उभरने के सामान पैदा कर दिए।

परंतु दुनिया ने इस ख़िदमत की क़दर न की। उसने वही बात जो एहसान के तौर पर थी उसे ज़ुलम करार दिया। तलाक़ और खुला को फ़साद करार दिया। विरसा को खानदान की बर्बादी का ज़रीया। औरत के मुस्तक़िल हुक्क़ को खानगी ज़िंदगी का तबह करने वाला और वे इसी तरह करती चली गई और करती चली गई और तेराह सौ साल तक वे अपनी नाबीनाई से इस बीना की बातों पर हँसती चली गई और इस की तालीम को ख़िलाफ़ उसूल फ़िलत करार देती चली गई यहां तक कि वक़्त आ गया कि खुदा के कलाम की ख़ूबी ज़ाहिर हो और जो तहज़ीब व शायस्तगी के दावेदार थे वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तहज़ीब सिखाने वाले अहकाम की पैरवी करें। उन में से हर एक हुक्मत एक एक कर के अपने क़वानीन को बदले और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए उसूल की पैरवी करे।

अंग्रेज़ी क़ानून जो तलाक़ और खुला के लिए किसी एक फ़रीक़ की बदकारी और साथ ही ज़ुलम और मारपीट को लाज़िमी करार देता था 1923 ई. में बदल दिया गया और केवल बदकारी भी तलाक़ और खुला का मूजिब तस्लीम करली गई।

न्यूज़ीलैंड में 1912 में फ़ैसला कर दिया गया कि सात साला पागल की बीवी का निकाह फ़सख़ किया जा सकता है और 1925 ई. में फ़ैसला किया गया कि अगर पति या बीवी औरत और मर्द के हुक्क़ को अदा न करें तो तलाक़ या खुला हो सकता है और तीन साल तक ख़बर न मिलने पर तलाक़ को जायज़ करार दिया गया।

(बिलकुल इस्लामी फ़क़हा की नक़ल की है परंतु तेराह सौ साल इस्लाम पर एतराज़ करने के बाद।)

आस्ट्रेलिया की रियासत कुइज़लैंड में पाँच साला जुनून को वजह तलाक़ तस्लीम कर लिया गया है। टसमान्या में 1919 ई. में क़ानून पास कर दिया गया कि बदकारी, चार साल तक ख़बर न लेना, मदमसती और तीन साल तक अदम तवज्जही, क़ैद, मारपीट और जुनून को वजह तलाक़ करार दिया गया है। इलाक़ा विक्टोरिया में 1923 ई. में क़ानून पास कर दिया गया है कि पति अगर तीन साल ख़बर न ले, बदकारी करे, ख़र्च न दे या सख़्ती करे, क़ैद, मारपीट या औरत की तरफ़ से बदकारी या जुनून या सख़्ती और फ़साद का ज़हूर हो तो तलाक़ और खुला हो सकता है।

मग़रिबी आस्ट्रेलिया में इलावा ऊपर के क़वानीन के हामिला औरत की शादी को भी फ़सख़ करार दिया गया है (इस्लाम भी उसे नाजायज़ करार देता है)

क्यूबा जज़ीरा में 1918 ई. में फ़ैसला कर दिया गया है कि बदकारी पर मजबूर करना, मारपीट, गाली ग्लोच, सज़ायाफ़्ता होना, मदमसती, जुए की आदत, हुक्क़ का अदा न करना, ख़र्च न देना, मुतअद्दी बीमारी या बाहमी रजामंदी को तलाक़ या खुला की काफ़ी वजूह तस्लीम कर लिया गया है।

इटली में 1919 में क़ानून बनादिया गया है कि औरत अपने माल की मालिक होगी और इस में से सदक़ा ख़ैरात कर सकेगी या उसे फ़रोख़त कर सकेगी (उस वक़्त तक यूरोप में औरत को उस के माल का मालिक नहीं माना जाता था)

मैक्सिको अमरीका में भी ऊपर के वर्णन करदा वजूह को तलाक़ और खुला के लिए काफ़ी वजह तस्लीम कर लिया गया है और साथ ही बाहमी रजामंदी को भी इस के जवाज़ के लिए काफ़ी समझा गया है। यह क़ानून 1917 ई. में पास हुआ है।

पुर्तगाल में 1915 ई. में, नार्वे में 1909 ई. में, स्वीडन में 1920 ई. और स्विट्ज़रलैंड में 1912 ई. में ऐसे क़वानीन पास कर दिए गए कि जिनसे तलाक़ और खुला की इजाज़त हो गई है। स्वीडन में बाप को मजबूर किया जाता है कि वह अठारह साल तक की उमर तक बचा के अख़राजात अदा करे।

यूनाईटेड इस्टेट्स अमरीका में गो कानून अब तक यही कहता है कि बच्चे पर

बाप का हक है लेकिन अमलन इस्लामी तरीक़ पर इस्लाह शुरू हो गई और जज, औरत के एहसासात को तस्लीम करने लगे हैं और मर्द को मजबूर कर के खर्च भी दिलवाया जाता है लेकिन अभी तक इस क़ानून में बहुत कुछ ख़ामियाँ हैं गो मर्द के हुकूक की हिफ़ाज़त ज़्यादा सख़्ती से की गई है औरत को उस के माल पर तस्रुफ़ भी दिलाया जा रहा है लेकिन साथ ही कुछ रियास्तों में यह भी क़ानून पास कर दिया गया है कि अगर पति अपाहिज हो जाए तो बीवी पर भी उस के अख़राजात का मुहय्या करना लाज़िमी होगा।

औरतों को वोट के हुकूक दिए जा रहे हैं और उनसे क़ौमी उमूर में मश्वरा लेने के लिए भी राहें खोली जा रही हैं लेकिन ये सब बातें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्शादात के पूरे तेराह सौ साल के बाद हुई हैं और अभी कुछ होनी बाक़ी हैं। बहुत से देशों में अभी औरत को बाप और माँ और पति के माल का वारिस नहीं करार दिया गया और इसी तरह और कई हुकूक बाक़ी हैं जिन में इस्लाम अब भी बाक़ी दुनिया की रहनुमाई कर रहा है लेकिन अभी उसने उसकी राहनुमाई को क़बूल नहीं किया लेकिन वह ज़माना दूर नहीं जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रहनुमाई को इन मुआमलात में भी दुनिया क़बूल करेगी जिस तरह उसने और मुआमलात में क़बूल किया और आपका जिहाद औरतों की आज़ादी के मुताल्लिक़ अपने पूरे असरात और नतायज प्रकट करेगा।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ  
كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ  
وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ  
मिर्ज़ा महमूद अहमद

(उद्धृत अल्फ़ज़ल कादियान 12 जून 1928 ई.)



## पृष्ठ 2 शेष

छोड़ चले हो? या बेटा इस बुढ़ापे में मुझसे क्यों मुँह मोड़ लिया? ये शिद्दत-ए-गाम में फ़ितरत-ए-इन्साना का एक निहायत लतीफ़ मुज़ाहरा होता है। इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर सुन कर उस औरत का हाल हुआ। वह आपको फ़ौत शूदा मानने के लिए तैयार नहीं थी और दूसरी तरफ़ इस ख़बर की तरदीद भी नहीं कर सकती थी। इस लिए शिद्दत-ए-गाम में यह कहती जाती थी अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या-किया। अर्थात ऐसा वफ़ादार इन्सान हम को यह सदमा पहुंचाने पर क्योंकर राज़ी हो गया।

जब लोगों ने देखा कि उसे अपने बाप, भाई और ख़ावद की कोई परवाह नहीं तो वह उसके सच्चे जज़बात को समझ गए और उन्होंने कहा अमुक की अम्मां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जिस तरह तू चाहती है ख़ुदा के फ़ज़ल से ख़ैरीयत से हैं। इस पर उस ने कहा मुझे दिखाओ वह कहाँ हैं? लोगों ने कहा आगे चली जाओ वह आगे खड़े हैं। वह औरत दौड़ कर आप तक पहुंची और आपके दामन को पकड़ कर बोली **يَا رَسُولَ اللَّهِ!** मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों, जब आप सलामत हैं तो कोई मरे मुझे कोई प्रवाह नहीं।

मर्दों ने जंग में वह उदाहरण ईमान का दिखाया और औरतों ने यह उदाहरण इख़लास का दिखाया, जिसकी मिसाल मैंने अभी वर्णन की है। ईसाई दुनिया मर्यम मगद-लेनी और उस के साथी औरतों की इस बहादुरी पर खुश है कि वह मसीह की क़ब्र पर सुबह के वक़्त दुश्मनों से छुप कर पहुंची थीं। मैं उन से कहता हूँ आओ और ज़रा मेरे महबूब के मुखलिसों और फ़िदाइयों को देखो कि किन हालतों में उन्होंने ने उन का साथ दिया और किन हालतों में उन्होंने ने तौहीद के झंडे को बुलंद किया।

इस किस्म की फ़दाईत की एक और मिसाल भी तारीख़ों में मिलती है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुहदा को दफ़न कर के मदीना वापस गए तो फिर औरतें और बच्चे शहर से बाहर इस्तक्रबाल के लिए निकल आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊठनी की बाग़ साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना के रईस ने पकड़ी हुई थी और गर्व से आगे आगे दौड़े जाते थे शायद दुनिया को यह कह रहे थे कि देखा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ैरीयत से अपने घर वापस ले आए। शहर के पास उन्हें अपनी बुढ़िया माँ जिसकी नज़र कमज़ोर हो चुकी थी आती हुई मिली। उहद में उस का एक बेटा अन्न बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी मारा गया। उसे देखकर साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह! **يَا رَسُولَ اللَّهِ!** हे अल्लाह के रसूल मेरी माँ आ रही है। आपने

फ़रमाया ख़ुदा तआला की बरकतों के साथ आए। बुढ़िया आगे बढ़ी और अपनी कमज़ोर फटी आँखों से इधर उधर देखा कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक़ल नज़र आजाए। आख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा पहचान लिया और खुश हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया माई! मुझे तुम्हारे बेटे की शहादत पर तुमसे हमदर्दी है। इस पर नेक औरत ने कहा। हुज़ूर जब मैंने आपको सलामत देख लिया तो समझो कि मैंने मुसीबत को भून कर खा लिया। "मुसीबत को भून कर खा लिया।" क्या अजीब मुहावरा है। मुहब्बत के कितने गहरे जज़बात पर दलालत करता है ग़म-ए-इन्सान को खा जाता है। वह औरत जिसके बुढ़ापे में उस का बुढ़ापे का सोटा टूट गया किस बहादुरी से कहती है कि मेरे बेटे के ग़म ने मुझे क्या खाना है जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं तो मैं इस ग़म को खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मौत मुझे मारने का मूजिब नहीं होगी बल्कि यह ख़्याल कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उस ने जान दी मेरी कुव्वत के बढ़ाने का माध्यम होगा। हे अंसार मेरी जान तुम पर फ़िदा हो तुम कितना सवाब ले गए।"

(नबियों का सरदार पृष्ठ 91 ता 93 प्रकाशित कादियान)

सारे ही मुहाजेरीन और अंसार अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर जान फ़िदा करने को हर वक़्त तैयार रहते थे। जब जिसको अवसर मिला उस ने खुशी से जान निछावर की। जिसका नक्शा कुरआन-ए-करीम ने दो अल्फ़ाज़ में इस तरह खींचा है। **هَجْرَتِ مَنْ قَضَىٰ نَجْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ۔** हज़रत साद बिन रबी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़िदाईत का नमूना मुलाहेज़ा फ़रमईए। जब मुहाजिर मक्का से हिज़्रत करके मदीना आए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर मुहाजिर को एक एक अंसार का भाई बनाया तो अंसार ने उन से अपने हक़ीक़ी भाईयों से ज़्यादा मुहब्बत की और वह अपनी नसफ़ जायदाद उनके हवाला करने पर डटे थे। लेकिन एक अंसारी सहाबी ऐसे भी थे जिन्होंने ने अपने मुहाजिर भाई अब्दुराहमान बिन औफ़ से यह भी कहा कि मैं अपनी एक बीवी को तलाक़ देता हूँ इहदत के बाद तुम उनसे निकाह करलो। यह सहाबी साद बिन रबी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो थे। जो व्यक्ति अपने मुँह बोले भाई के लिए इस क़दर फ़दाईत का नमूना दिखा सकता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उसके जज़बात का क्या आलम होगा। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि जंग-ए-उहद के अवसर पर जबकि लड़ाई ख़त्म हो गई और शुहदा की तदफ़ीन और ज़ख़मियों की ख़बरगीरी का काम चल रहा था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

"कोई जा कर देखे कि साद बिन अलबीअ रईस-ए-अंसार का क्या हाल है आया वजह ज़िंदा हैं या शहीद हो गए? क्योंकि मैंने लड़ाई के वक़्त देखा था कि वह दुश्मन के नेज़ों में बुरी तरह घिरे हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर एक अंसारी सहाबी उबय बिन काब गए और मैदान में इधर उधर साद को तलाश किया परंतु कुछ पता न चला। आख़िर उन्होंने ऊंची ऊंची आवाज़ें देनी शुरू कीं और साद का नाम ले-ले कर पुकारा परंतु फिर भी कोई सुराग़ न मिला। मायूस हो कर वह वापस जाने को थे कि उन्हें ख़्याल आया कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेकर तो पुकारूँ शायद इस तरह पता चल जाए। इसलिए उन्होंने बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा। साद बिन रबी कहाँ हैं मुझे रसूलुल्लाह ने उनकी तरफ़ भेजा है। इस आवाज़ ने साद के आधे मुर्दा जिस्म में एक बिजली की लहर दौड़ा दी और उन्होंने ने चौंक कर परंतु निहायत धीमी आवाज़ में जवाब दिया।" कौन है मैं यहां हूँ।" उबय बिन काब ने गौर से देखा तो थोड़े फ़ासिला पर मक्कतूलीन के एक ढेर में साद को पाया जो उस वक़्त मृत्यु के करीब की अवस्था में जान तोड़ रहे थे। उबय बिन काब ने उनसे कहा कि मुझे सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस लिए भेजा है कि मैं तुम्हारी हालत से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचित करूँ। साद ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह से मेरा सलाम अर्ज़ करना और कहना कि ख़ुदा के रसूलों को जो उनके मुतबईन की कुर्बानी और इख़लास की वजह से सवाब मिला करता है ख़ुदा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह सवाब सारे नबियों से बढ़ चढ़ कर अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों को ठंडा करे और मेरे भाई मुस्लमानों को भी मेरा सलाम पहुंचाना और मेरी क़ौम से कहना कि अगर तुम में ज़िंदागी का दम होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ पहुंच गई तो ख़ुदा के सामने तुम्हारा कोई बहाना नहीं होगा। यह कह कर साद ने जान दे दी।" (सीरत ख़ातमन नबियीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ : 501)

जंग-ए-बदर के अवसर पर एक अंसारी सहाबी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बार बार मश्वरा तलब फ़र्मा रहे थे कहा "हम मूसा के साथियों की तरह आप से यह नहीं कहेंगे **إِذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ** तू और तेरा रब जाओ और दुश्मन से जंग करते फिरो हम तो यहीं बैठे हैं, बल्कि हम आपके दाएं भी लड़ेंगे और बाएं भी लड़ेंगे और आगे भी

लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे और हे रसूलुल्लाह! दुश्मन जो आपको नुक़सान पहुंचाने के लिए आया है वह आप तक नहीं पहुंच सकता जब तक वह हमारी लाशों पर से गुज़रता हुआ न जाए। हे रसूलुल्लाह! जंग तो एक मामूली बात है, यहां से थोड़े फ़ासिला पर समुद्र है आप हमें हुक्म दीजिए कि समुद्र में अपने घोड़े डाल दो और हम बिना देरी समुद्र में अपने घोड़े डाल देंगे।

यह वह फ़िदाईत और इख़लास का नमूना था जिसकी मिसाल कोई साबिक़ नबी पेश नहीं कर सकता। मूसा के साथियों का हवाला तो उन लोगों ने खुद ही दे दिया था हज़रत मसीह के हव्कारियों ने दुश्मन के मुकाबला में जो नमूना दिखाया इंजील इस पर गवाह है। एक ने तो चंद रूपों पर अपने उस्ताद को बेच दिया। दूसरे ने उस पर लानत की और बाक़ी दस उसको छोड़कर इधर से उधर भाग गए परंतु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम के साथी केवल डेढ़ साल की सोहबत के बाद ईमान में इतने पुरख़्ता हो गए कि वह उन के कहने पर समुद्र में कूदने के लिए भी तैयार थे।"

(नबियों का सरदार पृष्ठ 74 प्रकाशन कादियान 2001)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को जंगी कैदियों के साथ हुस्र-ए-सुलूक की ताकीद फ़रमाई थी। सहाबा अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों पर किस तरह अमल करते थे मुलाहिज़ा फ़रमाएँ।

"सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिनको अपने आक्रा की हर ख़ाहिश के पूरा करने का इशक़ था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस नसीहत पर इस ख़ूबी के साथ अमल किया कि दुनिया की तारीख़ में इस की नज़ीर नहीं मिलती। इसीलिए खुद उन कैदियों में से एक कैदी अबू अज़ीज़ बिन अमर की ज़बानी रिवायत आती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की वजह से अंसार मुझे तो पक़ी हुई रोटी देते थे, लेकिन खुद खज़ूर इत्यादि खा कर गुज़ारा कर लेते थे और कई दफ़ा ऐसा होता था कि उनके पास अगर रोटी का छोटा टुकड़ा भी होता था तो वह मुझे दे देते थे और खुद नहीं खाते थे और अगर मैं कभी शर्म की वजह से वापस कर देता था तो वे इसरार के साथ फिर मुझी को दे देते थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ : 365)

"आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैदियों के आराम और सहूलत के मुता-ल्लिक़ ऐसे ताकीदी अहक़ाम सादर फ़रमाए कि उनसे प्रभावित हो कर सहाबा ने अपनी क़मीज़ें उतार उतार कर कैदियों को हां अपने ख़ून के प्यासे कैदियों को दे दीं। खुद खुशक़ खज़ूरों पर गुज़ारा किया। और उन्हें पका हुआ खाना दिया। आप पैदल चले और उन्हें सवार किया। क्या दुनिया की किसी क़ौम में किसी ज़माना में इस की मिसाल मिलती है?"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 411)

इशक़-ओ-मुहब्बत की कुछ अनोखी दास्तान और मुलाहिज़ा फ़रमाएँ :

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में रिवायत है कि वे बड़े मज़ाक़ करने वाले आदमी थे एक दिन लोगों में बैठे हंसी मज़ाक़ की बातें कर रहे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पहलू में (से) अपनी छड़ी चुभोई। इस पर वह कहने लगे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने तो बदला लेना है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा आओ और बदला ले लो। इस पर वह कहने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने तो क़मीस पहनी हुई है और मैं तो नंगे बदन हूँ इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदला देने के लिए अपनी क़मीस को ऊपर उठाया। उसैद बिन हुज़ैर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिपट गए और जसद-ए-मुबारक के बोसे पर बोसे लेने लगे और कहने लगे कि हुज़ूर मेरा तो यह उद्देश्य था।

(मैंने तो यह बरकत हासिल करने के लिए दिल में यह तदबीर सोची थी)

(हदीकतुस सालेहीन, हदीस नंबर 72 लेखक मालिक सैफुल रहमान साहिब)

साथ अर्ज़ है कि उसैद बिन हुज़ैर क़बीला ओस के ख़ानदान बन् अब्दुल अशहल से थे और बड़े सहाबा में शुमार होते थे। उनका पिता जंग बुआस में क़बीला ओस का कैद-ए-आज़म था। उसैद निहायत मुख़लिस और निहायत समझदार थे। हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि अंसार में से तीन व्यक्ति अपनी अफ़ज़लीयत में जवाब नहीं रखते थे अर्थात उसैद बिन अल्हुज़ैर साद बिन मआज़ और अब्बाद बिन बशर और इस में शुबा नहीं कि उसैद बड़े पाए के सहाबी थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसैद की बड़ी इज़्ज़त करते थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 229)

अल्लाह तआला सहाबा के दर्जात बुलंद फ़रमाए कि उन्होंने ईमान लाने का हक़ अदा कर दिया। अल्लाह तआला हमें भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। आमिन

(मंसूर अहमद मसरूर)



## का शेष 24 पृष्ठ

जिससे हम अपने अपने ख़्यालात की नुमाइंदगी कर सकें। इकट्ठे मिल बैठ कर बातें करते और खाना खाते। ये बहुत अच्छे प्रोग्राम थे। इसी तरह एक-बार फिर, हम एक दूसरे की इबादत-गाह में जाएंगे और मौजू ए बेहस निर्धारित कर के अपने अपने मुकद्दस सहीफ़ा की रूह से इस पर बात करेंगे। इस प्रोग्राम में शिरकत मेरे लिए खुशी का बायस है। मैं हैरान हूँ कि किस तरह इस बड़े प्रोग्राम को आर्गनाइज़ करने के लिए एक बड़ी टीम ने काम किया है, यह आपस में कितनी हम-आहंगी से काम कर रहे हैं, प्रत्येक का अपना काम है, शैड्यूल है। ये बहुत दिलचस्प है। मैंने यह भी सुना है कि कुछ महिलाएं कारकुनान इस प्रोग्राम के लिए पिछले छः रातों से ठीक तरह से सौ भी नहीं पाईं और प्रत्येक खुश है। कुछ ग़मगीं भी हो रही हैं कि इतना बड़ा प्रोग्राम, इतनी मेहनत और अब यह जल्दी से ख़त्म हो रहा है। मैं इन महलाओं की टीम से बहुत प्रभावित हूँ।

ख़लीफ़ा को देखकर उनकी बातें सुनकर बहुत सुकून मिला। किसी को आलमी अमन के लिए इस तरह प्रयास करते हुए नहीं देखा, यह बहुत अच्छा एहसास है। अगर लोग अपनी खुदग़रज़ी, किसी पड़ोसी पर ग़लबा पाने या किसी दूसरे के इलाक़े पर क़बज़ा करने, या किसी पर जुलम करने के एजंडे की बजाय इस पैग़ाम को सुनें तो दुनिया में अमन हो सकता है। काश हम अमन को फ़रोग देने वाली मज़ीद तक्रारीर सुन सकें और लोगों को याद दिलाते रहें कि उन्हें हमेशा अमन की पैरवी करनी चाहिए और काम करना चाहिए।

इस प्रोग्राम में Collin काओनटी पुलिस डिपार्टमेंट से LeRoy Thompson भी शरीक थे। ये कहते हैं चौधरी यह एक ख़ूबसूरत प्रोग्राम था और मैंने बहुत कुछ सीखा। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी ने हकीक़तन एक शानदार काम किया है। कम्यूनिटी से बाहर दीगर लोगों के लिए ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत ही अच्छा था। प्रोग्राम इंतेहाई मुनज़ज़म और अच्छी तरह से पेश किया गया था। मेरी ख़ाहिश है कि मैं आप जैसी कम्यूनिटी से राबिता में रहूँ और मज़ीद सीखूँ।

इस प्रोग्राम में Adeline Mora नामी एक लड़की भी शरीक थी। यह कहती है कि यह प्रोग्राम बहुत ही शानदार था। हुज़ूर की बातें सुनकर मैं बहुत खुशी महसूस कर रही हूँ। जर्मनी जमाअत के सरबराह मेरे पास बैठे हुए थे और रात के खाने पर उनसे बात हुई

एक मेहमान डाक्टर हलीमुरहमान साहिब कहते हैं कि यह बिल्कुल नाक़ाबिल-ए-यक़ीन था। मुझे तक्ररीब, इंतेज़ामात, मेहमान-नवाज़ी, पंडाल, माहौल बहुत अच्छा लगा। मुझे इस तक्ररीब में मदद करने का शुक्रिया। मैं इस एहतेराम का मुस्तहिक़ नहीं था जो आपके लोगों ने मुझे दिया है। यह सब माहौल देखकर, आपकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई से मेरी आँखें नम हो गईं। मैं इस याद को महफूज़ रखूंगा। मेरी तरफ़ से प्रत्येक फ़र्द का दिल से शुक्रिया अदा करें। मुझे बेहतरीन इन्सानों के मध्य वक़्त गुज़ारने का अवसर मिला, हकीक़ी इन्सान जो कि इस्लाम की हकीक़ी तालीमात पर अमल पैरा हैं। आप सब का शुक्रिया।

एक मेहमान Mary McDermott भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। उन्होंने प्रोग्राम के लिए पार्किंग की जगह फ़राहम की थी। यह अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि ऐसी हैरत-अंगेज़ शाम के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया। मैं पहले कभी भी ज़मीन के इस गर्द-आलूद क़ता से इतना खुश नहीं हुई जितना इस प्रोग्राम के लिए देने पर हुई हूँ। यहां आकर मैं बहुत एज़ाज़ महसूस कर रही हूँ। आप सब का शुक्रिया।

Laura नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। यह कहती हैं कि इस प्रोग्राम में हमें शामिल करने का बहुत शुक्रिया। यह बहुत ही शानदार और प्यारा प्रोग्राम था और खाना बहुत ही लज़ीज़ था।

एक मेहमान Joshua Murray कहते हैं : हमें वैसा ही करना चाहिए जो कि अख़लाक़ी तौर पर अच्छा लगे। और दुनिया की मौजूदा सूरत-ए-हाल देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा है कि यह पैग़ाम वक़्त की ज़रूरत मालूम होता है। तथा बाहमी इत्तिहाद के इस पैग़ाम को न केवल इस काओनटी बल्कि सारी दुनिया को सुनने की ज़रूरत है।

Cindy Walker नामी एक महिला भी इस प्रोग्राम में शामिल थीं। ये कहती हैं कि मैं तीन वर्ष से एक मुबल्लिग़ा सिलसिला की हम-साएगी में रहती हूँ। आज की यह तक्ररीब मेरे लिए बहुत प्रभावित करने वाली थी। मेरे लिए हैरत की बात थी कि हुज़ूर ने इस मौजू पर बात की जो मैंने कभी सोची भी न था कि एक मस्जिद के माहौल में इस बात का क्या असर होगा लेकिन मुझे अंदाज़ा हो रहा है कि हम इस कम्यूनिटी के

साथ रह रहे हैं जहां इस बारे में काफ़ी गौर किया जाता है। मुझे यह देखकर हैरत हुई कि (हुज़ूर अनवर) इस बात को निश्चित बनाना चाहते थे कि वे इन संदेहों का अंत करें और मैं पूरी तरह ये बातें समझ चुकी हूँ। जितना अरसा मैं यहां रही हूँ मुझे इस जमाअत से मुहब्बत, इज़्ज़त और शफ़क़त के इलावा कुछ नहीं मिला।

एक मेहमान Melissa McNeely अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हमारे लिए गर्व की बात है कि आपने हमें आमंत्रित किया और इस के लिए हम आपके शुक्रगुज़ार हैं। हम एक ग्रुप लेकर आए थे कि जमाअत अहमदिया की नई मस्जिद के उद्घाटन की तकरीब में शामिल हुए। मुझे अमन और बाहमी इत्तिहाद और दूसरी कमियोनीटीज़ से मेल-जोल पर आधारित पैगामात बहुत अच्छे लगे। हम सब इस कम्यूनिटी में मस्जिद और आप सब का और जो आप पैगाम लाए हैं का इस्तिक्बाल करते हैं। मैं हुज़ूर की इस बात को दाद देती हूँ कि हमें लोगों के भय को दूर करने चाहिए जो कि इस मस्जिद की तामीर से किसी के भी दिल में पैदा हुआ हो। मैं फिर इस बात का इज़हार करती हूँ कि आपके बुनियादी अक्रायद और पर अमन पैगाम और दुनिया की तकलीफ़ें दूर करने का पैगाम बहुत ही ख़ूब है।

एक मेहमान Abby Kirkendall कहती हैं कि मेरे लिए यह एक अवसर था कि मैं कोई ऐसी मज़हबी जमाअत देखू कि जिनकी इबादत का तरीका तो हमसे विभिन्न है लेकिन हमारी इक्रदार एक जैसी ही हैं। मेरे लिए यह एक शानदार तजुर्बा था। यह मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र था कि मैं इतने आली मर्तबत मज़हबी राहनुमा को ऐसी ही इक्रदार के बारे में बात करते हुए देख रही थी जो कि सब कमियो नीटीज़ को अपने अंदर समो लेनी चाहिएं। यहां आने से पहले मैं हुज़ूर और आपकी जमाअत के बारे में अधिक नहीं जानती थी। यहां मुझे ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। और अक्रायद से क्रत-ए-नज़र, जहां आपको ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो वहां आपको अमन और सुकून मिलता है, जो आज यहां समस्त लोगों को बिला इमतेयाज़ मज़हब-ओ-क्रौम-ओ-मिल्लत मिला और यही चीज़ है जिसकी ज़रूरत समस्त कमियो नीटीज़ को है।

एक मेहमान ख़ातून Nicole Collier वर्णन करती हैं कि मेरे लिए इस तकरीब में शामिल एक शानदार तजुर्बा था कि किस तरह समस्त कम्यूनिटी यहां एक मस्जिद में खुश-आमदीद कहती है और बाहमी तफ़रीक़ को ख़त्म करती है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात मेरे लिए बड़े एज़ाज़ की बात है। वैसे तो मैं अपने काम के लिहाज़ से बहुत से मोअज़िज़ीन से मिलती रहती हूँ लेकिन हुज़ूर से मुलाक़ात मेरे लिए सबसे बढ़कर थी। मैंने हुज़ूर को केवल अमन-ओ-आशती के बारह में बात करते सुना है। और उन्होंने लोकल कम्यूनिटी को विश्वास दिलवाया है कि यहां मुस्लमानों की मौजूदगी से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए क्योंकि मुस्लमान कम्यूनिटी अमन की रवादार है और यही है जो हम सबकी मुशतर्का इक्रदार है। इसलिए लोकल कम्यूनिटी को बिल्कुल ख़ौफ़-ज़दा नहीं होना चाहिए। जब यहां हम पुलिस चीफ़, मेयर, कौंसल के मैबरान, कांग्रेस के मैबरान जैसे बड़े अमायदीन को देखते हैं तो इस से पता चलता है कि यहां इस मस्जिद का होना बड़ी अहमियत का हामिल है। मैं अपने आपको बहुत खुश-किस्मत समझती हूँ और इस एहसास को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती जो मुझे हुज़ूर की मौजूदगी से यहां महसूस हो रही है। हम बहुत खुश-किस्मत हैं कि हुज़ूर ने अपने क्रीमती वक़्त में से कुछ वक़्त निकाला और यहां टेक्सस तशरीफ़ लाए और अपने ख़्यालात का इज़हार किया और इस बात का हमें विश्वास करवाया कि डरने की कोई बात नहीं, हम सब मजमूई तौर पर केवल अमन के ही ख़ाहां हैं। हम नफ़रतों को दूर करते हुए मुहब्बत के साथ समस्त इन्सानों का इस्तक्बाल करते हैं। यही असल बात है।

एक ख़ातून Dana Pressler अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहती हैं कि हम यहां से केवल दो मिनट की दूरी पर रहते हैं और हमारे फ़िर्का की मस्जिद भी यहां से पाँच मिनट की दूरी पर है। हमारे कुछ हम-साए अहमदी मुस्लमान हैं और उनके साथ हमारे बड़े अच्छे दोस्ताना ताल्लुकात हैं। जब वह दूसरे लोगों को यहां मस्जिद के बारे में बता रहे थे और उनको विश्वास देहानी करवा रहे थे कि यहां मस्जिद बन रही है और आप लोगों को डरने की ज़रूरत नहीं क्योंकि हम इंतेहापसंद मुस्लमान नहीं बल्कि पुर अमन मुस्लमान हैं, तो ऐसी विश्वास देहानी बड़ी अहमियत की हामिल है।

Joshua Espraza नामी एक मेहमान ने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा आज के इस उद्घाटन की तकरीब में मुझे और दीगर सीनीयर पादरी हज़रात को दावत दी गई है कि इस तकरीब में शामिल हों और मज़े-दार खानों में शरीक हों और लोगों से बातचीत का अवसर मिले। मैं इस बात को बहुत सराहता हूँ कि यहां किस तरह हिक्मत के साथ अमन, इत्तिहाद और इन्साफ़ के बारे में बात की गई है। इस

बात का एहसास भी हुआ कि ऐसे लोग भी हैं जिनका ताल्लुक़ विभिन्न तहज़ीब-ओ-तमहुन से है लेकिन वे भी हमारी ज़िंदगियों में ख़ुदा की मौजूदगी और इन्सानों में बाहमी हमदर्दी का परचार करते हैं और क्योंकि हमारे आमाल का एक दूसरे पर भी असर होता है इसलिए इस तरह मिल बैठना और खाना खाना और बातें करना बहुत ज़रूरी था।

मैं अपनी पत्नी को भी बता रहा था कि यहां मेज़बानी बहुत उम्दा थी। यहां पहुंचते ही प्रत्येक चीज़ आर्गेनाईज़ड लगी। लोगों ने मेज़बानी का हक़ अदा किया, हमारे सवालों के जवाब दिए। खाना बहुत लज़ीज़ था। मुझे यह भी एहसास हुआ कि हम क्यों ऐसी अच्छी मेज़बानी और लोगों को दावत नहीं देते। मुझे यहां आज पहली दफ़ा आने का संयोग हुआ है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि गोया मैं अपने घर पर हूँ। मेरे लिए ये बहुत अनुभव था।

Victoria Espraza नामी एक महिला कहती हैं कि मुझे जो चीज़ यहां सबसे नुमायां लगी वह हुज़ूर का खिताब था कि किस तरह मज़हबी इख़तेलाफ़ और विभिन्न नज़रियात के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं। मेरे ख़्याल में यह ऐसी चीज़ है जिसका आजकल बैनुल मज़ाहिब डाइलाग में फ़ुक़दान नज़र आता है और किसी को इतनी हिक्मत और दानाई के साथ इस बारे में बात करते हुए देखकर बहुत खुशी महसूस हुई कि अपने मज़हबी अक्रायद में मतभेदों के बावजूद, समस्त बनीनौ इन्सान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और हमें किस तरह आपस में अमन के साथ और एक दूसरे का एहसास करते हुए रहना चाहिए। आज की तकरीब और मेज़बानी प्रत्येक लिहाज़ से बहुत उम्दा थी कि किस तरह हमारा ख़्याल रखा गया और सवालात के जवाबात दिए गए, जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। इस सब के लिए हम आप सब के बहुत शुक्रगुज़ार हैं।

एक ख़ातून Beverly McCord साहिबा कहती हैं कि मुझे हमेशा आलमी मज़हबी राहनुमाओं को सुनना अच्छा लगता है जो कि लोगों को नियमित अमन की ज़रूरत, बाहमी मतभेदों के तदारुक़ और मुहब्बत की तरफ़ बुलाते रहते हैं। मुझे हमेशा ऐसे पैगाम सुनकर खुशी होती है। मुझे ज़ाती तौर पर इस जमाअत से कोई भय नहीं और दूसरों के ख़ौफ़ज़दा होने की भी कोई वजह समझ नहीं आती, क्योंकि यह जमाअत तो बहुत मुहब्बत करने वाली, एहसास करने वाली और हमेशा ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाली जमाअत है। अगर किसी को कोई भय हो तब भी इस जमाअत की ख़िदमत-ए-ख़लक़ और फ़लाही कामों को देखकर फ़ौरन दूर होना चाहिए।

डाक्टर Robert Hunt जो प्रकंज़ा स्कूल आफ़ थेवलोजी, सर्दरन मैथोडिस्ट यूनीवर्सिटी में ग्लोबल थियोलोजीकल एजुकेशन के डायरेक्टर हैं। उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने जंग के ख़तरात से नबियों की तरह इज़ार किया है। हुज़ूर ने इस्लाम के सही अर्थ वर्णन फ़रमाए कि अल्लाह के अहकामात की तामील कर के लोगों से हुस-ए-सुलूक करना है। यह नहीं कि लोगों को क्रतल करना है।

Brian Harvey जो कि Allen के इलाके में जहां मस्जिद वाक़्य है पुलिस के सरबराह हैं। उन्होंने कहा कि दस वर्ष पहले में इस इलाके का Police Chief बन गया था और उसी वक़्त से अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने हमारे साथ अच्छे ताल्लुकात कायम किए। हमारा गहरा ताल्लुक़ है और हम आपस में तआवुन करते हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सरबराह ने अपने मैबरान को मुक़ामी पड़ोसियों और हुकूमत के साथ अच्छे ताल्लुकात रखने के बारे में बड़ी अच्छी तरह सिखाया है।

Vudhi Slabisak एक मुक़ामी हस्पताल में Spine Surgeon हैं। उन्होंने कहा कि मुझे हुज़ूर अनवर के पैगाम की जामईयत और दूसरों के लिए मुहब्बत-ओ-अमन के पैगाम से हैरत हुई। वे समस्त मज़ाहिब के लोगों को आपस में जोड़ने की सलाहीयत रखते हैं।

आतिफ़ ज़हीर साहिब जो John Hopkins यूनीवर्सिटी में रेडियोलोजी के प्रोफ़ेसर हैं उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर ने इस तकरीब और मस्जिद के ज़रीया विभिन्न तबा और विभिन्न मज़ाहिब के लोगों को जमा किया। अब मुझे विश्वास है कि यह मस्जिद कम्यूनिटी को बहुत फ़ायदा देगी और मुक़ामी बाशिंदों को अमन और मुहब्बत की चादर में लपेटेगी। मुझे ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने का शरफ़ हासिल हुआ और उन्होंने इंतेहाई मुफ़ीद बातें वर्णन फ़रमाई थीं। उन्होंने न केवल मुक़ामी मसायल बल्कि दुनियावी मसायल का वर्णन फ़रमाया था

(शेष आगे)

रिपोर्ट माननीय अब्दुल माजिद ताहिर साहिब  
(ऐडीशनल वकीलुल् तबशीर् लंदन, यू.के.)  
(उद्धृत अख़बार बदर उर्दू 24 नवंबर 2022)



<b>EDITOR</b> SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	<b>MANAGER :</b> SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly <b>BADAR</b> Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 27-03 August 2023 Issue No. 30-31	

## इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोई के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

### हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्टूबर 2022 ई. (भाग-11)

8 अक्टूबर 2022 ई. शनिवार का दिन (शेष रिपोर्ट)

मेहमानों के ईमान बढ़ाने वाले विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ के इस ख़िताब ने इस तक़रीब में शामिल मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। कुछ मेहमानों के विचार प्रस्तुत हैं :

एक मेहमान Jeff Williams साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं मैं अमन और इन्सानियत का पैग़ाम से बहुत खुश हुआ हूँ। ख़लीफ़ा चाहते हैं कि हम सब मुत्तहिद हो कर मुआशरे की बेहतरी के लिए काम करें और यही वजह है कि यहां मस्जिद बन रही है। जबकि मुझे इस बात का अफ़सोस है कि हुज़ूर को इस बात का भी वर्णन करना पड़ा कि मस्जिद किसी के लिए ख़तरा का बायस नहीं है। मुझे खुशी है कि आपने इस पर बात की। मुझे इस प्रोग्राम का हिस्सा बनने पर गर्व है। यह निश्चित तौर पर एक ख़ूबसूरत मस्जिद है। यहां प्रत्येक इबादत के लिए आ सकता है। यह भी बहुत प्रभावित करने वाली बात है कि किस तरह अमरीका की विभिन्न रियास्तों और दीगर देशों से लोग हज़ारों मील का सफ़र करके हुज़ूर की बातें सुनने के लिए और इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए इकट्ठे हैं।

एक मेहमान सुलतान साहिब अपने तास्सुरात का इज़हार करते हैं हुज़ूर अनवर ने जो समस्त दुनिया के लिए अमन का पैग़ाम दिया है, यह मेरे ख़्याल में एक बेहतरीन पैग़ाम है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है कि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस भय को दूर किया जाए कि वह यहां क़बज़ा कर लेंगे। हुज़ूर ने स्पष्ट बताया है कि चूँकि मुस्लमानों को ख़त्म करने की कोई प्रयास नहीं कर रहा है, इसलिए मुस्लमानों के लिए जंगी मुहिम का कोई जवाज़ नहीं है।

एक मेहमान Crystal Ragland कहते हैं बहुत खुशी है कि मुझे इस तक़रीब में मदद किया गया है। मैं इस पैग़ाम को सराहता हूँ कि हुज़ूर ने समस्त मज़ाहिब के साथ अमन और मिल-जुल कर रहने की तलक़ीन की है। मैं बहुत खुश हूँ कि हुज़ूर यहां आए हैं।

एक मुक़ामी मेहमान अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं, यह मेरी ज़िंदगी का पहला अवसर था कि मैं किसी ऐसे प्रोग्राम में शरीक हूँ और यह तजुर्बा बहुत ही प्रभावित करने वाला रहा। हम सब का यही ईमान है कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। मुझे बहुत खुशी है कि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए हैं। हमारा अलग अलग मज़हब है, लेकिन हम सब बुनियादी तौर पर एक ही बात कह रहे हैं। मेरे ख़्याल में अगर हम अपने ख़्यालात और अपने अक़ीदे को प्रत्येक से, अपनी

कम्यूनटी में और पड़ोसियों से बाँटना शुरू कर दें तो इस का अच्छा असर होगा। हम पहले ही फेसबुक पर इस पर बात करते हैं और यह प्रोग्राम भी ऐसा ही एक अवसर था। यह जान कर बहुत खुशी हुई कि प्रत्येक आपकी जमाअत के लिए नेक ख़ाहिशात का इज़हार करता है। मुझे वाकई बहुत लुतफ़ आया है। मुझे बुलाने का शुक्रिया।

एक मेहमान Lucas Anderson कहते हैं : बहुत खुशी हुई कि मुझे इस तक़रीब पर आमंत्रित किया गया है। मैं आज तक इस मुस्लिम कम्यूनटी के बारे में अज्ञान था। मैं इस पैग़ाम से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मुझे विश्वास है कि आपका मौक़िफ़ काबिल-ए-अमल और बहुत सुंदर है।

एक मेहमान Tom Berry अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहते हैं : मैं आपका और ख़लीफ़तुल मसीह का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आपका पैग़ाम, मेहमान-नवाज़ी, बाहमी मेल-जोल सब कुछ बहुत ख़ूब था। यह निसन्देह एक नेअमत है कि अक़ीदे या मज़हब से क़त-ए-नज़र एक दूसरे की भलाई के लिए अधिक से अधिक काम हो, ज़िंदगी की क़दर हो, ज़िंदगी से प्यार हो, इन्सानों का एहतेराम हो, इन्सानों से मुहब्बत हो। यह ज़ाहिर करता है कि ऐसे समाज में किसी एक फ़र्द या इदारे की इजारादारी नहीं है। सबको मिलकर काम करना है। यही ख़लीफ़ा का पैग़ाम था। यह पैग़ाम ऐसा है कि रोज़ाना सोने से क़बल और सुबह उठने के बाद दोहराना चाहिए और इसी पैग़ाम को फैलाना चाहिए। यही पैग़ाम हमें अपने बच्चों को समझाना चाहिए क्योंकि जब हम नहीं होंगे तो वह इस पैग़ाम को जारी रखें। मैं आपका फिर से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे इस प्रोग्राम में बुलाया है।

एक मेहमान Hector Amaya भी प्रोग्राम में शरीक थे। यह Sandeep Srivastava Campaign के फ़ील्ड डायरेक्टर हैं। यह अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं : यह बहुत ही शानदार प्रोग्राम था। मैं हुज़ूर से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपका पैग़ाम भी बहुत प्रभावित कण है विशेषता जब आपने आलमी अमन के बारे में बात की। निश्चित रूप में ख़लीफ़ा ने वे काम किया है जो इस मुल्क के सियासतदानों ने भी किया है।

नॉर्थ Presbyterian Church से एक मेहमान Beverly McCord कहती हैं कि : मैं पिछले आठ नौ सालों से विभिन्न तक़रीबात में शिरकत कर रही हूँ। हमारा चर्च अहमदी महिलाओं के साथ प्रोग्राम रखता था। ये बाज़-औक़ात चर्च में इकट्ठे होतीं और बाज़-औक़ात किसी अहमदी के घर में। हम कोई ऐसा विषय चुनते थे

शेष पृष्ठ 22 पर

<b>Tahir Ahmad Zaheer</b> M.Sc. (Chemistry) B.Ed. DIRECTOR	<b>OXFORD N.T.T. COLLEGE</b> (Teacher Training) (A unit of Oxford Group of Education) Affiliated by A.I.L.C.C.E. New Delhi 110001
	0141-2615111- 7357615111 oxfordnttcollege@gmail.com Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04 Reg. No. AILCCE-0289/Raj.
<b>Tahir Ahmad Zaheer</b> Director oxford N.T.T.College Jaipur (Rajasthan) TEACHER TRAINING	

	اب دیکھتے ہوگیسار جو جہاں ہوا اک مرتبہ خواں ہوگی قادیان ہوا <b>HUSSAIN CONSTRUCTIONS &amp; REAL ESTATE</b> (تارخہ: 1964ء سے قائم) (SINCE 1964)
	قادیان میں घर، فلیٹس اور سیٹھیں تعمیر کی جاتی ہیں۔ قیمت پر نیا مارچا کرنا اور پرانے کو ترمیم کرنے کے لیے کام کیا جاتا ہے۔ دوسری طرح سے قادیان میں تعمیر کی جاتی ہیں۔ نئے بنائے گئے اور پرانے घर / فلیٹس اور جڑیوں کی مرمت اور Renovation کے لیے کام کرتے ہیں۔ (PROP: TAHIR AHMAD ASIF) contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681 e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com